सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश वर्मा, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि ।

आधुनिक उपन्यास

मृत्यु-किरण

सनकी वैज्ञानिक के भयानक आविष्कारों से संसार को नष्ट होते होते बचानेवाले नवयुवकों की साहसपूर्ण कहानी ।

राजेश्वरप्रसादसिंह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

यदि आप अभी तक इस सिरीज़ के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सरस्वती-सिरीज़ नं० १२

मृत्यु-किरण

Mratyu - Kirans

राजेश्वरप्रसादसिंह

Rajeshwar Prasad Singh

941.778 / S R5

R/NO —

Indian press, Prayag.

प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पहला अध्याय

मृत्यु की रेखा

श्रीगंज के उस मनोरम पहाड़ी प्रदेश में इन्द्रविक्रमसिंह जब से आया है, तब से बराबर दिन भर अपनी बन्दूक़ लिये हुए इधर-उधर घूमा करता है। शिकार खेलने का उसे बड़ा शौक़ है और शिकार की वहाँ कमी नहीं है। सैर हो जाती है, कोई न कोई शिकार भी हाथ लग जाता है और अच्छा मनोरंजन हो जाता है।

उस इलाक़े की जलवायु बड़ी स्वास्थ्य-वर्धक है। बड़ी सुखद बयारें वहाँ बहती रहती हैं, प्रकृति अपने दार्शनिक रूप में दृष्टि-गोचर होती है और जीवन शान्त गति से चलता प्रतीत होता है। किन्तु शान्त दिखाई देनेवाला प्रत्येक वातावरण सदैव शान्त नहीं होता।

शरद् ऋतु थी। दिन का तीसरा पहर था। बन्दूक़ लिये हुए, सिगरेट पीता हुआ, सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ, इन्द्र धीरे धीरे एक टेढ़ी-मेढ़ी गली में चला जा रहा था। गली के एक मोड़ पर पहुँचकर अज्ञातभाव से एकाएक वह रुक गया।

गली की इसी मोड़ पर एक छोटा-सा सुन्दर बँगला बना हुआ है। उस बँगले में एक सुन्दर वाटिका है। उस सुरम्य वाटिका

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

में भाँति-भाँति के सौरभसिक्त पुष्पों के अगणित पौधे हैं, और फलों के अनेक छतनार वृक्ष, जिन पर सुकोमल लतायें चढ़ी हुई हैं।

किन्तु उस बँगले या उसकी उस वाटिका की अनुपम शोभा अवलोकन करने के लिए वह नहीं रुका था। कई बार वह इधर आ चुका था, उन दोनों को जी भरकर देख चुका था और उनकी सराहना कर चुका था। उसके रुकने का कारण कुछ और ही था।

वह एक वस्तु को देखकर चौंक पड़ा था। गज़ भर चौड़ी भूरे रंग की एक लकीर गली के आर-पार दिखाई दी और झाड़ियों के उस पार भी दौड़ी हुई जान पड़ती थी। उस लकीर में कोई ऐसी बात थी जिससे इन्द्र को धक्का-सा लगा और उसका मन विचित्र विकलता से आन्दोलित हो उठा। उसे ऐसा जान पड़ने लगा, मानो कोई भयानक विपत्ति शीघ्र ही आनेवाली है। उस लकीर को ध्यान से देखने से ऐसा मालूम होता था, मानो आग की एक सीधी, तेज़ धार उस पर से निकली हो और अपने मार्ग में पड़नेवाली हर चीज़ को जलाती, झुलसाती, भस्म करती चली गई हो। घास-फूस, झाड़ी-झंखाड़, पत्ते, टहनियाँ सभी चीज़ें जलकर ताँबे के रंग की हो गई थीं। बड़ी साफ़, बड़ी सीधी थी वह मोटी रेखा—मृत्यु की वह भयानक रेखा मीलों तक दौड़ी हुई जान पड़ती थी।

उससे सम्बन्ध रखनेवाली सारी बातें बड़ी असाधारण, बड़ी रहस्यमय थीं। थोड़ी देर तक उसे ध्यानपूर्वक देखते रहने के बाद इन्द्र समझ गया कि वह चौड़ी, भूरी रेखा अग्नि-द्वारा निर्मित नहीं हुई है। वह भयानक, रहस्यमय, अज्ञेय वस्तु जिस मार्ग से गुज़री थी वह काला नहीं हुआ था, और लकड़ी तथा पत्ते-पत्तियों के जलने की ज़रा-सी गंध भी हवा में मौजूद नहीं

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

थी। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह मार्ग निर्जीव हो गया था—भस्म हो गया था। थोड़ी देर तक और ग़ौर करने के बाद ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई वायुयान उधर से निकला हो और कोई अत्यन्त तीक्ष्ण तेज़ाब छिड़कता चला गया हो।

किन्तु इन्द्र समझ गया कि उसके अन्य अनुमानों की भाँति उसका यह अनुमान भी ग़लत है। अभी दस मिनट पहले भी एक बार वह वहाँ आया था और उस समय वह भूरी रेखा वहाँ पर नहीं थी। और न किसी वायुयान की घड़घड़ाहट ही उसने सारे दिन में एक बार भी सुनी थी। कोई हवाई अड्डा वहाँ नहीं था, और सच तो यह है कि श्रीगंज के ऊपर वायुयान भी बहुत कम उड़ते दिखाई देते थे। यह विचार भी स्वतः उसके मस्तिष्क से निकल गया। वह समझ गया कि वायुयान-सम्बन्धी क्षेत्र में उस विकट रहस्य के भेद की खोज करना बिलकुल बेकार है।

यह बड़ी विचित्र बात थी कि नष्ट हुई चीज़ों की सूरत-शक्ल तो ज्यों की त्यों बनी हुई थीं; किन्तु ज़रा भी छुई जाने पर वे चूर-चूर होकर गिर जाती थीं। इतना ही नहीं, जहाँ वे खड़ी थीं उस स्थान की ज़मीन भी बिलकुल नष्ट हो गई थी। और उस समस्त प्रदेश की भूमि ऐसी-वैसी नहीं; बड़ी सुदृढ़ थी। फिर भी वह भूमि बिलकुल कोमल और भुरभुरी हो गई थी। ऐसा जान पड़ता था, मानो वे समस्त तत्त्व ही जिनसे उसकी सृष्टि हुई थी पूर्णतया नष्ट हो गये हों। बिना ज़रा भी ज़ोर लगाये इन्द्र घुटने तक अपना पैर उसमें धँसा सकता था।

आगे बढ़कर, झाड़ी के समीप जाकर उसने उसमें उँगली लगाई। उस स्थान की पत्तियाँ और टहनियाँ, जहाँ उसने छुआ था चूर-चूर होकर गिर गईं। उसने उसे पकड़कर ज़ोर से हिलाया और एक गज़ की चौड़ाई तक वह झाड़ी राख होकर ढेर हो गई। एक साफ़, चौकोर स्थान झाड़ियों की उस घनी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पंक्ति में खुल गया। ऐसा जान पड़ता था, जैसे हँसुये और कैंची से बड़ी सफ़ाई से वह काटकर बनाया गया हो।

इन्द्र के मत्थे पर गहन चिन्ता की रेखायें व्यक्त हो गईं।

"बड़ा जटिल रहस्य है।" उसने अपने मन में कहा। और तर्क के द्वारा उसके अन्त तक पहुँचने की वह कोशिश करने लगा। किन्तु उसके अन्त का तो कहीं पता ही नहीं मिलता था। झाड़ियों के उस पार पहुँचकर वह दृष्टि दौड़ाने लगा। वह मृत्यु-रेखा दौड़ती चली गई थी, दौड़ती चली गई थी वहाँ तक—जहाँ तक भूमि की सीमा आकाश से मिली हुई-सी जान पड़ती थी। वह बिलकुल सीधी थी, ज़रा भी इधर-उधर मुड़ी नहीं थी।

वह रेखा ही एक-मात्र असाधारण वस्तु नहीं थी जो उसे श्रीगंज में दृष्टिगोचर हुई थी। थोड़े ही समय में उस पास-पड़ोस में कई रहस्यमय, असाधारण घटनायें उसकी जानकारी में घटी थीं। और उन घटनाओं के कारण भी उसी तरह अस्पष्ट और अज्ञेय बने हुए थे।

उस मुर्ग़ाबी की ही बात ले लीजिए। एक दिन प्रातःकाल जब इन्द्र वायु-सेवन के लिए निकला था, तब एक मील की दूरी पर उस मुर्ग़ाबी को उसने देखा था। तेज़ ठण्ढी हवा चल रही थी। काफ़ी ऊँचाई पर वह उड़ रही थी। उसके पंख सुव्यवस्थित गति से हिल रहे थे और वह बड़ी मस्ती से उड़ती चली जा रही थी।

और तब एकाएक फड़फड़ाकर, तड़पकर, निर्जीव होकर, वह ज़मीन पर गिर पड़ी थी। न किसी बन्दूक़ की आवाज़ हुई थी, न किसी गोली की सनसनाहट सुनाई दी थी।

वह मैदान चारों ओर मीलों तक फैला और खुला हुआ था। आदमी की बात जाने दीजिए, किसी कुत्ते के छिपने के लिए भी वहाँ स्थान नहीं था। केवल एक ही व्यक्ति उस लम्बे-चौड़े

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

स्थान में उस समय मौजूद था, और वह था स्वयं इन्द्र। फिर भी सहसा, विना किसी स्पष्ट कारण के, वह बड़ी-सी चिड़िया मरकर गिर पड़ी थी। गिरते समय उसने कोई आवाज़ नहीं की थी; लेकिन जब वह ज़मीन से क़रीब सौ फ़ुट रह गई थी तब उसके पर निर्जीव शरीर से अलग हो-होकर हवा में फड़-फड़ाने लगे थे।

जब वह झपटकर उसके समीप पहुँचा था, तब उसमें भी उसे वैसे ही लक्षण दृष्टिगोचर हुए थे जैसे उस मृत्यु-रेखा से नष्ट हुई अन्य वस्तुओं में विद्यमान थे। केवल पर ही नहीं, मांस और हड्डियाँ भी नष्ट होने लग गई थीं। उस बेचारे पक्षी का सारा शरीर राख हुआ जा रहा था। आश्चर्य के आधिक्य से वह हैरान हो उठा था।

उसके बाद भेड़ोंवाली घटना घटी थी। सत्ताईस भेड़ें एक दिन एकाएक धुएँ की तरह उड़ गई थीं। वे अदृश्य हो गई थीं, और कारण का ज़रा भी पता न था। इस घटना के घटने में केवल पाँच मिनट लगे थे। गड़रिया झोंपड़े के अन्दर गया था और तुरन्त बाहर निकलकर उसने देखा था कि न जाने कैसे सारी भेड़ें ग़ायब हो गईं। उसने क़सम खाकर बतलाया था कि केवल पाँच मिनट के लिए वह अन्दर गया था। उसका कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे अन्दर चला गया था। यह देखकर उसने उसे फिर बाहर भगा दिया था। कुत्ते को बाहर भेजने के शायद केवल एक मिनट बाद ही उसे ज्ञात हो गया था कि सारी की सारी भेड़ें एकाएक ग़ायब हो गई हैं। सारा स्थान खाली पड़ा था। केवल वह कुत्ता भयभीत होकर इधर से उधर ज़ोरों से भौंकता फिर रहा था।

सारा मैदान छान डाला गया। पास-पड़ोस के इंच-इंच से वह गड़रिया परिचित था। उसने स्वयं जा-जाकर इंच-इंच

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़मीन खोजी थी। कई दिनों तक बराबर खोज होती रही, लेकिन कोई नतीजा नहीं हुआ। केवल निराशा ही खोज करने-वालों के हाथ रही।

दुर्भेद्य रहस्य की एक बात और थी। रात्रि के प्रगाढ़ अन्धकार में सुविस्तृत मैदान के मध्य में नीली रोशनी की झलझलाती हुई रेखायें दृष्टिगोचर होती थीं। अर्ध-रात्रि के बाद हर रात को वे दिखाई देती थीं। उस स्थान पर जहाँ वे दिखाई देती थीं, किसी मनुष्य का निवास-स्थान नहीं था। इस बात की किंचित्-मात्र भी सम्भावना प्रतीत नहीं होती थी कि वह सब किसी मनुष्य की करतूत है। उस ओर केवल पहाड़ियों का सिलसिला था, और उनमें गुफाओं की एक विस्तृत पंक्ति थी। किन्तु वे सब भी उस रहस्यमय प्रकाश के केन्द्र-स्थल से मीलों दूर थीं। तब वह प्रकाश कहाँ से आता था ?

इन्द्र उस रहस्य पर कई दिनों तक माथा-पच्ची करता रहा। फिर उसने उसे अपने दिमाग़ से निकाल दिया। उसने मान लिया कि किसी स्थानीय प्राकृतिक विशेषता के कारण उस विचित्र प्रकाश का जन्म होता होगा। सम्भव था कि आस-पास के किसी दलदली स्थान के किसी विशेष गैस से वह निकलता हो, यद्यपि जहाँ तक उसे मालूम था वहाँ कोई दलदल न था।

उपर्युक्त रहस्य निस्सन्देह जटिल तथा महत्त्वपूर्ण थे; किन्तु मृत्यु की रेखा-सम्बन्धी उस भयानक रहस्य की तुलना में वे क्या थे ? मीलों तक दौड़ी हुई वह विकट, भयानक रेखा ! उसे किस विनाशकारी शक्ति ने अंकित किया था ?

अत्यधिक आश्चर्य से आन्दोलित इन्द्र अपना सिर खुज-लाता खड़ा रह गया। फिर उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह चुपचाप खोज करेगा और उसी दिन उस समस्या को हल कर लेने का भरसक प्रयत्न करेगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दूसरा अध्याय

रजनी

इन्द्र अपने दृढ़ संकल्प को तुरन्त कार्य-रूप में परिणत करने के लिए जब मुड़ा, तब पहले की ही तरह उसे फिर सहसा रुक जाना पड़ा। उसके पैरों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। उसके मस्तिष्क से समस्त विकल विचार उड़ गये। उस समय उसे मृत्यु-रेखा से, रहस्यपूर्ण प्रकाश से या उस अभागी मरी हुई मुर्ग़ाबी से कोई मतलब नहीं रह गया।

उसकी आँखें एक अत्यन्त सुन्दर दृश्य के रस-पाश में उलझ गई थीं। उस दृश्य में अपार आनन्द, अनिर्वचनीय आह्लाद भरा था। उसका आन्दोलित हृदय बड़े ज़ोर से धड़कने लगा। अवर्णनीय रस से छलकती हुई दो बड़ी-बड़ी आँखें उसकी ओर एकटक, अगाध तन्मयता से देख रही थीं। वह भी जलती हुई सिगरेट एक ओर फेंककर और सिर से हैट उतारकर मन्त्रमुग्ध की भाँति देखने लगा।

सामने खड़ी थी सौन्दर्य की एक अनुपम प्रतिमा, एक अनिंद्य सुन्दरी, एक परी, एक अप्सरा। सिद्धहस्त कवियों की स्त्रीत्व-सम्बन्धी रुचिर कल्पनायें मानो उसके कुसुमों से सुकोमल, लावण्यमय शरीर में साकार हो उठी थीं। उसने तो कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि ऐसी सुन्दरी संसार में कहीं देखने को मिल सकती है। अति गौर वर्ण के उसके सुकोमल शरीर का एक-एक अंग साँचे में ढला था। उसके गोले छोटे-से चेहरे में उषा का रक्तिम माधुर्य था। बड़ी-बड़ी, काली, रतनार आँखों में सरिता की लहरियों में पड़ती हुई चन्द्र-किरणों का-सा प्रकाश था, कपोलों और अधर-पंक्तियों में गुलाब की लालिमा, केशों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

में रेशम की-सी चमक थी। यह सब इन्द्र ने पहली झलक में देखा।

उस छोटे-से सुन्दर बँगले के छोटे-से फाटक पर कुहनियाँ टेके हुए, हथेलियों पर ठुड्ढी रखे हुए वह खड़ी थी और उसकी आँखें एक विचित्र ढंग से झलक रही थीं।

फूल-सा चेहरा, रतनार आँखें, गुलाबी कपोल, गुलाबी ओठ, रेशमी केश, साँचे में ढला हुआ, सुकोमल, सुर्ख़-सफ़ेद शरीर! तलवारें खिँच गई हैं, ख़ून की नदियाँ वह गई हैं, न जाने कितनी बार इन असूल्य विभूतियों के कारण। इन्द्र नहीं समझता था कि ये सारी विभूतियाँ एक साथ किसी एक स्त्री में मौजूद हो सकती हैं। किन्तु उस समय अपनी आँखों से यही कल्पनातीत बात तो वह देख रहा था। और अपनी आँखों पर विश्वास न करने का उसके पास कोई कारण भी न था। उसकी तन्मयता बढ़ती गई। उसकी बग़ल में दबी हुई बन्दूक़ एकाएक खिसककर ज़मीन पर गिर पड़ी। कुशल यह था कि वह भरी नहीं थी। वह चौंक पड़ा, झेंप गया। सुन्दरी मुस्कराने लगी। बन्दूक़ ज़मीन से उठाकर, हैट उँगली पर नचाता हुआ वह उसकी ओर बढ़ा।

"बड़ा सुखद दिवस है!" उसने समीप पहुँचकर, रुककर कहा। और वह दूसरे ही क्षण समझ गया कि उसने बिलकुल बच्चों की-सी बात कही है। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो गया।

वह प्रयत्न कर रहा था कि अपने विचारों को अपने वश में रक्खे; किन्तु स्वेच्छाचारी पक्षियों की भाँति वे उससे भाग रहे थे। वह अपने में केवल एक विचार निश्चित कर सका और वह यह था कि इस विचित्र जगत् में एक अनहोनी घटना घटी है। उसने आज एक ऐसी अद्भुत सुन्दरी देखी है जिसे कभी देख सकने की आशा वह स्वप्न में भी नहीं कर सका था। किन्तु

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

किसी झलमलाती हुई किरण-राशि की भाँति अस्पष्ट रूप से न जाने कब से उसके असन्तुष्ट मन में वह विद्यमान थी। उसके सामने उसके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण समय आ पहुँचा था।

इन्द्र तीस वर्ष का हो चुका था; किन्तु अभी तक वह विवाह के बन्धन से दूर भाग रहा था। उस प्रश्न के प्रति उसके मन में गहन उदासीनता थी। उसकी उस उदासीनता का कारण दूसरे नहीं समझ पाते थे।

इँगलैण्ड में यथेष्ट समय तक उसने शिक्षा प्राप्त की थी, क्रिकेट और टेनिस के खेलों में वह दक्ष था, घूँसेबाज़ी में उसने ऐसी योग्यता प्रदर्शित की थी कि स्वयं उसके शिक्षक को भी हैरत हुई थी, और वह बड़ा सच्चा निशानेबाज़ था। गत विश्वव्यापी महायुद्ध में भी सम्मिलित होकर उसने अपने वीरत्व का परिचय दिया था। और युद्ध के बाद सारे संसार में उसने विस्तृत भ्रमण किया था। किन्तु ये सारी बातें अब उसके लिए महत्त्वहीन हो चुकी थीं।

वह इन्द्र जो श्रीगंज की उस गली में उस दिन घूम रहा था, अब पहले का-सा बेफ़िक्र, स्वतन्त्र, साहसी इन्द्र नहीं था। वह अनुभव कर रहा था कि वह बहुत काफ़ी बदल गया है। संसार के आघातों ने, जीवन के विस्तृत अनुभव ने उसे कठोर, गम्भीर और चिन्ताशील बना दिया था। अमीर होना बहुत अच्छा है; किन्तु अमीरों का मार्ग सदैव पूर्णतया कंटकहीन भी नहीं होता। उनके लिए भी विशेष प्रकार की समस्यायें हैं। एक बड़ी ज़मींदारी का वह एकमात्र अधिकारी है, बैंक में भी उसके लाखों रुपये जमा हैं। लेकिन वह अविवाहित है। और यही अविवाहित होना उसके लिए आफ़त है, बला है, मुसीबत है।

कई वर्षों से वह उन महानुभावों से बचने की कोशिश कर रहा है जो उसे किसी न किसी तरह विवाह के बन्धन में जकड़

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

देने के लिए कमर कसे घूम रहे हैं। कितनी ही सुन्दर-असुन्दर कुमारियों के फ़ोटो उसे दिखाये जा चुके हैं, कितनी ही सुन्दर-असुन्दर कुमारियाँ उसके अवलोकनार्थ उसके सम्मुख सादर उपस्थित की जा चुकी हैं। किन्तु न जाने क्यों उसके अन्दर जो उदासीनता विराजमान है वह क़भी हटाये नहीं हटी। इस लम्बे समय ने उसके हृदय में जीवन के इस महत्त्वपूर्ण पहलू के प्रति गहरी कटुता, गहरा व्यंग्य भर दिया है। उसकी निश्चित धारणा हो गई है कि वह नवयुवक बड़ा मूर्ख है जो वैवाहिक व्यापार से दूर रहने में असफल सिद्ध होता है।

वह क्रिकेट और टेनिस खेलता, घूँसेबाज़ी करता, शिकार खेलता, भ्रमण करता, कुमार-जीवन के मज़े लेता। कभी वह बम्बई में रहता, कभी कलकत्ता में, कभी दिल्ली में, कभी शिमला में, कभी कश्मीर में। लेकिन हर जगह वह ऐसे लोगों से दूर ही रहने की कोशिश करता जो उसे फँसाने के चक्कर में थे। इस तरह उसने मान लिया था कि वह पूर्णतया सुरक्षित है और नारीत्व के आकर्षणों का कोई प्रभाव उसके ऊपर नहीं पड़ सकता। किन्तु आज अचानक उसकी उस धारणा को गहरा धक्का लगा। उस गली के उस मोड़ ने एक दूसरी ही कथा उसे सुनाई।

उसे ज्ञात हुआ कि उँगली पर हैट नचाता हुआ उसके सामने एक व्याकुल लड़के की तरह वह खड़ा है, और बेतरह बेवक़ूफ़ बन रहा है। किन्तु इस बात की उसे ज़रा भी परवाह नहीं हुई। बाज़ लोग ऐसे होते ही हैं। बड़ी आसानी से उनके दिल बलिदान हो जाते हैं।

वह बड़े आकर्षक ढंग से मुस्कराई और बोली भी।

"अरे! यह तो वीणा के तारों से निकली हुई संगीत की लहरी है!" इन्द्र ने अपने मन में कहा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वास्तव में बात यह नहीं थी। वह स्त्री-कण्ठ से निकली हुई बड़ी कोमल, बड़ी सुरीली, बड़ी मीठी आवाज़ थी। इन्द्र पूरी तरह परास्त हो गया।

जो उसने कहा था, यह था—नमस्कार! क्षमा कीजिए, मैं सुन नहीं पाई। आपने क्या कहा था?

"मुझे शान्ति मिली यह सुनकर," इन्द्र ने मुस्कराकर कहा। "बड़ा सुन्दर समय है, उससे हज़ार गुना अधिक सुन्दर, जितना अभी एक मिनट पहले था।"

"बड़ी अच्छी बात आपने कही है। लेकिन यह तो बताइए, हार्डी कहाँ है?"

इन्द्र को आश्चर्य हुआ।

"हार्डी! उससे आप परिचित हैं क्या? आपको कैसे मालूम हुआ कि वह कुत्ता मेरा ही है?"

वह हँस पड़ी।

"हार्डी से मेरी बड़ी गहरी दोस्ती है। मैंने आपके साथ उसे अक्सर देखा है। अक्सर जब आप शिकार की खोज में इधर-उधर चक्कर लगाते फिरते हैं, तब दुम हिलाता हुआ वह आपके पीछे लगा रहता है। कभी-कभी वह यहाँ आता है, और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से हड्डियाँ चबाता है। मुझे वह बहुत अच्छा लगता है।"

"यह बड़ी अजीब बात है कि आपको मैंने पहले कभी नहीं देखा। कब से आप यहाँ रह रही हैं?"

"वर्षों से। मेरा यह स्थायी घर है।"

"तब तो और भी ताज्जुब की बात है। मेरा ख़याल था कि मेरी नज़र बड़ी तेज़ है! विश्वास कीजिए, कभी आपकी एक झलक भी मैंने नहीं देखी। किसी को आते देखती हैं तो क्या आप छिप जाती हैं?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"नहीं तो।"

"ख़ैर! मुझे बड़ा खेद है कि मैं भी यहीं नहीं रहता। केवल दो-चार दिन के लिए मैं यहाँ आया हूँ।"

"यह मुझे मालूम है। आप 'रामेन्द्र-भवन' में ठहरे हुए हैं न?"

"हाँ। यह आपको कैसे मालूम हुआ?"

"बात यह है कि यहाँ की आबादी इतनी घनी तो है नहीं कि किसी के आने-जाने का हाल किसी को मालूम ही न हो। इसके अलावा रामेन्द्र-भवन ऐसा प्रसिद्ध स्थान है कि वहाँ जो नई बात होती है वह तो सब लोगों को ज़रूर ही मालूम हो जाती है। वहाँ की कोई असाधारण बात किसी तरह छिपी नहीं रह सकती। ग़प-शप करने के लिए भी कोई न कोई नई और अनोखी बात होनी ही चाहिए और यह स्थान ऐसा है कि समाचार-पत्रों की पहुँच भी यहाँ मुश्किल से होती है।"

"बिलकुल ठीक कहा आपने, यह स्थान उजाड़-सा है।"

सहमतिसूचक भाव से उसने सिर हिलाया।

"बात तो बेशक यही है। लेकिन फिर आप यहाँ आये क्यों हैं?" मुस्कराकर उसने पूछा।

"कोई विशेष कारण तो नहीं है। ठाकुर रामेन्द्रसिंह ने शिकार का प्रलोभन देकर मुझे कुछ दिनों के लिए निमन्त्रित किया था। कोई ख़ास काम उस समय मेरे पास नहीं था, फ़ुरसत थी, इसलिए सामान बाँध-बूँध कर चला आया और आज मैं बहुत ख़ुश हूँ कि ठाकुर साहब का निमन्त्रण मैंने स्वीकार कर लिया था।" वास्तव में उसके चेहरे पर भी असीम प्रसन्नता व्यक्त थी।

"आप यहाँ आने के लिए विशेष उत्सुक नहीं थे?"

"था भी, और नहीं भी था। ठाकुर रामेन्द्रसिंह बड़े मुँहफट और स्पष्टवादी व्यक्ति हैं, लेकिन उनके पत्र में कुछ ऐसी अस्पष्ट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

और भेदभरी बातें थीं कि मेरी दिलचस्पी ज़ाग्रत हो गई।"
उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए उस मृत्यु-रेखा की ओर चली गई।

"तब तो शायद आप यहाँ अधिक समय तक न ठहरेंगे ?" बड़ी सरलता से उसने कहा।

"अधिक समय तक ठहरने का इरादा तो नहीं था," उसकी आँखों में दृष्टि गाड़कर इन्द्र ने कहा; "लेकिन अब सारी बातों पर विचार कर लेने के बाद मैंने निश्चय कर लिया है कि यहाँ तब तक रुकूँगा......"

"कब तक ?"

"जब तक आपके पड़ोस में रहने से मेरी तबीअत न ऊब जायगी। यह बँगला आपका ही है न ?"

"हाँ। कभी-कभी मैं यहाँ रहती हूँ।"

"हमेशा नहीं रहतीं ?"

वह फिर हँस पड़ी।

"आपका हौसला अब बढ़ने लगा है" शरारत से मुस्कराते हुए उसने कहा। "ऐसी बातें अब आप पूछने लगे हैं जो एक शिकारी को न पूछनी चाहिए। मेरा ख़याल है कि अब ज़रूरत इस बात की है कि आप अपना ध्यान किसी दूसरी बात की तरफ़ लगायें। इसलिए यदि अब कृपा करके आप जेब से सिगरेट निकालकर जलायें, तो बहुत अच्छा हो।"

इन्द्र हँस पड़ा।

"आपकी सलाह मुझे मंज़ूर है।" मुस्कराते हुए उसने कहा।

एक मिनट के बाद फाटक से लगे हुए चबूतरे पर बैठा हुआ वह बड़ी निश्चिन्तता से सिगरेट पी रहा था और वह अन्दर की तरफ़ उस छोटे-से फाटक पर झुकी हुई खड़ी थी।

इन्द्र ने देखा कि उसके पैर छोटे-छोटे और बहुत सुन्दर हैं। और यह भी उसने देखा कि वह गुलाबी रंग की रेशमी साड़ी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके सुकोमल शरीर पर ख़ूब खिल रही है। और उसे ऐसा लगा कि उस अत्यन्त सुन्दर साड़ी से निकलनेवाली भीनी-भीनी सुगन्ध में जादू का-सा असर है।

"सुनिए" ज़रा देर रुककर इन्द्र ने कहा, "इस तरह वार्तालाप जारी रखना कठिन है। अपना नाम क्या आप मुझे बतलाने की कृपा नहीं करेंगी ?"

"कठिन है ! क्यों कठिन है ?"

"कठिन ही नहीं, ठीक भी नहीं है । आप जैसी सुन्दरी के पड़ोस में रहना मेरे लिए अत्यन्त आनन्ददायक है; लेकिन मेरी यह इच्छा भी शायद अस्वाभाविक नहीं है कि कभी कभी आपसे भेंट हो जाया करे। इसलिए आपका परिचय प्राप्त करने की मेरी उत्सुकता भी शायद अस्वाभाविक नहीं है। ठीक है न मेरा ख़याल ?"

"हाँ, शायद ठीक है।"

"मेरा नाम है इन्द्रविक्रमसिंह । आप मुझे केवल इन्द्र कह सकती हैं। अब अपना नाम क्या आप मुझे नहीं बतलायेंगी ?"

"अच्छा अगर आप मुझसे भेंट करना ज़रूरी ही समझते हैं, तो मुझे रजनी कहें।"

"रजनी ! बड़ा सुन्दर नाम है ! यहाँ क्या आप अकेली ही रहती हैं ? आपके माता-पिता कहाँ हैं ?"

इन्द्र ने समझा कि भय का एक हलका-सा भाव एक क्षण के लिए रजनी की आँखों में चमक उठा। निश्चयपूर्वक कुछ कह सकना तो उसके लिए कठिन था; किन्तु वह भाव उसे लगा भय-सा ही।

"बस, कृपया अधिक न पूछिए।" विनयपूर्ण स्वर में रजनी ने कहा। परेशानी से उसका चेहरा लाल हो गया।

"बड़े बुद्धू हो बचा !" इन्द्र ने अपने मन में कहा। "स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

के मामले में हमेशा इसी तरह गड़बड़-झाला कर बैठते हो। देखते नहीं कि मामला क्या है ? अब समझे ?"

"मुझे बड़ा खेद है," खेदपूर्ण स्वर में इन्द्र ने कहा। "मैं नहीं समझता था कि मैं अनधिकार चेष्टा कर रहा हूँ। मुझे क्षमा करो रजनी !"

"कृपया क्षमा न माँगिए।" दुखपूर्ण स्वर में उसने कहा, "मेरा सारा हाल आपको ठाकुर साहब से मालूम हो जायगा। ठाकुर साहब मेरे सम्बन्ध की कोई बात नहीं छिपायेंगे। विश्वास रखिए। और जो कुछ आपको उनसे न मालूम हो सकेगा वह उनकी बेटी से मालूम हो जायगा। बड़ी अच्छी लड़की है अरुणा। उसकी शिक्षा-दीक्षा समाप्त हो चुकी है। कल वह बम्बई से वापस आयेगी। मुझे आशा है, उसे पसंद करोगे इन्द्र ! परेशानी में पड़ जाओगे, अगर उसे पसंद न कर सकोगे। है न यही बात ?"

इन्द्र घूमकर उसकी ओर एकटक देखने लगा। देर तक वह उसे उसी तरह देखता रह गया।

"नहीं, ऐसी बात नहीं हो सकेगी, रजनी।" अन्त में निश्चय-सूचक स्वर में उसने कहा, "मैं बाध्य नहीं हूँ उसे पसन्द करने को। जहाँ तक मैं जानता हूँ अरुणा से आज तक कभी मेरी मुलाक़ात नहीं हुई। और विश्वास करो रजनी ! उसकी उपस्थिति मेरे ऊपर कुछ भी प्रभाव न डाल सकेगी। क्या मैं जान सकता हूँ कि उसकी चर्चा तुमने क्यों छेड़ी है ?"

"ज़रूर जान सकते हो, इन्द्र। मुझे बतलाने में कोई आपत्ति नहीं है। बात यह है कि स्त्रियों का दृष्टिकोण स्त्रियों के प्रति उदार नहीं होता। मिस अरुणा राठौर भी अपवाद नहीं हैं। अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाओ। इस लम्बे-चौड़े क्षेत्र में बहुत थोड़े लोग

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बसे हुए हैं । सब एक-दूसरे को जानते हैं, समझते हैं। सब इज़्ज़तदार समझे जाते हैं। सब..."

"सिवाय तुम्हारे रजनी ?"

सहमत-सूचक भाव से उसने सिर हिलाया। उसके ओठों से शरारत-भरी मुस्कान अदृश्य हो गई थी। उसकी आँखों में आँसू छलकने लगे थे।

"हाँ, मेरे सिवाय, सभी व्यक्ति यहाँ सम्मानित हैं," अवरुद्ध कण्ठ से रजनी ने कहा। "बात यह है कि मैं यहाँ की नहीं हूँ, मेरा जन्म यहाँ नहीं हुआ था। मैं यहाँ तब आई थी जब सत्तरह वर्ष की हो चुकी थी। यहाँ के लोग मुझे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं, और मेरे सम्बन्ध में तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ाया करते हैं। उनकी दृष्टि में मैं अपनाने के योग्य कदापि नहीं हूँ।"

मुख मोड़कर, आँखें पोंछकर, वह गली की ओर देखने लगी।

"मैं तो समझती हूँ कि तुम्हें भी मुझसे दूर ही रहना चाहिए।"

"यह क्यों ?"

"बदनाम हो जाओगे।"

"नेकनामी-बदनामी की कभी मुझे परवाह नहीं रही। दूसरों को बदनाम करनेवाले लोग ख़ुद बुरे होते हैं, और दूसरों को बुरा कहकर अपने को भला साबित करना चाहते हैं।"

"हार्डी आ रहा है!" मुस्कराने की कोशिश करते हुए रजनी ने कहा, "बड़ा प्रसन्न दिखाई दे रहा है! शायद आज शिकार करने में वह अधिक सफल हुआ है। उसे साथ लेकर अब घर जाओ। कल शायद मुझसे भेंट करना पसन्द न करोगे। अभी सारी बातें तुम्हें मालूम नहीं हैं। जब सब कुछ जान लोगे तब

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

मेरी ही बात ठीक निकलेगी। ख़ैर, अब मैं अन्दर जाऊँगी। सर्दी लग रही है।"

इन्द्र उठ खड़ा हुआ।

"मैं नहीं जानता, रजनी! कि अभी मुझे क्या जानना बाक़ी है। लेकिन चाहे जो कुछ सुनने को मिले, मैं इसी समय बिना ज़रा भी हिचक के कह सकता हूँ कि तुमसे भेंट करने में मुझे सदैव अपार प्रसन्नता होगी। कल तुमसे भेंट हो सकेगी?"

"अगर भेंट करना ही चाहोगे, तो हो सकेगी।"

"तो कल चार बजे फिर इसी स्थान पर मैं आऊँगा। मुझे बड़ा दुःख होगा, बड़ी निराशा होगी अगर उस समय तुम यहाँ न मिलोगी।"

इन्द्र ने अपना हाथ धीरे से उसके हाथ पर रख दिया। रजनी ने मुस्कराने की कोशिश की; लेकिन उसका प्रयास सफल नहीं हो सका। वह मुड़कर बँगले की ओर बढ़ी।

"सुनो तो रजनी!" इन्द्र ने कहा। "इस गली का नाम क्या है?"

"मिलन-कुञ्ज!" रुककर, मुख मोड़कर रजनी ने उत्तर दिया। और फिर वह तेज़ी से चली गई।

वह मन्त्रमुग्ध दृष्टि से उसकी ओर, जब तक वह दिखाई देती रही, देखता रहा। फिर एक दीर्घ-निःश्वास खींचकर घर की ओर चल पड़ा। उसके मन में विभिन्न भावनाओं का एक तूफ़ान-सा उठा हुआ था। और उसका उद्वेलित हृदय एक विचित्र, मधुर, कटु पीड़ा के भार से भारी हुआ जा रहा था। उसकी पूर्वसंचित धारणायें ढेर हुई जा रही थीं और उसके हृदय में नवीन धारणाओं की सृष्टि हो रही थी। गली पीछे छूट गई। वह उस कच्चे चौड़े रास्ते पर पहुँच गया जिसे सड़क कहा जाता था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

एकाएक उसकी दृष्टि उस सुविस्तृत ऊबड़-खाबड़ मैदान की ओर गई। एक लम्बा-तगड़ा व्यक्ति झाड़ियों के बीच चल रहा था। वह एक काला लबादा पहने था और सिर पर एक काला हैट लगाये हुए था। उसके कन्धे कुछ आगे की ओर झुके हुए थे, शायद बराबर ज़मीन की ओर देखते रहने के कारण वह चुपचाप, गम्भीर भाव से, सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा था। उसकी सम्पूर्ण आकृति से मनहूसियत टपक रही थी। ऐसा जान पड़ता था मानो वह कोई अमंगलसूचक काली छाया हो, जो किसी भयानक विपत्ति की सूचना देती हुई संसार में विचरण कर रही हो। वह काले लबादे की जेबों में हाथ डाले हुए, कुछ आगे की ओर झुका हुआ चला जा रहा था।

चुपचाप, दृढ़तापूर्वक खड़ा हुआ इन्द्र उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखता रहा। वह उसे आज पहली ही बार नहीं देख रहा था। अक्सर उसने उसे इसी तरह उस मैदान में निस्तब्ध, गम्भीर भाव से घूमते हुए देखा था। उसने उसे देखा था उषा के धुँधले प्रकाश में, रात्रि के गहन अन्धकार में, उसी तरह, शिकार की खोज में चुपचाप उड़ते हुए चमगीदड़ की भाँति, निस्तब्ध, गम्भीर भाव से घूमते हुए।

वह मनहूस व्यक्ति चलता चला गया, जब तक उस भूरी मृत्यु-रेखा के पास पहुँच नहीं गया। उसके समीप पहुँचकर वह घुटनों के बल बैठ गया और उस रेखा की नष्ट मिट्टी को हाथ में लेकर ग़ौर से देखने लगा। वह उसकी देर तक परीक्षा करता रहा। फिर वह उठकर वृक्षों के बीच होता हुआ 'रजनी-कुटीर' नामक उस बँगले की ओर बढ़ा। बिना एक क्षण के लिए भी कहीं रुके हुए वह सीधे उस बँगले में घुस गया।

क्रोध से तमतमाता हुआ, अन्दर ही अन्दर उबलता हुआ इन्द्र 'रामेन्द्र-भवन' की ओर चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तीसरा अध्याय

दो कारण

रायबहादुर ठाकुर रामेन्द्रप्रतापसिंह राठौर योरपीय सभ्यता के रंग में पूरी तरह रँगे हुए थे। अनेक वर्षों तक वे योरप और अमेरिका में भ्रमण और निवास कर चुके थे। वे योरपीय ढंग से रहते थे, योरपीय तथा भारतीय दोनों प्रकार के भोज्य पदार्थ सेवन करते थे। एक बहुत बड़े इलाक़े के वे एकमात्र स्वामी थे। धन की उन्हें कोई कमी नहीं थी। रहने के लिए रामेन्द्र-भवन-सा सुन्दर, विशाल भवन था। सेवा के लिए सेवकों की एक छोटी-सी पलटन। वस्त्र आपके लंदन और पेरिस से सिलकर आते थे, भोजन के पदार्थ कलकत्ता और बम्बई से। श्रीगंज जैसे जंगल में भी उनके लिए सदैव मंगल बना रहता था। किन्तु इधर कुछ दिनों से वे कुछ विकल-से दिखाई देने लगे थे। कारण किसी को ज्ञात नहीं था।

रामेन्द्र-भवन का निर्माण उन्होंने विदेश से लौटने के बाद कराया था। उसके निर्माण में लाखों रुपये ख़र्च हुए थे। समस्त आधुनिक ठाटबाट से वह पूरी तरह सुसज्जित था। दूर के एक नगर से बिजली का करेंट वहाँ तक लाया गया था। टेलीफ़ोन भी लगा था, तैरने का एक तालाब भी था, ठण्ढक और गर्मी पहुँचाने के लिए मशीनें भी थीं। उसकी बनावट बड़ी सुन्दर थी, हर दृष्टिकोण से वह दर्शनीय था। आराम के सारे साधन वहाँ विद्यमान थे—किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

रामेन्द्र-भवन का सुसज्जित डाइनिंग-रूम विद्युत्-प्रकाश से जगमगा रहा था। चमकती-दमकती मेज़ के सामने ठाकुर साहब और इन्द्र आराम से बैठे थे। भोजन समाप्त हो चुका था। मीनार में लगी हुई बड़ी घड़ी ने नौ बजाये। ख़ानसामा कालूराम हाथ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

में एक ट्रे लिये हुए तुरन्त कमरे में आया। ट्रे से उठा-उठाकर ब्रांडी और सोडा की बोतलें और गिलास उसने मेज़ पर क़ायदे से सजा दीं। एक सिगार जलाकर इन्द्र कालूराम की ओर देखने लगा।

वह कमरा बड़ा सुन्दर था। उसकी बनावट तथा सजावट से अद्भुत सुरुचि टपकती थी। दरवाज़ों पर क़ीमती परदे पड़े हुए थे; दीवारों पर विश्व के महान् चित्रकारों की बहुमूल्य कृतियाँ टँगी हुई थीं। लैम्पों पर गहरे लाल परदे लगे हुए थे जिनसे बड़ा मधुर प्रकाश निकल रहा था। उस प्रकाश के मेज़ की चमक से मिलने के कारण मेज़ पर इधर-उधर किरणें-सी निकलती हुई जान पड़ती थीं।

खानसामा दबे-पाँव कमरे से चला गया। दरवाज़ा धीरे से बन्द हो गया। तब ऊपर की ओर धुँयें का एक सुरसुरा फेंककर, इन्द्र ठाकुर साहब की ओर मुड़ा। उस कमरे में छाई हुई नीरवता उसे खलने लगी थी। वायुमण्डल अज्ञात विकलता से जैसे भारी हो उठा था।

ठाकुर साहब चुपचाप कई क्षणों तक अपने मेहमान की ओर विचित्र ढंग से देखते रहे। ऐसा जान पड़ता था जैसे वह अपने विचारों को स्थिर कर रहे हों।

"यहाँ तुम्हें मज़ा तो आ रहा है न इन्द्र?" अन्त में उन्होंने कहा।

इन्द्र एक क्षण तक निस्तब्ध रहा।

"हाँ, आ ही रहा है," उसने उत्तर दिया। "लेकिन यह तो बतलाइए ठाकुर साहब, आपने मुझे यहाँ क्यों निमंत्रित किया था?"

ठाकुर साहब ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। अपने जलते हुए

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सिगार की ओर देखते हुए, क़मीज़ में लगी हुई हीरे की पिन पर उँगलियाँ फेरते हुए वे ज़रा देर तक कुछ सोचते रहे।

"एक सप्ताह से मैं इस प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"यह तो कोई उत्तर नहीं है जनाब!"

"यह स्थान बड़ा रमणीक है। यहाँ की जल-वायु स्वास्थ्य-वर्धक है। शिकार यहाँ जी भरकर खेला जा सकता है।"

"वाह, साहब वाह! आप मुझको बिलकुल बच्चा समझते हैं? यह स्थान बेशक़ रमणीक है; किन्तु इससे कहीं अधिक रमणीक स्थान इस देश में भरे पड़े हैं। शिकार खेलने के लिए मुझे इतनी दूर आने की ज़रूरत नहीं थी। और मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। मुझे जलवायु-परिवर्तन की ज़रा भी आवश्यकता नहीं थी।"

ठाकुर साहब ने गला साफ़ किया। फिर वे विचित्र दृष्टि से इन्द्र की ओर देखने लगे। वे बड़े स्वरूपवान् और तेजस्वी थे। उनके बाल तो ज़रूर सफ़ेद हो गये थे; लेकिन उनका शरीर अभी बलिष्ठ तथा सुगठित था। आत्म-विश्वास, आत्म-निर्भरता, आन्तरिक शान्ति तथा स्वाभाविक निर्भयता उनके चेहरे से टपकती थी। उनके वस्त्र उनके शरीर पर ख़ूब खिलते थे।

अगाध शान्ति, असीम निस्तब्धता का जो सुविस्तृत साम्राज्य उनके उस विशाल भवन के चारों ओर फैला हुआ था, उसी के वे एक अंग प्रतीत होते थे। उन्हें अपार प्रेम था, उस एकान्त से जिसमें वे रहते थे। फिर भी न जाने क्यों ऐसा ज्ञात होता था मानों किसी अज्ञात अशान्ति की छाया उनके मस्तिष्क में चक्कर काटती रहती हो और किसी अज्ञात आशंका की अनुभूति उनके हृदय में जमकर बैठ गई हो। उनका हृदय उन दिनों मानो उन दोनों अस्वाभाविक भावनाओं से युद्ध-सा कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इन्द्र को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। ठाकुर साहब ऐसे व्यक्ति मालूम होते थे जिसके पास भय फटक नहीं सकता। फिर भी उस समय ऐसा लग रहा था मानो भय से वे किसी तरह बच नहीं पा रहे हैं।

"अब भी मैं जानना चाहता हूँ," इन्द्र ने शान्तभाव से धीरे से कहा "कि आपने मुझे यहाँ क्यों बुलाया था।"

स्थिर दृष्टि से ठाकुर साहब ने उसकी ओर देखा।

"दो कारणों से इन्द्र!"

"ख़ैर, ठीक बात बतलाने का आपने किसी तरह निश्चय तो किया। धन्यवाद! पहला कारण क्या है?"

"पहला कारण अगर तुम स्वयं अभी तक नहीं जान सके, तो कलकत्ता से यहाँ तक आने का कष्ट अगर तुम न उठाते तो ज़्यादा अच्छा होता। तुम्हारी दृष्टि तथा बुद्धि के सम्बन्ध में मेरा जो अनुमान था वह शायद भ्रमपूर्ण था।"

उनके स्वर में किंचित् उत्तेजना आगई थी—उस तरह की उत्तेजना जो उस व्यक्ति के स्वर में पाई जाती है जो किसी जटिल रहस्य को समझ पाने में सफल न हो रहा हो।

"मेरा ख़्याल था कि यहाँ तुमने कुछ विचित्र बातें देखी होंगी—कुछ ऐसी बातें जो बयान नहीं की जा सकतीं—ऐसी बातें जिन्हें देखने से पता नहीं चलता कि हम होश में हैं या पागल हुए जा रहे हैं और निर्मूल, अनहोनी बातों की कल्पना कर रहे हैं। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें फ़िज़ूल कष्ट दिया। शायद यहाँ के विकट, भयानक एकान्त का मेरे ऊपर बुरा असर पड़ा है और मैं ऐसी बातें देखने लगा हूँ जो सर्वथा निर्मूल हैं। शायद मुझे स्थान-परिवर्तन की आवश्यकता है। यहाँ से मुझे कहीं चल देना चाहिए, दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई कहीं भी, जहाँ सभ्य समाज

14343

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

की भीड़ हो, हँसी हो, चुहल हो, रस-रंग हो। वहीं मेरी तबीअत ठीक हो सकेगी, यहाँ तो गिरती ही चली जायेगी।"

"लेकिन अगर मान लीजिए कि मैंने भी यहाँ कुछ विचित्र बातें देखी हैं तो..."

ठाकुर साहब ने उसकी ओर तेज़ी से देखा और शान्ति की साँस ली।

"सच कहते हो? तुमने भी देखी हैं?"

इन्द्र ने सिर हिलाया।

"जी हाँ, शान्त स्वर में उसने कहा। बाहर मैदान में दो-एक बड़ी आश्चर्यजनक बातें मैंने भी देखी हैं। मुझे भी उन बातों ने चक्कर में डाल दिया था, और मुझे भी सन्देह हुआ था कि सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ, स्वप्न देख रहा हूँ या कोई वास्तविक घटना घट रही है। उन बातों पर आसानी से विश्वास नहीं होता। स्वभावतः मन में प्रश्न उठता है कि आख़िर यह सब हो क्या रहा है, जादू या तिकड़म, दैवी या दानवी अभिनय? अगर ऐसी ही बातें आपने भी देखी हैं, तो यह सोचकर आप अपने को फ़िज़ूल परेशान न करें कि आपके दिमाग़ में कोई गड़बड़ी पैदा हो गई है और आप निर्मूल दुष्कल्पनायें करने के आदी हुए जा रहे हैं। आपका दिमाग़ सही है, आपके होश-हवास बिलकुल दुरुस्त हैं। जो विचित्र, रहस्यपूर्ण घटनायें घटी हैं वे भी बिलकुल सच्ची हैं।"

ठाकुर साहब कुछ देर तक निस्तब्ध रहे। ऐसा जान पड़ता था मानो वे विकल विचारों को अपने मस्तिष्क से दूर करने की चेष्टा कर रहे हों और सोच रहे हों कि अब उन्हें क्या कहना चाहिए?

"उन घटनाओं के सम्बन्ध में आप किस परिणाम पर पहुँचे हैं जनाब?" एकाएक इन्द्र ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"मैं क्या बताऊँ बेटा ? किसी ऐसे परिणाम पर मैं अभी तक नहीं पहुँच सका हूँ जिससे इस गुत्थी को सुलझा सकने की आशा की जा सके। हाँ, इतना मैं जानता हूँ कि बाहर उस मरुभूमि में या उसके कहीं आस-पास किसी ऐसे भयानक काण्ड की रचना हो रही है जिसके किंचित्मात्र सम्पर्क में आने से मनुष्य का हृदय थर्रा उठता है। यह बात नहीं है कि मैं डर गया हूँ—कृपा करके ऐसी बात सोचकर मेरे साथ अन्याय न करना। लेकिन जब ऐसी बातें देखने को मिलती हैं जिनके कारण समझ में नहीं आते, जिनके भेद सर्वथा अज्ञेय सिद्ध होते हैं तो बुद्धि चकरा जाती है, तबीअत हैरान हो जाती है और यौवन की शक्ति, उत्साह और निश्चिन्तता की आवश्यकता प्रतीत होती है।"

"इन्द्र ! इस मामले का पता लगाना होगा, पूरी तरह भण्डाफोड़ करना होगा। हमें ऐसी शक्तियों के संघर्ष में आना पड़ेगा जो हमारी कल्पना की समस्त उड़ानों से परे सिद्ध होंगी। बाहर उस ऊसर में मैंने ऐसी अनेक घटनायें घटते देखी हैं जिन्हें देखने से मेरे सिर के सफ़ेद बाल और भी सफ़ेद हो गये और रात्रि का अंधकार अत्यधिक भयानक मालूम होने लगा। रजनी-कुटीर में रहनेवाली वह शैतान की बेटी इन रहस्यों के बारे में बहुत कुछ जानती है। यथार्थ तो यह है कि वह स्वयं भी रहस्य के आवरण में, चक्र-व्यूह में छिपी रहती है। उसका वह मनहूस निवासस्थान भयानकता के वातावरण में आबद्ध है। लेकिन सारी बातों का मैं शीघ्र ही पता लगा लूँगा चाहे मुझे उस चुड़ैल का गला ही क्यों न घोंट देना पड़े।

"बताओ इन्द्र ! बताओ," मेज़ पर आगे झुककर उन्होंने कहा, "उस समय तक यहाँ रुकोगे न जब तक कि इस रहस्य का उद्घाटन न हो जायेगा ? बोलो इन्द्र ! बोलो।"

इन्द्र उनकी ओर चुपचाप देखता रहा। वे बड़े विकल,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

चिन्तित और उत्तेजित थे और किंचित् भयभीत भी दिखाई दे रहे थे। उनकी आँखों में विकट विरोध की भावना व्यक्त हो गई थी और उनका सिर दृढ़ निश्चयसूचक भाव से तन गया था।

इन्द्र ने वार्तालाप का प्रसंग दृढ़तापूर्वक बदल दिया। रजनी से सम्बन्ध रखनेवाली ठाकुर साहब की बातें उसके हृदय में तीर की तरह, तेज़ छुरी की तरह लगी थीं; लेकिन ठाकुर साहब को यह नहीं मालूम हो सका था। इन्द्र के उत्तर की पूर्ण उत्सुकता से वे प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके इस आश्वासन की कि वह रामेन्द्र भवन में रुका रहेगा और अपने मस्तिष्क और साहस से उन भयानक, दुर्भेद्य रहस्यों को हल करने में उनकी पूरी सहायता करेगा।

"आपने कहा था कि दो कारणों से आपने मुझे यहाँ बुलाया था," सिगार की राख झाड़कर उसने कहा। "आप यह मान सकते हैं कि पहला कारण समझ और स्वीकार कर लिया गया है। दूसरा कारण क्या है?"

ठाकुर साहब का चेहरा शान्त हो गया। वे जान गये कि अपने उस युवक मित्र पर भरोसा कर सकते हैं। ऐसा ज्ञात होने लगा मानों उनके कंधों से एक बहुत भारी बोझ उतर गया हो। उनके चेहरे पर प्रसन्नता का प्रकाश व्यक्त हो गया और वे शान्तिसूचक भाव से मुस्कराये।

"आह इन्द्र! दूसरा कारण पहले कारण से भी अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है।"

"जी!"

"मेरी बेटी अरुणा कल बम्बई से वापस आ रही है। अरुणा बड़ी अच्छी लड़की है इन्द्र! और तुम अभी तक अविवाहित हो।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तीक्ष्ण दृष्टि से इन्द्र ने उनकी ओर देखा।

"आपका मतलब मैंने नहीं समझा जनाब ?"

फिर मुस्कराये ठाकुर साहब।

"मेरा अभिप्राय वैसा कठिन तो नहीं है बेटा," उन्होंने कहा। "इस विषय पर विचार कर लो। यह नई रोशनी का ज़माना है और आजकल की लड़कियों के मिज़ाज आसमान पर रहते हैं। लेकिन अरुणा वैसी नहीं है। अभी वह निरी नवयुवती है; उसका स्वभाव बड़ा अच्छा है। आधुनिक सभ्यता का बुरा प्रभाव उसके ऊपर ज़रा भी नहीं पड़ा है।"

"अच्छा!" इन्द्र कठोर स्वर में बोला। "इसी लिए आपने मुझे बुलाया था ?"

"हाँ, बेटा," गम्भीर भाव से ठाकुर साहब ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम अरुणा से विवाह कर लो।"

चौथा अध्याय

भयानक प्रयोग

इन्द्र कई क्षणों तक लैम्प की ओर धुएँ के सुरसुरे फेंकता रहा। ठाकुर साहब उसकी ओर ध्यान से देखते रहे। उन्हें इसका किंचित् आभास मिल रहा था कि उनके मेहमान की दृष्टि में उनके किसी व्यवहार से सभ्यता के किसी नियम का उल्लंघन हुआ है। शायद उन्होंने उसके जीवन-क्षेत्र के किसी ऐसे भाग में क़दम रखने की धृष्टता की है जहाँ प्रवेश करने का अधिकार वह किसी को देना नहीं चाहता। उन्हें बड़ी परेशानी हुई, बड़ा आश्चर्य हुआ। उनका ख़्याल था कि अरुणा के प्रति इन्द्र के हृदय में अवहेलना का भाव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"नाख़ुश तो नहीं हुए बेटा ?" कोमल स्वर में उन्होंने पूछा।

"मुझे ज़रा भी .ख़ुशी नहीं हुई जनाब !" इन्द्र ने तुरन्त उत्तर दिया।

"मेरा......मेरा ख़्याल था......मुझे आशा थी कि मेरे निमंत्रण-पत्र से ही तुमने मेरा मतलब समझ लिया होगा।" उनके विनयपूर्ण स्वर में क्षमा-प्रार्थना भरी थी।

"जी नहीं, मैं नहीं समझ पाया था आपका मतलब। सच तो यह है कि इस तरह की बातों से बचने ही के लिए मैं यहाँ चला आया था। तङ्ग करनेवालों की वहाँ भी कमी नहीं थी। मैं नहीं समझता था कि यहाँ भी वही पुराना क़िस्सा छिड़ जायेगा। आपसे ऐसी आशा मुझे नहीं थी ठाकुर साहब !"

ठाकुर साहब बेचैन हो उठे। वर्षों पहले ही इन्द्र के साथ अरुणा का विवाह करने का वे निश्चय कर चुके थे और उत्सुकतापूर्वक उस शुभ दिवस की प्रतीक्षा कर रहे थे जब उनका वह पवित्र निश्चय कार्यरूप में परिणत हो सकेगा। उन्हें नियति का हाथ दिखाई देता था अपने उस निश्चय में। वे दूसरी ओर देखने लगे।

"आपने ऐसा प्रबन्ध किया कि जब अरुणा वापस आये तो मैं यहाँ मौजूद रहूँ ?" ऐसा जान पड़ा मानों इन्द्र इस मामले पर विचार करता रहा हो और उसने निश्चय कर लिया हो कि इसको तय करके ही दम लेगा।

ठाकुर साहब ने गम्भीर भाव से सिर हिलाया।

"हाँ, मुझे आशा हुई थी कि यह बात तुम दोनों को अच्छी लगेगी।"

इन्द्र तनकर बैठ गया।

"अच्छी !" उत्तेजित स्वर में उसने कहा। "कोई बुरी बात तो मुझे इसमें दिखाई नहीं देती जनाब ! अरुणा बड़ी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अच्छी लड़की है और उससे मिलकर शायद हर व्यक्ति को प्रसन्नता होगी। कृपया आप यह न समझें कि आपकी इस व्यवस्था से मुझे अप्रसन्नता हुई है। ऐसा सोचना मेरे साथ अन्याय करना होगा।"........

"दो वर्ष पहले तुमने उसे अन्तिम बार देखा था। दो वर्ष का समय काफ़ी लम्बा समय होता है इन्द्र! लेकिन तुम्हें वह भूली नहीं है। बराबर वह तुम्हें याद करती है।"

"अच्छा! लेकिन आपको यह कैसे मालूम हुआ?"

ठाकुर साहब मुस्कराये।

"अरुणा मेरी एकमात्र पुत्री है। मुझसे अधिक उसे कौन समझ सकता है? इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि वह तुम्हें बहुत पसन्द करती है। ऐसे नाज़ुक मामले के सम्बन्ध में इस ढङ्ग से बात करने में मुझे कुछ कठिनाई ज़रूर हो रही है; किन्तु इस प्रसंग का स्वागत तुमने जिस ढङ्ग से किया उसे देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि स्पष्ट रूप से बात की जाय।"

"मुझे कुछ धक्का लगा था, बस इतनी ही बात थी। इस तरह की बातें सुनकर मुझे ज़रा भी ख़ुशी नहीं होती। विवाह के सम्बन्ध में मेरी जो प्रिय धारणायें हैं उनसे इस तरह की बातें मेल नहीं खातीं। विवाह जैसी महत्त्वपूर्ण प्रथा को व्यवसाय का रूप देना और लड़कों और लड़कियों को क्रय-विक्रय की वस्तु बनाना मुझे कभी पसन्द नहीं आया जनाब! मुझे इसमें किंचित् निर्दयता की, असभ्यता की झलक मिलती है।"

"मेरे ख़याल में अब इस प्रसंग को यहीं छोड़ देना बेहतर होगा इन्द्र! भविष्य अपना प्रबन्ध स्वयं कर लेगा। मुझे खेद है बेटा, कि मैंने ऐसे क्षेत्र में क़दम रखने का दुस्साहस किया जहाँ देवताओं को भी प्रवेश न करना चाहिए। लेकिन, जैसा तुम जानते हो, मेरी इच्छा है कि मरते समय अपनी पुत्री की

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

देख-रेख का भार मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ जाऊँ। यह बात मेरे हृदय में जमी बैठी है। उस दिन मुझे अपार प्रसन्नता होगी जिस दिन मेरा निश्चय पूरा हो सकेगा। सम्भव है कि यह शीघ्र पूरा हो जाय। मेरा ख़्याल है कि अरुणा के आगमन के एक सप्ताह बाद ही शायद अनुकूल वातावरण पैदा हो जायेगा।"

"मालूम होता है कल का दिन बड़ा अच्छा रहेगा," इन्द्र ने ज़ोर देकर कहा।

ठाकुर साहब मुस्कराये।

"आज का दिन कैसा रहा?" उन्होंने पूछा।

"बहुत अच्छा," इन्द्र ने उत्तर दिया। उसके स्वर की दृढ़ता ने ठाकुर साहब को चौंका दिया।

"फ़ाख़्ते हाथ लगे?"

"नहीं, एक भी नहीं। कुछ फ़ाख़्ते मार लेने से कहीं अधिक सफलता हाथ रही।"

"किस तरह?"

इन्द्र मुस्कराया।

"एक बात बतलाइए ठाकुर साहब! रजनी-कुटीर में रहने-वाली वह लड़की कौन है?"

ठाकुर साहब तनकर अपनी कुर्सी पर बैठ गये।

"कौन लड़की?"

"माफ़ कीजिएगा, उसे शायद आपने शैतान की बेटी कहा था।"

ठाकुर साहब के मत्थे पर बल पड़ गये।

"उससे कहाँ भेंट हुई थी?" दृढ़तापूर्वक उन्होंने पूछा।

"उस सुन्दर गली में जिसे मिलन-कुञ्ज कहते हैं," लापरवाही से इन्द्र ने उत्तर दिया। "सारे संसार की सम्पत्ति पा जाने का

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

प्रलोभन पाकर भी मैं उससे भेंट करने के सम्मान से वंचित रहना पसन्द न करता। कितने दिनों से वह यहाँ रह रही है ?"

"बहुत दिनों से नहीं। और अगर वह यहाँ से किसी तरह कहीं चली जाय तो इस स्थान का पाप कट जाय। वह बड़ी ख़राब है इन्द्र ! उसके अस्तित्व पर अपवित्रता का आवरण पड़ा है। मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि जिन भयानक रहस्यों की रचना बाहर की उस मरुभूमि में होती रहती है उनके सम्बन्ध में जितना वह जानती है उतना पास-पड़ोस का कोई अन्य व्यक्ति नहीं जानता। रजनी-कुटीर से थोड़ी ही दूरी पर वे समस्त घट-नायें घटी हैं। हाल ही में मैंने उस गली में एक ख़रगोश को जी तोड़कर भागते देखा, गोया बहुत-से शिकारी कुत्ते उसका पीछा कर रहे हों। भूरे रंग की उल्का के समान वह सनसनाता चला गया जब तक वह रजनी-कुटीर के सामने नहीं पहुँचा। उस मनहूस बँगले के सामने पहुँचते ही वह गिर कर ढेर हो गया। पाँच-सात बार क़ुलाचें भरकर वह निर्जीव होकर गिर पड़ा।

"आश्चर्य से चकित होकर मैं उसके समीप गया। किसी तरह की ज़रा भी आवाज़ किसी तरफ़ नहीं हुई, न तो बन्दूक़ की कड़क, न गोली की सनसनाहट। किसी ओर से किसी तरह का आक्रमण होता देखा नहीं गया। फिर भी इस बात पर सन्देह करने की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं थी कि एक हट्टा-कट्टा, जीता-जागता जानवर अपने जीवन के मध्य काल में ही न जाने कैसे, न जाने क्यों एकाएक गिरकर मर गया। उसके स्पर्श और उसकी गंध से ऐसा जान पड़ता था जैसे वह एक सप्ताह से वहाँ मरा पड़ा रहा हो। बीभत्स दृश्य था, दुर्भेद्य रहस्य था। मैं वापस आ रहा था। एकाएक बँगले के अन्दर किसी के चलने की मुझे आहट मिली। मैं छिप गया। वह लड़की फाटक से बाहर निकली और उस मरे हुए ख़रगोश को एक तश्तरी में लेकर फिर अन्दर

Sri Pratap Singh Library
CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

चली गई। अब बोलो, इस घटना के सम्बन्ध में क्या कहते हो ? बँगले की खिड़कियों से वह उसे गिरते किसी तरह नहीं देख सकती थी। वाटिका के घने परदे में वह घर बिलकुल छिपा रहता है। मुझे भी वह देख नहीं सकती थी।"

"अजीब बात है," इन्द्र ने शान्त स्वर में कहा। "बेशक़, अजीब बात है। किन्तु केवल इस एक घटना के आधार पर उसे जादूगरनी कहकर उसकी बुराई करना तो ठीक नहीं है। मैं समझता हूँ कि आपका यह अभिप्राय नहीं है ठाकुर साहब! सम्भव है कि इस खेदपूर्ण घटना का केवल कोई साधारण-सा कारण हो। यह भी असम्भव नहीं है कि केवल संयोगवश ऐसा हो गया हो।"

"बेशक़, मेरा यह अभिप्राय नहीं है," किंचित् उत्तेजित स्वर में ठाकुर साहब बोले। "लेकिन तुम जानते हो कि एक लम्बे ज़माने से मैं यहाँ रह रहा हूँ। यहाँ के प्रत्येक निवासी के चरित्र का मुझे पूरा-पूरा ज्ञान है। मैं यहाँ का सबसे बड़ा रईस माना जाता हूँ, इस इलाक़े का स्वामी हूँ, स्पेशल मैजिस्ट्रेट हूँ। मेरी इच्छा तथा स्वीकृति के बिना यहाँ कुछ नहीं हो सकता। यहाँ के निवासियों का एक प्रकार से मैं संरक्षक हूँ। और यहाँ के सब लोगों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ—सिवाय उस शैतान लड़की के जो रजनी-कुटीर नामक उस छोटे से बँगले में रहती है। यहाँ का कोई व्यक्ति उसकी प्रशंसा नहीं करता। सब लोग उससे घृणा करते हैं। यह बात नहीं कि यहाँ के लोग बुरे हों। एक-दूसरे का आदर-सम्मान करना, मेल-जोल से रहना—यह इधर के निवासियों की एक विशेषता है। वे..."

"कभी आपने उससे बातें की हैं ?" बीच ही में टोककर इन्द्र ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"नहीं—और आशा करता हूँ कि कभी उससे बात करने की नौबत न आयेगी।"

"यह तो कोई अच्छी बात नहीं है कि बिना उससे बात किये, बिना उसके मुख से उसकी सफ़ाई सुने आप किसी लड़की को इस हद तक बुरा कहें। इस तरह का व्यवहार तो शायद किसी कुत्ते के साथ भी करना उचित नहीं। मैं तो समझता हूँ कि ऐसा अन्यायपूर्ण व्यवहार किसी तरह भी प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता।"

"इन्द्र, विश्वास करो, वह लड़की अच्छी नहीं है। उसमें अनेक बुराइयाँ हैं। एक ज़बरदस्त बुराई तो यही है कि वह एक पर-पुरुष के साथ रहती है!"

"अच्छा, ऐसी बात है! वह पुरुष कौन है?"

"एक मनहूस-सूरत, जीता-जागता शैतान जिसका नाम है डाक्टर रमणीरंजन बनर्जी। वह पूरा राक्षस है, निशाचर है। क़रीब आध मील की दूरी पर वह हमेशा दिखाई देता है। ख़ूब लम्बा-तगड़ा है और काले वस्त्र धारण किये रहता है। आगे की तरफ़ कुछ झुका हुआ जब वह मैदान में चलता होता है तब ऐसा जान पड़ता है मानों किसी हरी-भरी, लहलहाती हुई वनस्थली में मृत्यु की काली छाया विचरण कर रही हो। वह किसी ख़ूँख़्वार जानवर से कम नहीं है। मेरा पक्का विश्वास है बेटा, कि इन समस्त जटिल रहस्यों के पीछे बनर्जी का हाथ है। वह एक पागल वैज्ञानिक है। यहाँ के लोग उसे पागल डाक्टर कहते हैं। जब कभी कोई भयानक या वीभत्स काण्ड यहाँ होता है, तब आमतौर पर बनर्जी ज़रूर कहीं आस-पास ही मौजूद देखा जाता है। और उसी शैतान बनर्जी के साथ वह रहती है। तमाम लोग यह बात अच्छी तरह जानते हैं। यह मान लेना क्या अनुचित नहीं है कि यहाँ रहनेवाले हज़ारों आदमी एक लड़की से बेमतलब घृणा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

करते हैं ? उनकी घृणा का कोई न कोई कारण तो अवश्य होगा ?"

"यहाँ रहनेवाले कितने आदमियों ने उससे बातचीत की है ?"

"यह मैं कैसे बतला सकता हूँ ? सम्भव है किसी ने न की हो।"

"बिलकुल ठीक। यही है इस दुनिया का ढंग। जिसे चाहा बदनाम कर दिया और उससे घृणा करने लगे, कारण कोई हो या न हो। किसने उस लड़की को बदनाम किया ? आप नहीं जानते। मैं नहीं जानता। कोई तीसरा व्यक्ति भी शायद नहीं जानता। बदनाम तो वह हो ही गई और किसी बात से किसी को क्या प्रयोजन है ? माफ़ कीजिएगा ठाकुर साहब, उसे बदनाम करने की निंद्य क्रिया में आपने भी सहयोग प्रदान किया है, अब भी कर रहे हैं। सामाजिक ईर्ष्या, द्वेष, संकीर्णता की उसी पुरानी कथा की पुनरावृत्ति इस उजड़े जंगली प्रदेश में आज एक बार फिर हो रही है। आप लोगों के बीच वह एक अजनबी है, इसलिए बुरी के अतिरिक्त और हो ही क्या सकती है ! वाह, साहब वाह ! ख़ूब है आप लोगों का न्याय ! यह बात आपको कैसे मालूम हुई कि वह बनर्जी के साथ रहती है ?"

"यहाँ का बच्चा-बच्चा यह जानता है बेटा ! रजनी-कुटीर में वह बीसियों बार देखा जा चुका है। पक्के तौर पर मैं यह बात जानता हूँ कि कई वर्षों से वह उस घर में रह रहा है। बराबर वह वहाँ नहीं रहता और इससे यह बात और भी घृणित हो जाती है। कभी-कभी किसी रहस्यपूर्ण ढंग से वह महीनों के लिए न जाने कहाँ ग़ायब हो जाता है। तब कोई बात उसके बारे में सुनाई नहीं पड़ती, उसकी मनहूस छाया मैदानों में दिखाई नहीं देती, रहस्यपूर्ण घटनायें बन्द हो जाती हैं और यहाँ के

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अशान्त वातावरण में कुछ समय के लिए शान्ति आ जाती है। इसके बाद एक दिन न जाने कहाँ से वह फिर आ टपकता है और वैसी ही घटनाओं का होना पुनः आरम्भ हो जाता है।"

"हमेशा रजनी-कुटीर ही के पास वैसी घटनायें घटती हैं?"

"हमेशा! सम्भव है कि किसी दूरस्थ स्थान में भी ऐसी घटनायें घटी हों। लेकिन अगर ऐसा हुआ है तो मुझे उनकी सूचना नहीं मिली है।"

"ख़ैर, अगर रजनी-कुटीर में रहनेवाली उस लड़की के विरुद्ध आपके पास केवल इतना ही सबूत है, तो मुझे यह कहना पड़ेगा ठाकुर साहब, कि ज़रूरत इस बात की है कि मनुष्य-मात्र के प्रति आप अपना दृष्टि-कोण अधिक उदार बनायें। इससे आपका कुछ न बिगड़ेगा; लेकिन दूसरों का भला होगा।"

ठाकुर साहब के मत्थे पर बल पड़ गये। ऐसा जान पड़ा जैसे एक नई विचार-धारा उनके मस्तिष्क में चल पड़ी हो।

"उस अयोग्य लड़की में ज़रूरत से ज़्यादा दिलचस्पी ले रहे हो इन्द्र!" आवेशपूर्ण स्वर में ठाकुर साहब ने कहा।

"इसके लिए कुछ दण्ड मिलेगा क्या?"

ठाकुर साहब सँभलकर बैठ गये। उनके चेहरे पर हलकी-सी लालिमा दौड़ गई।

"माफ़ करो इन्द्र! बहस के जोश में ज़रा अपने को भूल गया था।"

"कोई बात नहीं जनाब," मदिरा से भरा हुआ गिलास उठाकर इन्द्र ने कहा। "आपका स्वास्थ्य बढ़े!"

इसके बाद ठाकुर साहब शान्त स्वर में उससे अनुरोध करने लगे कि जहाँ तक हो सके रजनी-कुटीर की उस जादूगरनी से वह दूर ही रहे।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"उस बँगले से आप उसे निकाल क्यों नहीं देते ? आपके सामने कौन-सी अड़चन है ? उसके स्वामी तो आप ही हैं।"

"उसके नाम पट्टा लिख चुका हूँ। नहीं, पट्टा वास्तव में बनर्जी के नाम है। वह लड़की तो बाद में आकर उस घर में रहने लगी है। मैं उसे ज़रूर निकाल देता; अगर निकाल सकता। मुझे उसे निकाल देने में बड़ी ख़ुशी होती। हैं ! लैम्पों को यह क्या हुआ जा रहा है ?" उनकी आवाज़ तीव्र हो गई और उसमें भय की छाया आ गई।

लाल पर्दों में ढँके हुए वे बल्ब विचित्र हरकतें करने लगे। उनका प्रकाश क्रमशः मन्द पड़ता गया। ऐसा जान पड़ता था मानो उन्हें प्रकाश देनेवाली विद्युत्-शक्ति को कोई खींच-खींच कर बाहर फेंक रहा हो। उस कमरे की बड़ी-बड़ी खिड़कियों से घर के अन्य भाग भी दिखाई देते थे। वहाँ भी ठीक ऐसी ही दशा हुई जा रही थी।

"शायद करेंट फ़ेल हुआ जा रहा है," इन्द्र ने लापरवाही से कहा।

मानो उसके इस कथन का प्रतिवाद करने के लिए ही बल्बों का प्रकाश तेज़ होने लगा। प्रकाश तीव्र होता गया और उन बल्बों में असाधारण चमक आ गई।

"मेनफ़्यूज़ ख़राब हुआ जा रहा है," इन्द्र ने कहा। "तमाम रोशनियाँ अभी एकाएक बुझ जायँगी।"

लेकिन मेनफ़्यूज़ यह असाधारण दबाव सहन करने में सफल होता जान पड़ा। कई क्षण तक वह तीव्र प्रकाश तीव्रतर, तीव्रतम होता गया, फिर अस्वाभाविक तौर से उसका रंग बैंगनी हो गया। अल्टरा वायलेट किरणों का-सा विचित्र असर उनमें आ गया और इन्द्र को ऐसा जान पड़ने लगा मानो उसके शरीर की त्वचा में सूइयाँ-सी चुभ रही हों। और इसमें सन्देह की

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं थी कि किसी भय अथवा घबराहट के कारण नहीं; बल्कि उन लैम्पों से निकलनेवाली रहस्यपूर्ण किरणों के कारण ही ऐसा हो रहा था।

"अजीब बात है !" उसने कहा और अपने हाथों की ओर देखा। वे गर्म और सूखे-सूखे-से हो गये थे। ऐसा जान पड़ता था जैसे उनकी जिल्द में बहुत ज्यादा पुटास मल दिया गया हो। वे रुखड़े हो गये थे और नाख़ून रक्त के समान लाल हो गये थे।

उसने ठाकुर साहब की ओर देखा। लैम्पों के एक झुर्मुट के नीचे कुर्सी छोड़कर, उठकर वे खड़े हो गये थे और उसकी ओर ग़ौर से देखते हुए उस विचित्र, रहस्यजनक प्रदर्शन के कारण का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे। अर्धचेतना की-सी अवस्था में वे अपने हाथ मलने लगे। उनका चेहरा उतर गया था, मानो उसमें जीवन-ज्योति न रह गई हो, मानो वह किसी हृदय-रोग से पीड़ित व्यक्ति का चेहरा हो। इन्द्र ने देखा कि वह भी अपने हाथ मल रहा है और ऐसा करने से वे दुखने लगे हैं। उसका चमड़ा असाधारण रूप से कोमल हो गया था। हथेलियों की ज़रा-सी रगड़ भी ऐसी लगती थी जैसे बहुत गर्म लोहा छू गया हो और हाथों के प्रत्येक बार मिलने से ऐसा लगता था जैसे बिजली के हलके करेंट का धक्का लग रहा हो। हवा भारी हो गई थी और दम घुटती-सी जान पड़ती थी।

"हे ईश्वर ! मेरे हाथों को क्या हुआ जा रहा है ?" अपने हाथों की ओर कई क्षणों तक अविश्वासपूर्ण दृष्टि से ठाकुर साहब देखते रहे। फिर अत्यधिक हैरान होकर वे इन्द्र की ओर देखने लगे। उनके हाथ रक्त से रँग गये थे। लैम्पों की ओर देखते समय अज्ञात भाव से हाथों को रगड़ते रहने के कारण चमड़ा कई स्थान पर छिल गया था। ऐसा मालूम होता था जैसे ऊपर की मोटी खाल उधड़ गई हो और उसके नीचे की पतली झिल्ली

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ऊपरी रक्षक आवरण के अभाव के कारण हलकी रगड़ खाकर ही स्थान-स्थान पर फट गई हो। उँगलियों के छोरों से रक्त की बूँदें टपक रही थीं।

"इन्द्र! इन्द्र! क्या मामला है? मेरे हाथ जल रहे हैं! गर्मी के मारे मैं पागल हुआ जा रहा हूँ। और तुम्हारा चेहरा बिलकुल रक्तहीन-सा हो गया है।"

बाहर के बड़े हाल से सेवकों की डरी हुई आवाज़ें आ रही थीं। वे अपने कण्ठ-स्वरों को दाबने की कोशिश करते हुए-से जान पड़ते थे; किन्तु उनके इस प्रयास के कारण उनकी आवाज़ें और भी तीव्र हुई जा रही थीं। वे भयभीत थे और अपने भय को छिपाने का प्रयत्न भी नहीं कर रहे थे। रामेन्द्र-भवन में कोई ऐसा काण्ड हो रहा था जिसे समझ पाना उनके लिए सर्वथा असम्भव था। उसे समझने का प्रयास कर सकना भी उनके लिए असम्भव हो रहा था। और उनकी यह विवशता अत्यधिक भयातुरता के रूप में प्रदर्शित हो रही थी।

विशाल सदर दरवाज़ों के खुलने और कुछ सेवकों के बाहर निकल भागने की आवाज़ें आईं। भगदड़ मच गई थी। भागने-वालों के मन में केवल एक विचार था और वह यह था कि उन झुलसा देनेवाली, डङ्क मारनेवाली भयानक किरणों के प्रभाव-क्षेत्र से किसी तरह बच निकला जाय।

तब एक शान्त, गम्भीर आवाज़ सुनाई पड़ी। वह ख़ानसामा कालूराम की आवाज़ थी।

"भाइयो!" उसने कहा—"शान्त हो जाओ। फ़िज़ूल घबरा-कर गड़बड़ी मत पैदा करो। डरने और घबराने से रामेन्द्र-भवन में काम नहीं चल सकता। अब तुरन्त अन्दर चले आते जाओ। थोड़ी देर तक सब्र करो, अपने को क़ाबू में रक्खो। मैं अभी जाकर सरकार साहब की आज्ञा ले आता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इसके बाद बन्द दरवाज़े पर एक बार हलकी-सी थपकी देकर कालूराम डाइनिंग-रूम में आ उपस्थित हुआ। उसका चेहरा फ़क़ अवश्य था; लेकिन सदैव की भाँति वह शान्त तथा गम्भीर था। वह आदर्श सेवक था।

"हुज़ूर !" उसने अदब से कहा। "बिजली के कनेक्शन में कुछ गड़बड़ी हो गई है। यह बात हुज़ूर की नज़र से भी गुज़री होगी। चन्द सेवक कुछ घबरा-से गये हैं—मेरा मतलब यह है हुज़ूर, कि वे कुछ बेमतलब डर गये हैं। ऐसी हालत में यह बहुत ज़रूरी है कि हुज़ूर मुनासिब हुक्म दें।"

लेकिन इससे पहले ही, कि ठाकुर साहब कोई आज्ञा दे सकें कालूराम तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया, क्योंकि लैम्पों की शिखायें सहसा फड़फड़ाने लगीं और उनसे फट-फट की-सी आवाज़ निकलने लगी। अन्दर ही अन्दर घबराया हुआ वह पहले ही से था। अब उसकी हिम्मत छूट गई। कमरे से बाहर निकलते ही वह भाग खड़ा हुआ और घर के बाहर उस जगह पहुँचकर उसने दम लिया जहाँ अन्य सेवक पहले ही से एकत्र थे।

"सुनो इन्द्र ! चलो हम लोग भी यहाँ से बाहर निकल चलें। यहाँ कोई राक्षसी काण्ड हो रहा है; ईश्वर जाने आगे क्या होगा ' जल्दी करो बेटा, चलो चलें !"

"हम भी निकल भागें ! कैसी बात कह रहे हैं आप ? ये भयानक किरणें इस मकान को तीन घंटे में जलाकर ख़ाक कर देंगी जनाब ! बचाव का कोई उपाय खोज निकालना चाहिए। आपके केन्द्रीय स्विच कहाँ हैं ?"

"नीचे, तहख़ाने में। रोशनी की ऐसी हालत में तहख़ाने का पता लगा लेना अत्यन्त कठिन होगा।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इन्द्र तुरन्त एक ऊँची-सी कुर्सी पर चढ़ गया जो एक खिड़की के निकट रक्खी हुई थी। उचककर उसने वह पीतल का डंडा पकड़ लिया जिस पर भारी-भारी परदे टँगे हुए थे। वह काफ़ी मोटा था और क़रीब बारह फ़ीट लम्बा था। पूरी ताक़त लगाकर उसने उसे ज़ोर से खींच लिया और परदे अलग कर दिये। फिर डंडे का एक सिरा उसने उस बड़ी अँगीठी में फँसा दिया जो एक ओर दीवार में बनी हुई थी। डंडे का दूसरा सिरा लैम्पों के झुरमुट के बिलकुल निकट तक पहुँच गया। दोनों के बीच केवल चन्द इञ्चों का फ़ासला रह गया।

एक कुर्सी खींचकर उसने डंडे को सहारा दे दिया और फिर डंडे की एक चोट से उसने एक बल्ब तोड़ दिया। कुर्सी को धक्का दे देने से डंडे का वह सिरा टूटे हुए ग्लोब में फँस गया। उसके ऐसा कर देने से विचित्र दशा उत्पन्न हो गई। फड़फड़ाहट बन्द हो गई और प्रकाश की चमक तेज़ होने लगी। चमक इतनी तीव्र हो गई कि लैम्पों की ओर देखने से आँखें दुखती थीं। तब एक-एक करके लैम्प टूटने-फूटने लगे। चिनगारियों और गले हुए शीशे की बौछार-सी फ़र्श पर गिरने लगी। सारे घर में यही काण्ड हो रहा था। सोडा की बोतलों के ज़ोर से खुलने की-सी आवाज़ें बराबर आ रही थीं। उष्णता के आधिक्य के कारण पीतल का वह डंडा बिलकुल सुर्ख़ होगया था।

फिर उन रहस्यपूर्ण किरणों का उपद्रव शान्त होने लगा, हवा हलकी होने लगी। और अब केवल रह-रहकर मकान के किसी दूरस्थ भाग से किसी बल्ब के टूटने की आवाज़ आ जाती थी। एक तेज़ सोंधी-सी गंध हवा में भरी हुई थी। वह नाक में जलन पैदा करती थी।

ठाकुर साहब ने उस कुर्सी की पीठ की ओर संकेत किया जिस पर वह डंडा टिका हुआ था। उसके स्पर्श के कारण कुर्सी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

को लकड़ी और उस पर चढ़ा हुआ चमड़ा जलने लगा था। धुएँ की एक रेखा उसके ऊपर घूमती हुई उठ रही थी। इन्द्र कई क्षणों तक और प्रतीक्षा करता रहा। दूर कहीं नीचे से केन्द्रीय स्विचों के ज़ोर से फटने की आवाज़ आई। डंडे की उष्णता-जनित लाल चमक धीरे-धीरे ग़ायब हो गई।

तब कालूराम का गम्भीर कंठ-स्वर सुनाई पड़ा। किसी को उसने आदेश दिया कि वह मोमबत्तियाँ ले जाकर तमाम कमरों में जला आये। ज़रा देर में कई मोमबत्तियोंवाला एक स्टैंड लेकर वह स्वयं डाइनिंग रूम में उपस्थित हुआ। उसके ऊपर एक दर्जन से अधिक प्रकाश-शिखायें नाच रही थीं। उस बड़े कमरे के लिए उतनी रोशनी काफ़ी नहीं थी, फिर भी जितनी थी ग़नीमत थी। कमरे में मंद प्रकाश फैल गया। कालूराम का चेहरा भूत का-सा लग रहा था।

ठाकुर साहब ने शान्ति की गहरी साँस ली।

"ईश्वर को धन्यवाद है कि यह पैशाचिक काण्ड किसी तरह समाप्त तो हुआ!" काँपते हुए स्वर में उन्होंने कहा। "यह सब क्या था इन्द्र? इसके बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"मैं क्या बताऊँ ठाकुर साहब!" आश्चर्य-भरे स्वर में इन्द्र ने उत्तर दिया। "ख़ुद हैरान हूँ। इसके कारण के सम्बन्ध में कोई बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। लेकिन एक बात बिलकुल स्पष्ट है और वह यह है कि मरुभूमिवाले रहस्यों की आज इस तरह पुनरावृत्ति हुई है। आज के प्रयोग के लिए रामेन्द्र-भवन चुना गया था। इस प्रयोग में विकट संहारिणी शक्ति थी। किसी ने किसी तरह इस घर में लगे हुए बिजली के तारों के द्वारा यहाँ उस संहारिणी शक्ति को प्रवेश कराने का घृणित प्रयत्न किया था। ऐसी बातें सम्भव हैं, यह जानना भी शायद आनन्ददायक नहीं है जनाब?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ठीक कहते हो इन्द्र !"

असीम विवशता से वे इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगे। इस नये प्रदर्शन ने उन्हें पूरी तरह परेशान कर दिया था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या सोचें, क्या करें ? उनकी बुद्धि परास्त हो गई थी।

कालूराम ने स्टैंड मेज़ के मध्य में रख दिया। फिर सिर झुकाकर वह पीछे हट गया।

"अगर हुज़ूर की आज्ञा हो," उसने कहा, "तो मैं टेलीफ़ोन से बिजली-घर के अधिकारियों को यहाँ की गड़बड़ी के बारे में इत्तला दे दूँ और उनसे कह दूँ कि जितनी जल्दी हो सके मरम्मत का काम शुरू कर दें ?"

"ज़रूर कह दो," ठाकुर साहब ने उत्तर दिया। "और देखो कालूराम, उन लोगों से यह भी कहना कि अगर मुमकिन हो तो आज रात को ही यहाँ मरम्मत शुरू कर दी जाय।"

"बेहतर है हुज़ूर !"

हाँफता-काँपता एक दूसरा सेवक अन्दर आया। उसने थर्राये हुए स्वर में बतलाया कि तमाम लैम्पों के बुझ जाने के बाद जब मकान में पूर्ण अंधकार छा गया तो उसने साफ़-साफ़ देखा कि एक गर्म, चमकती हुई, सफ़ेद रेखा भूमि को छूती हुई घर से ऊसर की ओर दूर तक खिंच गई।

"वह रेखा कैसी थी—आग की लकीर की तरह ?" आगे बढ़कर इन्द्र ने पूछा। "क्या ऐसा मालूम होता था कि कोई पतला-सा तार एकाएक जल उठा और फिर तुरन्त ही बुझ गया ?"

सम्मतिसूचक भाव से सेवक ने सिर हिलाया।

"बिलकुल ऐसा ही मालूम होता था हुज़ूर !"

"ठीक है। अच्छा, यह बताओ, किस ओर वह रेखा गई थी ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ठीक रजनी-कुटीर की ओर हुज़ूर !"

"बस, ठीक है, अब तुम जा सकते हो।"

दोनों सेवक चले गये। ठाकुर साहब तेज़ी से इन्द्र की ओर मुड़े। उनके चेहरे पर तीव्र विकलता व्यक्त थी।

"सुन लिया तुमने ? अब तुम्हें विश्वास हुआ ?"

"हर्गिज़ नहीं ठाकुर साहब," इन्द्र ने तुरन्त उत्तर दिया।

"लेकिन सुनो तो बेटा वह लड़की..."

"सुनिए जनाब," इन्द्र ने बीच में ही टोंककर कहा, "अगर आप चाहते हैं कि इस रहस्य को हल करने में मैं आपकी सहायता करूँ तो कृपया शालीनता से काम लीजिए। रजनी-कुटीर में रहनेवाली उस लड़की के बारे में मैंने अपनी राय क़ायम कर ली है। मेरी राय आपकी राय से ज़रा भी मेल नहीं खाती। इसलिए, आपको कम से कम इतना तो करना ही चाहिए कि मेरे सामने आप उसकी कटु आलोचना उस समय तक न करें जब तक आपके पास कोई पक्का सबूत न हो।"

"वाह ! खूब !" ठाकुर साहब ने उत्तेजित स्वर में कहा। "अच्छा, यह बताओ, उसका नाम जानते हो ?"

"हाँ, जानता हूँ जनाब ! उसका नाम है रजनी।"

"उसके पिता का नाम क्या है ? वह कौन हैं, कहाँ रहते हैं ?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"अब बोलो ? यह क्या कोई सबूत ही नहीं है ? तुम नहीं जानते कि वह किसकी बेटी है, मैं भी नहीं जानता, शायद कोई भी नहीं जानता। उसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता। ऐसी वह ज़ात-शरीफ़ है ! वह भी संदिग्ध है और उसके सम्बन्ध की सारी बातें भी संदिग्ध हैं। ऐसी दशा में अगर वह अपने बारे में किसी को कुछ नहीं बतलाती तो ठीक ही करती है। ख़ामोशी के परदे में सब कुछ आसानी से छिप सकता है !"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"आदाब-अर्ज़ जनाब !" अन्यमनस्क भाव से इन्द्र ने कहा।

"अच्छा ! कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं !" दरवाज़े पर घूमकर इन्द्र बोला। "मैं उस जले हुए तार का पीछा करने, पता लगाने जा रहा हूँ !"

"लेकिन.... लेकिन, बेटा, वह तो सीधे रजनी कुटीर की ओर गया है !"

"तो इससे क्या हुआ ?"

"उस घर में मृत्यु तुम्हारा स्वागत करेगी।"

"मृत्यु नहीं जनाब !—आशा !" शान्त, स्थिर स्वर में इन्द्र ने कहा। "और मैं वहाँ जा रहा हूँ—अभी—अकेले। उस घर का भेद कितना भी जटिल क्यों न हो, आज रात को उसका पता लगाकर ही दम लूँगा !"

दरवाज़ा धीरे से बन्द हो गया। उस विशाल डाइनिंग-रूम में ठाकुर साहब अकेले रह गये।

पाँचवाँ अध्याय

घातक आक्रमण

अन्धकार में टटोल-टटोलकर चलता हुआ इन्द्र अपने कमरे में पहुँचा। इस समय उसे दो चीज़ों की आवश्यकता थी--एक टार्च और दूसरी रिवाल्वर की। वह अपने ट्रंक खोल-खोलकर देखने लगा। उसे दोनों चीज़ें थोड़ी देर के बाद मिल गईं।

टार्च तो निर्दोष-सी चीज़ थी; किन्तु वह रिवाल्वर बेशक़ भयानक था। आक्रमण तथा स्वरक्षा दोनों के निमित्त उस पर निर्भर रहा जा सकता था। उसे हाथ में लेकर वह कई क्षणों तक ध्यान से देखता रहा। क़रीब आध सेर भारी चमकते हुए लोहे का वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

भयंकर अस्त्र विकट से विकट जीव को भी बड़ी सफ़ाई से मृत्यु के घाट उतार देने के लिए काफ़ी था। सधे हुए हाथ में वह अचूक था। उसके हृदय में सन्तोष भर गया। उसने उसे जेब में डाल लिया।

टटोल-टटोलकर वह सीढ़ियों से नीचे उतरा और सदर दरवाज़े से मकान के बाहर निकल गया।

बाहर आकाश में पंचमी का चन्द्रमा उमड़ते हुए बादलों के झुर्मुट से रह-रहकर निकल आता था और उसके मंद प्रकाश से अंधकार और भी प्रगाढ़ हो उठता था। हवा का रुख़ बदल गया था। बादलों के झुण्ड के झुण्ड उमड़े चले आ रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि घंटे दो घंटे में अवश्य ज़ोरों की वर्षा होगी।

बाहर निकलकर, बाग़ में पहुँचकर, वह टार्च से इधर-उधर रोशनी फेंकने लगा। तीव्र प्रकाश का एक छोटा-सा चक्र अंधकार के परदे में इधर-उधर विचित्र ढंग से दौड़ने लगा।

ज़रा देर में ज़मीन पर एक हलकी काली रेखा दृष्टिगोचर हुई। बाग़ से बाहर निकलकर मरुभूमि की ओर वह सर्प की भाँति दौड़ी चली गई थी। ऐसा मालूम होता था जैसे बहुत दूर तक फैली हुई एक पतली डोर जली पड़ी हो। रामेन्द्र-भवन तक वह तार किस तरह पहुँचाया गया, इस बात का पता लगाने के लिए वह रुका नहीं। उसने सोचा कि यह काम तो बिजली-घर के आदमी भी आसानी से कर लेंगे। उस रेखा के किनारे-किनारे वह तेज़ी से चल पड़ा।

जिस ढंग से वह तार लगा हुआ था उससे स्पष्ट था कि उसे लगानेवालों को उसे छिपाने की कोई विशेष चिन्ता नहीं थी। सिवाय उन स्थानों के जो विशेष रूप से खुले हुए थे। वह केवल ज़मीन से किसी तरह अटका दिया गया था। भीटों पर, मेंडों पर, घास-फूस के बीच, झाड़ियों के अग़ल-बग़ल वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रहस्यमय, टेढ़ी-मेढ़ी रेखा चली गई थी। कहीं कहीं थोड़ी थोड़ी मिट्टी से वह ढँक दी गई थी; किन्तु अग्नि की उष्णता इतनी अधिक थी कि तार के जलने के चिह्न मिट्टी के बाहर भी दिखाई दे रहे थे।

ऐसा जान पड़ता था कि तार के लगानेवाले या लगानेवालों ने शायद सोचा था कि काम हो जाने के बाद उसे लपेटकर हटा लेंगे ताकि खोज करनेवाले उसे देख न सकें क्योंकि मैदान में पहुँचने के बाद उसे छिपाने की चेष्टा बिलकुल त्याग दी गई थी। वहाँ वह रेखा बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जब अत्यधिक विद्युत्-शक्ति से भरा हुआ वह तार जला था तब झाड़ियों की जड़ें भी जल गई थीं।

कुछ क्षणों के लिए चाँद फिर निकल आया। आगे का रास्ता क़रीब सौ गज़ तक साफ़ दिखाई देने लगा। सचमुच वह रेखा ठीक रजनी-कुटीर की ओर चली गई थी। बैटरी की बचत करने के ख़्याल से टार्च बुझाकर वह तेज़ी से आगे बढ़ा।

बहुत दूर आगे, क़रीब दो मील की दूरी पर प्रकाश की एक नन्हीं-सी शिखा अंधकार के परदे में एकाएक झलमलाने लगी। वह प्रकाश-शिखा रजनी-कुटीर की एक खिड़की के अन्दर नृत्य कर रही थी। ओठ दाबकर वह उस अद्भुत, मनोमुग्धकारी दृश्य की कल्पना करने लगा, जो आज ही सौभाग्यवश उसे देखने को मिला था—वह मधुर, जादू-भरा दृश्य! उसे वह लड़की कितनी अच्छी, कितनी प्यारी लगी थी, उसने उसके हृदय को किस हद तक आन्दोलित कर दिया था! उसे वह कभी भूल नहीं सकता, दुनिया उसके बारे में चाहे जो कहे।

रजनी का चित्र स्मृति-पट से उड़ गया। उसके स्थान पर काली पोशाकवाले उस मनहूस, पागल वैज्ञानिक का चित्र आगया जो उस ऊसर में एक ओर से घूमता हुआ आया था और मृत्यु-

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रेखा की जाँच कर चुकने के वाद रजनी-कुटीर में घुस गया था। उसके कानों में ठाकुर साहब की यह बात गूँज उठी कि एक मुद्दत से वह उस बँगले में रह रहा है। उनके इस कथन में जिस घृणित बात की ओर इशारा था उसका समर्थन यह स्पष्ट, विकट सत्य करता था कि श्रीगंज के निवासी रजनी को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उससे किसी तरह का कोई सम्बन्ध रखना पसन्द नहीं करते। और इस अप्रिय सत्य से भी वह अपरिचित नहीं था कि बिना आग के धुँआ नहीं उठता ! एक जन-समुदाय, चाहे उसका दृष्टिकोण कितना ही संकुचित क्यों न हो, क्या किसी एक व्यक्ति को विलकुल अकारण बुरा कहने लग सकता है ?

मस्तिष्क से विचारों को हटाकर, उसने तेज़ी से चलना शुरू किया। सामने एक ऐसा स्थान आगया जहाँ ज़मीन कुछ ढलुई थी। वह जल्दी जल्दी चला जा रहा था। एकाएक कुछ सख्त जड़ों में उसका पैर फँस गया और वह मुँह के वल ज़मीन पर गिर पड़ा।

"यह सूट भी नष्ट हो गया," वह झल्लाकर भुनभुनाया और चेहरे और बालों में उलझी हुई घास निकाल निकालकर फेंकने लगा। सचमुच काँटों में फँसकर उसके वस्त्र बीसियों स्थानों पर कट गये थे। फिर उसी तरह पड़ा पड़ा वह टटोल-टटोलकर अपना टार्च खोजने लगा।

अज्ञात भाव से ही एकाएक वह विलकुल स्थिर हो गया और सारी शक्ति लगाकर सुनने लगा। धीरे से उसने अपना कान हवा के रुख़ की ओर मोड़ा। भारी पगों के ज़मीन पर पड़ने की आवाज़ें आने लगीं। कोई तेज़ी से उसी मार्ग से चला आ रहा था जिस पर होकर वह अभी यहाँ तक पहुँचा था।

रेंगकर, घुटनों के वल चलकर वह रास्ते से कुछ दूर हट गया और चित्त लेट गया। फिर धीरे से उसने अपना रिवाल्वर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

निकाल लिया और उसके घोड़े का खटका चढ़ा दिया। उस विकट नीरवता में खटके का वह मंद शब्द विचित्र लगा। स्थिर भाव से लेटा हुआ, दम साधे हुए, वह उस व्यक्ति की प्रतीक्षा करने लगा।

वह लंबा, श्याम वस्त्र-धारी, मनहूस व्यक्ति दृष्टिगोचर हुआ—वह जड़, हृदयहीन, अन्तरात्माहीन व्यक्ति ऐसा जान पड़ता था जैसे वह उस भूमि को ही छापे ले रहा हो जिस पर वह चल रहा था, उस वायु को ही दूषित किये दे रहा हो जिसमें वह साँस ले रहा था। किसी चट्टान में खुदी जड़ मूर्ति के चेहरे के समान उसका चेहरा बिलकुल निर्जीव भावहीन-सा प्रतीत होता था। वह पीला, मन्द प्रकाश उसके चेहरे पर एक क्षण के लिए पड़ा। घनी भौंहों के नीचे से उसकी स्थिर, भावहीन आँखें सीधे, एकटक अन्धकार की ओर घूर रही थीं। चुपचाप, समान गति से वह इन्द्र के पास से चला गया। इतने निकट से बनर्जी को आज तक किसी ने नहीं देखा था।

इन्द्र उठकर उसका पीछा ही करना चाहता था कि एकाएक उसे किसी दूसरे व्यक्ति की पग-ध्वनि सुनाई देने लगी। बनर्जी की चाल से पूरा इत्मीनान टपक रहा था और मालूम होता था कि अपने पैरों के नीचे पड़नेवाली एक-एक इंच भूमि से वह पूरी तरह परिचित है। किन्तु इस दूसरे व्यक्ति की चाल में यह बात नहीं थी। वह हिचकता हुआ, कुछ रुकता हुआ-सा चल रहा था माना उसे पता ही न हो कि वह कहाँ चल रहा है; मानो उसके मन में आत्म-विश्वास का, निश्चिन्तता का सर्वथा अभाव हो।

कुहनियों के बल सावधानी से कुछ उठकर इन्द्र ने ग़ौर से देखा। अन्धकार के परदे से एक श्वेत छाया निकली चली आ रही थी। वह पहचान गया।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ठाकुर साहब !" धीरे से उसने कहा। "रुक जाइए। आप कहाँ जा रहे हैं ? बनर्जी आगे चला जा रहा है।"

ठाकुर साहब चौंक पड़े।

"अरे, इन्द्र ! तुमने तो मुझे चौंका दिया भाई ! मैंने तो समझा था कि तुम्हारा पीछा कर रहा हूँ ? मैंने तुम्हारे टार्च की रोशनी देखी थी।"

"लेकिन आप घर से निकले किसलिए हैं ?"

"मैंने सोचा कि चलकर तुम्हारी सहायता करूँ। ऐसी विपत्ति के समय घर में चुपचाप बैठा रहना ठीक नहीं मालूम हुआ।"

इन्द्र ने कुछ नहीं कहा। कृत्रिम शालीनता से उस सम्पन्न, साहसी युवक को घृणा थी। अपने मन में उसने स्वीकार किया कि उस भयानक अन्धकार में एक साथी की संगति उसके लिए अनावश्यक नहीं है। उस जटिल रहस्य की दुर्भेद्यता का बुरा प्रभाव अब उसके ऊपर भी पड़ने लगा था और उसे अनुभव होने लगा था कि वह एक ऐसी मंज़िल पर पहुँच गया है जिसके आगे नितान्त अलौकिकता के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

"अच्छी बात है आइए, चलिए," उसने धीरे से कहा। "यहाँ रुके रहने से कोई लाभ नहीं। अब आगे बढ़ना चाहिए। पास में रिवाल्वर है ?"

"है," सिर हिलाकर ठाकुर साहब ने उत्तर दिया।

और तब वे आगे बढ़े। दस मिनट तक वे बिलकुल चुपचाप चलते रहे।

"यह मामला अब मेरी पहुँच से बाहर हुआ जा रहा है," इन्द्र ने कहा। "कल मैं टंडन को तार दूँगा।"

"टंडन कौन है ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"मेरा मित्र है और .खुफ़िया-विभाग का एक बड़ा अफ़सर। आप उसे पसन्द करेंगे। वह बड़ा साहसी, दृढ़-प्रतिज्ञ और विश्वास करने के योग्य है। इस तरह के काम वह सारी ज़िन्दगी करता रहा है और प्रेतात्माओं से वह ज़रा भी नहीं डरता। टंडन के मन में आप किसी तरह ज़रा भी घबराहट पैदा नहीं कर सकते। इस मामले को हल करने के लिए इसी तरह के आदमी की ज़रूरत है।"

"रामेन्द्र-भवन को मैं जासूसों का अखाड़ा बनाना नहीं चाहता", दृढ़ स्वर में ठाकुर साहब ने कहा। यह बात उन्हें पसन्द नहीं आई कि क़ानून इस मामले में हस्तक्षेप करे और उन जटिल रहस्यों के उद्घाटन की चेष्टा करे जिनके प्रभाव-क्षेत्र में रामेन्द्र-भवन भी आगया था।

"रामेन्द्र-भवन का नामोनिशान मिट जाने देने की अपेक्षा जासूसों को बुलाना बेहतर होगा," इन्द्र ने तुरन्त उत्तर दिया, "जो हो, कल सबेरे ही तार देकर मैं टंडन को बुलाऊँगा। मुझे तो जान पड़ता है कि इस मामले में ऐसी सम्भावनायें निहित हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर रहे हैं। बनर्जी मूर्ख नहीं है, केवल मनोरंजन के लिए वह यह सब नहीं कर रहा है। कोई ज़बरदस्त योजना इसके पीछे है। वह ऐसी शक्तियों से खेल रहा है जिनका हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है, किन्तु एक मँजे हुए उस्ताद की तरह वह उनसे पूर्णतया परिचित है। जितनी जल्दी अधिकारियों को हम इन बातों की सूचना दे सकें उतना ही हमारे हक़ में और न जाने कितने लोगों के हक़ में अच्छा होगा।"

"टंडन से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" अप्रसन्न भाव से ठाकुर साहब ने पूछा।

"कितने ही मामलों में मैंने उसकी सहायता की है। अपने मनोरंजन के लिए मैं भी जासूसी का काम करता हूँ। इस तरह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

का काफ़ी काम मैंने किया है। अनेक मामलों में सफल भी हो चुका हूँ। दिमाग़ इससे बड़ा चुस्त और दुरुस्त रहता है। पैसा कमाने के लिए यह काम करने की मुझे ज़रूरत नहीं, लेकिन इस क़ाम में जो मज़ा है वह किसी दूसरे काम में मिल नहीं सकता।"

ठाकुर साहब चुपचाप चलते रहे। इन्द्र का निश्चय अब भी उन्हें पसन्द नहीं आ सका। किन्तु यह तो उन्हें अपने मन में स्वीकार ही करना पड़ा कि इस मामले की कितनी ही बातें उनकी समझ के बाहर थीं। इन्द्र उन बातों को काफ़ी समझ रहा था, वह एक ज़िद्दी, दृढ़-प्रतिज्ञ तथा स्वेच्छाचारी युवक था।

पूरे एक घंटे में वे रजनी-कुटीर के फाटक पर पहुँचे। उस बँगले की खिड़की से प्रकाश अब भी निकल रहा था। उसी प्रकाश ने मरुभूमि को पार करने में उनका पथ-प्रदर्शन किया था। उसी के कारण इन्द्र को अपने टार्च से काम लेने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी।

"फाटक को न छुइए," इन्द्र ने धीरे से कहा, "सम्भव है उसने आत्म-रक्षा के लिए इसमें गुप्त ढंग से बिजली के तार लगा रक्खे हों।"

उस बँगले में कोई चहारदीवारी नहीं थी। उसका हाता झाड़ियों से घिरा हुआ था। एक जगह झाड़ियों के बीच थोड़ा-सा खुला स्थान था। उसी बड़े सूराख़ में घुटनों और हाथों के बल घुसकर वे अन्दर पहुँचे। लुकते-छिपते वे खिड़की के समीप गये। अन्दर से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। चारों ओर क़ब्रिस्तान का-सा सन्नाटा छाया हुआ था।

इन्द्र ने सावधानी से अन्दर झाँका। दीवार में बनी हुई बड़ी अँगीठी के समीप पुराने ढंग की एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई रजनी एक पुस्तक पढ़ रही थी। रह-रहकर दृष्टि उठाकर वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दीवार पर लगी हुई बड़ी घड़ी की ओर देखती और दीर्घ निःश्वास छोड़ती।

"बनर्जी अभी वापस नहीं आया है", ठाकुर साहब ने धीरे से कहा, "वह उसका इन्तज़ार कर रही है।"

उन्हें चुप करने के लिए इन्द्र ने उनकी बाँह पकड़कर दबाई। फिर वह उन्हें खिड़की से अलग ले गया।

"आप यहीं रुके रहिए", उसने उनके कान में कहा, "खिड़की के पास जाकर इस तरह खड़े हो जाइए कि रोशनी आपके ऊपर न पड़ने पाये। मैं ज़रा मकान के पीछे की तरफ़ जाँच करने के लिए जा रहा हूँ।"

वह दबे पाँव खिसक गया और एक क्षण में अन्धकार में अदृश्य हो गया।

मकान की बग़ल में पहुँचकर वह ठिठक गया। एकाएक उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे मकान के सामनेवाले हिस्से से हलकी-सी आवाज़ आई हो। वह कई क्षणों तक सुनता रहा। किन्तु निस्तब्धता फिर वैसी ही हो गई—वैसी ही भारयुक्त और कष्ट-दायक। वह फिर आगे बढ़ा।

दूर मरुभूमि में रहस्यपूर्ण प्रकाश-रेखायें पुनः टिमटिमाने लगीं—वैसी ही प्रकाश-रेखायेँ जैसी श्रीगंज में आने के बाद से उसे अकसर देखने को मिल रही थीं। इधर-उधर नाच-नाचकर वे बादलों की पंक्तियों को आलोकित कर रही थीं। जल की बड़ी बड़ी बूँदें एकाएक गिरने लगीं। हलकी वर्षा होने लगी। झाड़ियों और वृक्षों पर उन बूँदों के गिरने से टप-टप की-सी आवाज़ होने लगी।

वे किरणें नीली थीं और उनमें कुछ हरा रंग भी मिला जान पड़ता था। चपला के समान वे बादलों के महलों में क्रीड़ा कर रही थीं, किन्तु कभी ऐसी चपला उसे देखने को नहीं मिली थी।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वे पतली, लम्बी, शब्दहीन किरणें पृथ्वी से उठ-उठकर ऊपर पहुँच रही थीं।

"किसी नये काण्ड का आयोजन किया जा रहा है", वह भुनभुनाया और इसके साथ ही उसने अपना ध्यान उस ओर से हटा लिया।

दो क्षण में उसने अपने को एक काफ़ी बड़ी पृष्ठ-वाटिका में पाया, जिसके एक सिरे पर एक शागिर्दपेशा था। सब्ज़ी की क्यारियों को सावधानी से लाँघता हुआ वह शागिर्दपेशे की ओर बढ़ा। उसके समीप पहुँचकर वह कुछ झुका और उसने टार्च को हाथ से कुछ छिपाकर उसे जलाया। उस जले हुए तार की रेखा शागिर्दपेशे तक चली आई थी और उसके दरवाज़े के नीचे से होकर अन्दर चली गई थी। किसी चलती हुई मशीन की हलकी भरभराहट अन्दर से आ रही थी।

"आरम्भ तो बुरा नहीं रहा", उसने अपने मन में कहा, "यहाँ तक सुराग़ लगाने में टंडन शायद मुझसे अधिक सफल न होता।"

दरवाज़े का हैंडिल धीरे से घुमाकर उसने हलका-सा धक्का दिया। दरवाज़ा खुल गया। एक हाथ में रिवाल्वर और दूसरे में टार्च लिये हुए वह अन्दर घुसा, दरवाज़ा बन्द कर दिया और अपना टार्च जलाया।

एक कोने में भरभराती हुई मशीन के अतिरिक्त कमरा बिलकुल ख़ाली था। वह मशीन डाइनमो की-सी शक्ल की थी और एक पत्थर पर रक्खी हुई थी। टार्च के थोड़े से प्रकाश में यह जान पाना कठिन था कि वह क्या काम करती थी। ताँबे के चमकते हुए तार सारी मशीन पर लगे हुए थे और उसके ऊपर शीशे का एक बड़ा-सा पात्र था, जिसमें पारा भरा हुआ था। चर्ख़ियाँ बड़ी तेज़ी से चक्कर काट रही थीं और कारबन की नलियों से नीले रंग की चिनगारियाँ निकल रही थीं।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अपने रिवाल्वर की ओर वह मुग्ध दृष्टि से देखने लगा।

"तुम कितने अच्छे हो," उसने अपने में कहा, "तुम्हारी एक गोली उस जहन्नुमी मशीन को कूड़ाखाने में फेंक दी जाने के योग्य बना देगी। लेकिन नहीं। भय केवल इस बात का है कि ज़ोर का धड़ाका होगा। इससे आगे के काम में गड़बड़ी पैदा हो जाने की आशङ्का है। नहीं, इस तरह काम न चलेगा। तब क्या करना चाहिए?"

उसने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। एक अलमारी में कुछ औज़ार रक्खे हुए थे। उसने एक रिंच उठा लिया। बस काम बन गया। वह काम में जुट गया। सुव्यवस्थित ढङ्ग से दृढ़तापूर्वक वह उस मशीन को तोड़ने-फोड़ने लगा। एक बार उसे विद्युत्-प्रवाह का गहरा धक्का लगा। पीछे हटकर उसे दीवार का सहारा लेना पड़ा और उसके शरीर की नसें ऐंठने लगीं। ज़रा देर में सँभल-कर वह फिर आ डटा। वह बोलटुओं और कुनियों पर कुछ देर तक चोटें करता रहा। मशीन ढीली होकर थर्राने लगी। तब कारबन की फटफटाती हुई नलियों पर उसने एक गहरी चोट लगाई।

मशीन से सहसा नीली लपटें बड़ी तेज़ी से निकलने लगीं, और ऐसा जान पड़ने लगा जैसे हवा भी झुलसी जा रही है। चर्खियों की गति मन्द पड़ने लगी। कुछ क्षणों में चर्खियाँ बिल-कुल रुक गईं। तब कोट उतारकर, मत्थे से पसीना पोंछकर, इन्द्र ध्वंस-कार्य का शेषभाग समाप्त करने में लग गया।

जिन आधारों पर मशीन खड़ी थी वे उसकी बहुत तेज़ थरथराहट के कारण टेढ़े-मेढ़े और इधर-उधर हो गये थे। हफ़्तों की कड़ी मेहनत से ही वे ठीक किये जा सकेंगे। बड़े बड़े पीपों और ताँबे के चमकते हुए तारों को खींच-खींचकर, नोच-नोच-कर उसने अलग कर दिया और कमज़ोर पुर्ज़ों पर अपनी पूरी ताक़त से चोटें करने लगा। आध घंटे के कठिन परिश्रम

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

से उस विचित्र मशीन को उसने कूड़े के एक ढेर में परिणत कर दिया। संसार का कोई कुशल से कुशल कारीगर भी अब उसकी मरम्मत न कर सकता था।

संतोष के भाव से कमरे में एक बार इधर-उधर दृष्टि दौड़ा-कर, वह चुपके से बाहर निकला और दबे-पाँव उस स्थान की ओर चला, जहाँ ठाकुर.साहब को छोड़ आया था। छाया की भाँति पूर्ण निस्तब्धता से चलकर, वह उस जगह दो मिनट में पहुँच गया। किन्तु ठाकुर साहब वहाँ नहीं थे। धीरे से उसने आवाज़ लगाई, किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। बहुत दूर कहीं ऊसर में उड़ते हुए एक उल्लू की चीख़ के अतिरिक्त कोई आवाज़ किसी ओर से नहीं आई।

"अजीब बात है," वह मुनमुनाया और कई क्षणों तक विचारों में डूबा हुआ मूर्तिवत् खड़ा रहा। फिर खिड़की के समीप जाकर उसने अन्दर झाँका। आग के समीप उसी तरह बैठी हुई रजनी चुपचाप पढ़ रही थी। बनर्जी शायद अब भी मरुभूमि में भीगता-भागता घूम रहा है।

बाग़ का कोना-कोना उसने बड़ी सावधानी से खोज डाला, तमाम झाड़ियाँ भी देख डालीं, लेकिन ठाकुर साहब का पता नहीं लगा। उसने फिर धीरे-धीरे आवाज़ें लगाईं, किन्तु उत्तर में किसी ओर से कोई आवाज़ नहीं आई। दो-तीन बार अपने टार्च से उसने इधर-उधर रोशनी भी फेंकी, लेकिन कोई नतीजा नहीं हुआ।

इन्द्र खीझ उठा। उसे सन्देह हुआ कि ठाकुर साहब शायद अंधकार में उस तरह अकेले खड़े रहने का कष्ट सह नहीं सके। उनका साहस शायद जवाब दे गया। इसलिए वे रामेन्द्र-भवन लौट गये।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सम्भव है उस कष्टदायक वर्षा ही के कारण उनकी हिम्मत पस्त हो गई हो। अर्ध-रात्रि का समय आया ही चाहता था। आकाश के धुँधले परदे से जल धीरे-धीरे गिर रहा था। झाड़ियों और वृक्षों की छायाएँ ऐसी लग रही थीं मानो श्मशान में भूत इधर-उधर खड़े हुए पहरा दे रहे हों। भयानक सन्नाटा चारों ओर छाया था। इन्द्र को अपने मन में स्वीकार करना पड़ा कि वहाँ उस तरह देर तक खड़ा रहना कोई आसान काम नहीं है।

पानी में भीगता हुआ वहाँ वह कई मिनट तक और रुका रहा—इस आशा से कि शायद ठाकुर साहब का कुछ पता लग जाय। सहसा वह कानों पर ज़ोर देकर सुनने लगा। गली से भारी पद-ध्वनियाँ आने लगीं। वह तुरन्त ताड़ गया। सन्देह की कोई गुञ्जाइश नहीं रही। बनर्जी घर वापस आ रहा था। साव-धानी की उसे कोई आवश्यकता नहीं थी। अपने पैरों की आवाज़ को दाबने की आवश्यकता भी उसे अनुभव नहीं हो रही थी।

सीधे, विना इधर-उधर देखे हुए वह फाटक में घुसा और सुव्यवस्थित गति से बँगले की ओर बढ़ा। न जाने क्यों ऐसा प्रतीत होता था मानो सात फ़ुट लम्बा, तगड़ा वह मनुष्य संसार के सारे मनुष्यों को अपने सामने भुनगा समझता हो, हेच समझता हो।

सदर दरवाज़ा खोलकर इन्द्र मकान के भीतर चला गया। तब दबे-पाँव खिड़की के समीप जाकर वह सावधानी से अन्दर झाँकने लगा। उसके हृदय में अन्दर का दृश्य देखकर क्रोधाग्नि भड़क उठी। रजनी बनर्जी के बाहुपाश में प्रसन्नतापूर्वक, उत्सु-कतापूर्वक बँधी हुई थी। उसके हाथ बनर्जी के गले में पड़े हुए थे और वह उसके सूखे चमड़े-से ओठों का चुम्बन कर रही थी। वही थी वह रजनी जिसने केवल आध घंटे के अन्दर उसे पूर्ण-तया मोह लिया था, जिसे बिना किंचित्-मात्र दुविधा के उसने

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अपने हृदय-सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर दिया था और जिसे पूरी तरह अपनी बनाने के लिए वह बेचैन था, लालायित था! इन्द्र के हृदय को गहरा धक्का लगा।

बनर्जी मुस्करा रहा था और रजनी के केशों और कंधों पर हाथ फेर रहा था। इन्द्र को उसकी वह मुस्कान बड़ी बीभत्स, बड़ी अमानुषिक लगी। उस विकट चेहरे पर तो मुस्कान का व्यक्त होना ही अस्वाभाविक या अप्राकृतिक प्रतीत होता था।

खीझकर, तड़पकर, घृणा से आन्दोलित होकर, इन्द्र खिड़की से हट गया। उसे संतोष था कि ठाकुर साहब उस समय वहाँ उपस्थित नहीं थे। वहाँ अगर उस समय वे मौजूद होते तो ज़रूर कहते, "देख लिया न! क्या कहा था मैंने? कुछ याद है? ये वाक्य उसके दिल पर तीर की तरह चोट करते और उसका सिर उनके सामने शायद हमेशा के लिए झुक जाता।

अब उसे सावधानी की परवाह नहीं रह गई। वह तेज़ी से उस बँगले से निकल गया और गली में पहुँचकर रामेन्द्र-भवन की ओर चल पड़ा। मार्ग में जल भर गया था। उसके जूते छप-छप कर रहे थे। वह बिलकुल भीग गया था और बड़ा परेशान था। अपने आपसे भी वह अप्रसन्न था। अभी चंद घंटे पहले वह स्वप्नों के महल बना रहा था और रजनी को पाने के लिए अपने जीवन की बाज़ी लगा देने को तैयार था। किन्तु इस समय—इस समय उसके महल ढेर हो चुके थे, उसकी आशायें समाप्त हो चुकी थीं, उसका स्वाभिमान आहत हो गया था।

रास्ता काटे नहीं कट रहा था। रामेन्द्र-भवन तक पहुँचना कठिन हो गया। भीगे हुए कपड़े शरीर से चिपक गये थे। वर्षा अब भी हो रही थी। हवा के झोंके उसके ठिठुरे हुए शरीर में तीर की तरह लग रहे थे। उसका मन चाहता था कि वह उलटे पाँव रजनी-कुटीर जाय और उस शैतान बनर्जी का गला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

घोंट दे। किन्तु मन की इस प्रेरणा को वह दबा रहा था, क्योंकि वह जानता था कि क्षणिक आवेश अन्त में हानिकारक ही सिद्ध होता है।

रामेन्द्र-भवन के विशाल हाते में वह कुछ ही दूर घुसा था कि एकाएक सड़क पर पड़ी हुई किसी चीज़ से टकराकर वह गिर पड़ा। उसका एक घुटना बुरी तरह छिल गया।

तुरन्त उठकर वह घुटना सहलाने लगा। सहसा किसी के कराहने की आवाज़ आई। चौंककर टार्च जलाकर, घूमकर उसने देखा कि सड़क पर एक आदमी मुँह के बल पड़ा था। उसके हाथ-पैर बँधे हुए थे और उसके मुख पर एक रूमाल बँधा हुआ था। कीचड़ में उसके वस्त्र बिलकुल सन गये थे, किन्तु वे साफ़ बतला रहे थे कि वह व्यक्ति कौन है। इन्द्र तुरन्त पहचान गया। वे थे स्वयं ठाकुर साहब।

वे एक मज़बूत तार से ख़ूब कसकर बाँधे गये थे, इतना कसकर कि जहाँ-तहाँ उनके शरीर का चमड़ा छिल गया था और ख़ून रस रहा था। और उनके भेजे में एक गहरा घाव था। उस जगह की ज़मीन जहाँ उनका सिर टिका हुआ था रक्त से लाल हो गई थी।

इन्द्र की जेब में एक छोटी क़ैंची थी। उसी की सहायता से तार की फेरियों को खिसका-खिसकाकर उसने किसी तरह बंधन खोल डाले और तब ठाकुर साहब को अपनी पीठ पर लादकर वह तेज़ी से कोठी की ओर चला।

ठाकुर साहब बेहोश थे। तात्कालिक डाक्टरी सहायता पहुँचाई गई, लेकिन बेहोशी किसी तरह दूर नहीं हो सकी। सारी रात बेहोश रहे। वे कुछ भी बतला सकने के योग्य नहीं थे, इसलिए इस बात का कोई पता नहीं लग सका कि उनकी वैसी शोचनीय दशा कैसे हुई। टेलीफोन के द्वारा सूचना देकर निकट

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

के नगर से एक डाक्टर बुलाया गया। लेकिन प्रातःकाल से पहले उसके आने की आशा नहीं थी। कालूराम तथा कई अन्य सेवक रात भर ठाकुर साहब की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहे। उनके शयनागार के बाहर एक दरवान भरी बन्दूक़ लिये बराबर पहरा देता रहा।

इन्द्र बहुत थक गया था। ज़रा देर विश्राम करने के लिए वह अपने बिस्तरे पर लेट गया। उसकी पलकें स्वतः बन्द हो गईं। देखते-देखते वह गहन निद्रा में डूब गया।

छठा अध्याय

चेतावनी

अरुणोदय की लालिमा बादलों के घने परदे से रह-रहकर झाँकने लगी। कड़ाके की सर्दी थी। मौसम कुछ अच्छा हो गया था। वर्षा बन्द हो गई थी, लेकिन जल से भरे हुए बादल अब भी आकाश में उमड़ रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि बस बरसा ही चाहते हैं।

आठ बजे के क़रीब डाक्टर आया। कुछ देर बाद अरुणा का तार इस आशय का मिला कि दोपहर तक वह घर पहुँच जायेगी।

रोगी की परीक्षा कर चुकने के बाद डाक्टर ने गम्भीर भाव से सिर हिलाया। ठाकुर साहब की हालत नाज़ुक थी, इसमें सन्देह नहीं था। इन्द्र बराबर डाक्टर के साथ रहा। संक्षेप में और किंचित् सतर्कता से उसने पिछली रात का हाल कह सुनाया। डाक्टर चकित रह गया, विश्वास भी वह पूरी तरह नहीं कर पाया।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ख़ैर, जो हो," डाक्टर ने कहा, "और बातों से मुझे कोई मतलब नहीं है। लेकिन जब तक उन्हें होश न आजाय मैं कुछ नहीं कर सकता। तात्कालिक सहायता के कारण ज़ख़्म साफ़ है। उसमें कोई ख़राबी नहीं आ पाई है। कष्ट भी शायद उन्हें बहुत अधिक नहीं है। इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि आगे कोई नई पेचीदगी शायद पैदा न हो पायेगी। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि घाव गहरा है और उन्हें भारी चोट लगी है।"

"आपकी राय में वे कब तक बेहोश रहेंगे?" इन्द्र ने पूछा।

"ऐसे केस के बारे में निश्चित रूप से कुछ कह सकना असम्भव है। सम्भव है कि थोड़ी देर के बाद ही उन्हें होश आ जाय, और यह भी सम्भव है कि कई घंटों तक ही नहीं, कई दिनों तक बेहोश रहें। मेरी जानकारी में अनेक ऐसे केस आये हैं जिनमें मरीज़ बीस-बीस, पचीस-पचीस दिनों तक बेहोश पड़े रहे हैं। लेकिन इस केस और उन केसों में एक विशेष अंतर है, और वह यह है कि उन मरीज़ों के दिमाग़ को भी चोट पहुँची थी या उनके शरीर में पहले ही से पेचीदगियाँ मौजूद थीं। इस केस में वैसी कोई पेचीदगी मुझे नज़र नहीं आ रही है। कम-से-कम ठाकुर साहब के दिमाग़ में तो शायद गहरी चोट नहीं लगी है।"

सम्मतिसूचक भाव से इन्द्र ने सिर हिलाया।

"आप रुके तो रहेंगे?"

"अवश्य। ठाकुर साहब मेरे मित्र हैं। ज़रूरत होगी, तो मैं दिन भर रुका रहूँगा।"

ठाकुर साहब के शरीर से चद्दर हटाकर इन्द्र ने उनके हाथों पर दृष्टि डाली। गहरे लाल रंग के चकत्ते दोनों हाथों पर पड़े हुए थे और चमड़ा कहीं कहीं उधिड़ गया था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

डाक्टर कई क्षणों तक देखता ही रह गया।

"यह कैसे हुआ ?" उसने पूछा।

इन्द्र ने उसे उन रहस्यपूर्ण किरणों की करतूत का सारा हाल समझाया और अपने हाथ भी दिखलाये।

तब उसके साथ डाक्टर ने सारे मकान का चक्कर लगाया और उस विनाश-लीला के अवशेष दृश्य स्वयं अपनी आँखों से देखे। उसकी बुद्धि चकरा गई। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। तमाम कमरों के परदों, दरियों और क़ालीनों के रंग बिलकुल उड़ गये थे। मेज़ों, कुर्सियों, सिगारदानों और आलमारियों का पालिश ग़ायब हो गया था और ऐसा लग रहा था जैसे सैंड पेपर उन पर अच्छी तरह रगड़ा गया हो। रेशम और कुछ अन्य प्रकार के कपड़े बिलकुल नष्ट हो गये थे और छूते ही गिरकर राख हो जाते थे।

एक विशेष विचित्रता यह थी कि सारे दर्पण बिलकुल बेकार हो गये थे। उनमें लगा हुआ पारा बिलकुल उड़ गया था, केवल नीचे का लाल मसाला बच रहा था। धातु और शीशे के पात्रों को कोई हानि नहीं पहुँची थी। लेकिन समाचार-पत्र पीले पड़ गये थे, मानो वे वर्षों के रक्खे हुए हों।

"असाधारण—अद्भुत !" डाक्टर ने आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, "इस रहस्य के बारे में कोई राय क़ायम नहीं कर पा रहा हूँ। गहराई तक जाने की, देर तक ग़ौर करने की ज़रूरत है।"

डाक्टर गहन विचारों में खोया खड़ा रहा। इन्द्र कपड़े बदलने के लिए ऊपर चला गया।

दोपहर आया। किन्तु ठाकुर साहब की दशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इन्द्र ने विचार किया कि अब ठाकुर साहब के बजाय उसे ही उस नवयुवती का स्वागत करना पड़ेगा, जिसके साथ उसका विवाह कर देने का षड्यंत्र स्वयं उसके पिता और ठाकुर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

साहब बहुत पहले ही कर चुके थे। उसने अनुभव किया कि इस अवसर का स्वागत वह नहीं कर सकता। किन्तु यह भी उसे स्वीकार करना ही पड़ा कि इस बला से उसकी जान किसी तरह भी नहीं छूट सकती। कठिन समस्या थी।

दो वर्ष से अरुणा को उसने नहीं देखा था। दो वर्ष पहले वह कुछ अजीब-सी लगती थी। उसका शरीर सुगठित नहीं था और सामाजिक नियमों का भी शायद उसे यथेष्ट ज्ञान नहीं था। आत्म-विश्वास का शायद उसके अन्दर अभाव था। किन्तु उसे याद पड़ा कि उसके साथ उसने सदैव बड़ा अच्छा व्यवहार किया था। उसे वह बहुत मानती थी।

अब तो वह शायद सर्वथा दोषरहित, सुशिक्षित और सुसंस्कृत हो गई होगी। विद्या तथा संस्कृति के जिन महान् केन्द्रों में रहने का अवसर उसे मिला है उनकी विशेषताओं की छाप उसके अस्तित्व पर अवश्य पड़ी होगी। ठाकुर साहब तो उसकी योग्यताओं की सराहना मुक्त-कंठ से करते हैं। वे उसके पिता हैं और अतिशयोक्ति से काम ले सकते हैं, लेकिन यह समझ लेना तो शायद उचित न होगा कि उन्होंने बिलकुल बे-बुनियाद बातें कही हैं। ख़ैर, जो हो, उसका स्वागत तो उसे करना ही पड़ेगा और बेहतर होगा कि वह ऐसा हृदय से करे। गत रात्रि की घटनाओं के बाद ऐसा न करना अन्याय से कम न होगा।

अरुणा को लाने के लिए एक कार तारापूर गई हुई थी। वह कब वापस आयेगी? अरुणा का स्वागत कर सकने की मनः-स्थिति में अब वह पहुँच चुका था और समझने लगा था कि उस काम में अब उसे विशेष कठिनाई न होगी। ठाकुर साहब की बीमारी का हाल उसे सुनाते समय उसे कुछ संकोच, कुछ हिचक अनुभव होगी और फिर उसके मन में इत्मीनान आ जायेगा। दूर से किसी मोटर के हार्न की आवाज़ आई।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तुरन्त खिड़की के समीप जाकर वह देखने लगा। वही कार चली आ रही थी जो अरुणा को लाने के लिए गई थी। असबाव का एक बड़ा-सा ढेर भी उस कार पर लदा था।

कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुला। वह तुरन्त मुड़ा। सदैव की भाँति गाम्भीर्य धारण किये हुए कालूराम अदब से अन्दर आया और कुछ आगे बढ़कर रुक गया।

"एक महिला, जो अपना नाम मिस रजनी बनर्जी बतलाती हैं, आपसे मिलना चाहती हैं, हुज़ूर," कालूराम ने कहा, "पुस्तकालय में वे बैठी हुई हैं और बड़ी परेशान मालूम होती हैं। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं आपसे यह भी कह दूँ कि बहुत ज़रूरी काम है।"

इन्द्र कालूराम के भावहीन चेहरे की ओर एकटक देखता रह गया, मानो वह उसके कथन का आशय समझ पाने में असमर्थ हो रहा हो। बात वास्तव में यह थी कि वह दूर की बातें सोच रहा था।

"क्या कहा—क्या कहा तुमने ?" उसने पूछा।

वैसे ही निष्पक्ष भाव से कालूराम ने अपने उपर्युक्त वाक्य ज्यों के त्यों दोहरा दिये।

तब उस परिस्थिति की असम्भावना उसके मस्तिष्क में तेज़ी से दौड़ गई। उसके अगणित स्वप्नों में अभिनय करनेवाली वह लड़की, वह अनुपम सुन्दरी क्या सचमुच पुस्तकालय में उसकी प्रतीक्षा कर रही है ? किन्तु अब तो उसके हृदय में अंकित उसका चित्र धुँधला पड़ने लगा है और अरुणा आ रही है, बस पहुँचा ही चाहती है और उसका स्वागत करने जा रहा है। वह वही अरुणा है जिसके बारे में कुछ सोचना भी आज सबेरे तक उसे पसंद नहीं था। उसे क्या करना चाहिए ?

उसे केवल १० सेकंड में निश्चय कर लेना था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रजनी खुल्लमखुल्ला उससे मिलने आई है; कालूराम यह जानता है। अन्य सेवक भी इस बात की सूचना शायद अब तक पा चुके होंगे। अब यह बात कदाचित् ठाकुर साहब से किसी तरह छिपाई न जा सकेगी। होश में आ जाने के कुछ देर बाद ही शायद इसकी खबर उन्हें मिल जायेगी। इस अपमान को, इस अवज्ञा को वे कैसे बर्दाश्त कर लेंगे?

रजनी की कटु आलोचना उनके मुख से वह सुन चुका है। इसमें किंचित्-मात्र सन्देह नहीं कि रामेन्द्र-भवन में उसका आना उन्हें बहुत बुरा लगेगा। "वह क्यों आई है और विशेषतः ऐसे समय पर, जब अरुणा भी आ रही है!"

जितना ही वह विचार करता था उतनी ही उसकी खीझ बढ़ती जाती थी। या तो वह पूरी मूर्ख है या बेहद चालाक।

उसके बारे में ठाकुर साहब की जो सम्मति थी उससे वह अपरिचित नहीं थी। स्वयं उसी ने इस विषय की कितनी बातें उसे साफ़ साफ़ बतलाई थीं। फिर भी, वह उससे मिलने के लिए वहाँ आई है।

अवश्य ही उसके आने का कोई बड़ा कारण होगा।

सम्भव है, ठाकुर साहब के ऊपर किये जानेवाले आक्रमण के सम्बन्ध में भी वह कुछ जानती हो। उस रहस्य का भेद किसी न किसी को तो अवश्य ही मालूम होगा। उस काण्ड के लिए भी, सम्भव है बनर्जी ही उत्तरदायी हो। बनर्जी से उसका निकट सम्पर्क रहता है। इसलिए यह असम्भव नहीं कि उस दुःखद घटना के भेद से वह परिचित हो।

ऐसी दशा में रजनी से उसे अवश्य भेंट करनी चाहिए। यही उचित होगा। यह ठीक न होगा कि अरुणा से उसकी भेंट हो। सम्भव है कि उससे उसे जो सूचनायें मिलें उनसे अरुणा को सारी बातें अच्छी तरह समझाने में सहायता मिले।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इस तरह तर्क कर चुकने के बाद इन्द्र ने रजनी से मिलने का निश्चय कर लिया।

"ठीक है, कालूराम," उसने कहा, "मैं उनसे भेंट करूँगा। मिस अरुणा अब पहुँचा ही चाहती हैं। उनसे कह देना कि मैं एक व्यक्ति से भेंट कर रहा हूँ और छुट्टी पाते ही उनसे मिलूँगा। कृपया नाम न बतलाना। और देखो, इस मामले का ज़िक्र ठाकुर साहब से न करना, कम से कम दो-एक दिन तक तो हर्गिज़ न करना।"

"बहुत अच्छा हुज़ूर।" कालूराम चला गया।

ज्यों ही अरुणा की कार पोर्टिको में रुकी, इन्द्र ने पुस्तकालय में प्रवेश किया। रजनी उठ खड़ी हुई। इन्द्र ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। तेज़ी से उसने रजनी की ओर देखा। इन्द्र को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि रजनी में अकस्मात् बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। स्वाभाविक प्रसन्नता और विनोद की चमक उसकी आँखों से ग़ायब हो गई थी। उनमें विकलता और भय के भाव व्यक्त थे। चेहरा सफ़ेद हो गया था, कपोलों की लालिमा अदृश्य हो गई थी। वह बहुत थकी हुई-सी दिखाई दे रही थी। उसके जूतों पर गीली मिट्टी जमी हुई थी। इससे स्पष्ट था कि वह इतनी दूर कीचड़ में पैदल चलकर आई है।

"कहिए?" इन्द्र ने कहा।

इच्छानुसार वह पूर्ण अन्यमनस्कता का भाव धारण कर सकता था। उसके उस एक शब्द में अगाध उदासीनता भरी थी।

रजनी तेज़ी से उसके सामने जाकर खड़ी हो गई। ऊपर उठे हुए उसके चेहरे में घबराहट का, बेचैनी का भाव भरा था।

"इन्द्र!" विकल स्वर में उसने कहा, "यहाँ इस तरह आने के लिए मुझे माफ़ करो। मैं अपनी उपस्थिति से इस घर को अप-

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वित्र करने का दुस्साहस न करती, अगर परिस्थितियाँ मुझे विवश न कर देतीं, पर—"

"अधिक शिष्टाचार की आवश्यकता नहीं," इन्द्र ने कहा। "अब तो आ ही गई हो, इसलिए इसके बारे में कुछ कहना-सुनना व्यर्थ है। हाँ, यह मैं ज़रूर जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे यहाँ आने का कारण क्या है?"

रजनी का चेहरा और भी उतर गया। उसे दुःख पहुँचा इन्द्र के बात करने के इस ढंग से। उसने उसकी ओर विवशता की दृष्टि से देखा और फिर वह अपने विचारों को अपने वश में करने का प्रयत्न करने लगी।

"यहाँ क्यों आई हो?" छुरियाँ छिपी थीं इन्द्र के इन शब्दों में।

"तुम्हें चेतावनी देने आई हूँ," विकल स्वर में रजनी ने उत्तर दिया।

"धन्यवाद—अनेक धन्यवाद! लेकिन तुम्हारे उत्तर से बात साफ़ नहीं हुई। ठीक कहता हूँ न?"

"यहाँ से चले जाओ—तुरन्त चले जाओ। तुम्हारी ज़िन्दगी ख़तरे में है। तुमसे अनुरोध करती हूँ, विनय करती हूँ, हाथ जोड़-कर विनय करती हूँ—कृपा करके यहाँ से चले जाओ। जिस तरह हो उसी तरह इसी समय चले जाओ, सामान साथ में ले जाने के चक्कर में न पड़ो।" ये शब्द उसके मुख से अत्यधिक तेज़ी से निकले। व्यग्रता के आधिक्य के कारण उसके वे सुन्दर ओठ काँप रहे थे और वह अपना रूमाल अपनी उँगलियों पर लपेट रही थी।

"वाह! ख़ूब! अच्छा, अब कृपा करके यह बतलाओ कि तुम्हारी इस असाधारण धृष्टता का वास्तविक अर्थ क्या है?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"नहीं, नहीं। मैं कुछ बतला नहीं सकती। मैं केवल इतना ही कर सकती हूँ कि तुमसे फिर फिर अनुरोध करूँ कि रामेन्द्र-भवन से, श्रीगंज से तुरन्त विदा हो जाओ। घर मत जाओ, उन स्थानों के निकट भी न जाओ जहाँ जाया करते हो। किसी ऐसी जगह चले जाओ जहाँ तुम्हारे मित्र भी तुम्हारा पता न पा सकें। कृपया मेरी बात पर विश्वास करो, मैं यह बिलकुल सत्य कह रही हूँ कि तुम भयानक ख़तरे के समीप खड़े हो।"

"ख़तरा तो हर समय मनुष्य के पीछे लगा रहता है। चलना-फिरना भी ख़तरनाक है, उठना-बैठना भी ख़तरनाक है।"

"दिल्लगी करने से काम न चलेगा, इन्द्र! यह ख़तरा कोई मामूली ख़तरा नहीं है। चारों ओर से यह तुम्हें घेर रहा है। अभी समय है, बच निकलो, नहीं तो आगे कोई शक्ति तुम्हारी रक्षा न कर सकेगी। न मानोगे मेरा कहना, न मानोगे?"

"रजनी!" दृढ़तापूर्ण स्वर में इन्द्र ने कहा, "कोई ख़तरा ऐसा नहीं है, जिसका वर्णन न किया जा सके। अगर तुम बतला दो कि वह क्या है, तो कम-से-कम उसके बारे में तुमसे बहस तो मैं ज़रूर ही करूँगा। लेकिन अगर तुम इसी तरह पहेलियाँ बुझाती रहोगी, तो विवश होकर मुझे तुमसे अनुरोध करना पड़ेगा कि यहाँ से बिदा हो जाओ। यह बात तुमसे छिपी नहीं है कि तुम्हारे ऊपर भी सन्देह किया जाना अनिवार्य है।"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात—"

"मैं बिलकुल ठीक कहता हूँ। क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि ठाकुर साहब इस समय बहुत सख़्त बीमार हैं?"

"हाँ, जानती हूँ।"

"अभी तक वे बेहोश हैं। कल रात को उनके ऊपर घातक आक्रमण किया गया था।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"हाँ......हाँ......उसी के बारे में तो तुमसे भेंट करने आई हूँ।"

"अभी तक यह मालूम नहीं हो सका कि यह खेदजनक घटना कैसे घटी। बिलकुल रहस्य बनी हुई है यह घटना, और इसके बारे में किसी बात का भी पता नहीं लग सका है। सिर्फ़ इतना मालूम हो सका है कि अर्ध-रात्रि के समय वे अपने ही घर के हाते में अध-मरे पड़े पाये गये। उनके हाथ-पैर बँधे हुए थे और उनके मुख में कपड़ा ठूँसा हुआ था। वे दम तोड़ रहे थे। यह सब मैं जानता हूँ क्योंकि मैंने ही उन्हें उस समय उस दशा में पाया था।

"इसके डेढ़ घंटे पहले वे तुम्हारी खिड़की के बाहर अन्तिम बार देखे गये थे। यह भी मैं जानता हूँ, क्योंकि उस समय वहाँ मैं भी उनके साथ था। आग के पास एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई तुम पढ़ रही थीं। ये ही वस्त्र जो तुम इस समय पहने हो उस समय भी तुम्हारे शरीर पर थे। हाँ, जूतों में फ़र्क़ ज़रूर है। उस समय तुम भूरे रंग के जूते पहने थीं, इस समय काले रंग के पहने हो। यह सब ठीक है न? और अब तुम विचित्र-विचित्र ढङ्ग की चेतावनियाँ लेकर आई हो और चाहती हो कि अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए मैं यहाँ से तुरन्त भाग जाऊँ। ऊपर से यह भी कहती हो कि तुम्हारे ऊपर सन्देह नहीं किया जा सकता!"

भय से आँखें फाड़कर रजनी उसकी ओर देखती रही।

"इन्द्र! क्या तुम यह समझते हो कि मैंने ही ठाकुर साहब को ज़ख़्मी किया था?"

"नहीं। और मैं यह भी नहीं समझता कि इस काण्ड में तुम्हारा ज़रा भी हाथ था। लेकिन मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि तुम्हारी हरकतें ऐसी रही हैं कि एक मामूली, अनपढ़ कांस्टे-

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बिल भी अगर सन्देह पर तुम्हें गिरफ़्तार कर ले तो उसे बुरा नहीं कहा जा सकता। और इस आधार पर भी वह तुम्हें गिरफ़्तार कर सकता है कि इस मामले के बारे में तुम बहुतेरी बातें जानती हो लेकिन उन्हें बताना नहीं चाहतीं। एक ईमानदार स्त्री की हैसियत से इस समय तो तुम्हारा एक ही कर्त्तव्य है, और वह यह है कि तुम सारी बातें साफ़ साफ़ बतला दो, कोई बात ज़रा भी न छिपाओ।"

रजनी ने असीम विवशता से उस बड़े कमरे में दृष्टि दौड़ाई। उसे ऐसी आशा नहीं थी कि इन्द्र उसके साथ वैसा रूखा व्यवहार करेगा। उसके ऊपर वह अपना रोब जमा रहा था, और उसे धीरे-धीरे उस जाल की ओर ढकेल रहा था जिसकी रचना स्वयं रजनी ने ही की थी। उसे अनुभव हो रहा था कि ज़मीन उसके पैरों के नीच से खिसकी जा रही है, वह डूबी जा रही है।

उसके प्रति इन्द्र के भावों के इस आकस्मिक परिवर्तन ने उसे बिलकुल चकरा दिया था। उसकी आँखों में आहत जानवर की आँखों का-सा भाव था और वह अपने रूमाल को टुकड़े-टुकड़े किये डाल रही थी। उसके लिए सबसे अधिक कष्टदायक यह सूचना थी कि रजनी-कुटीर के हाते में ठाकुर साहब के साथ इन्द्र भी मौजूद था।

इन्द्र कहता ही गया—"और सुनो। पिछली रात को इस घर को बर्बाद कर देने की कोशिश की गई थी। यह शानदार भवन हर्गिज़ न बचता, अगर मुझे विज्ञान का कुछ थोड़ा-सा ज्ञान न होता। जो ढङ्ग काम में लाया गया था वह इतना विचित्र और नवीन था कि मेरे लिए उसका वर्णन कर सकना भी असम्भव है। उसके विषय में मैं स्वयं बहुत कम जान पाया हूँ। जिन सिद्धान्तों से लाभ उठाया गया था उनका मुझे बहुत कुछ आभास मिल सका है। किन्तु वह विनाशकारी प्रयत्न विशेषकर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इस कारण असफल हुआ कि मैं फ़्यूज़ों को बेकार कर देने में सफल हुआ।

"कुछ मिनट के बाद एक जला हुआ तार इस घर से रजनी-कुटीर तक जुड़ा हुआ पाया गया। वह तार इधर इस घर के बिजली के तारों से जोड़ दिया गया था और उधर रजनी-कुटीर के एक शागिर्दपेशे के अन्दर ले जाया गया था।"

इस प्रकार उसके विरुद्ध एक के बाद एक प्रमाण देते हुए वह ग़ौर से उसे देखता जाता था। रजनी की आँखों में अत्यधिक भय व्यक्त था—उस प्रकार का भय जो उस पशु की आँखों में दृष्टिगोचर होता है जो चारों ओर से घिर गया हो और जिसे बच निकलने का कोई मार्ग न मिल रहा हो।

"रजनी !" इन्द्र ने आगे कहा, "मैं तुम्हारे साथ पूरी सफ़ाई से पेश आ रहा हूँ। जो कुछ मैं जानता हूँ उसका थोड़ा-सा अंश मैंने तुम्हें सुनाया है—बहुत थोड़ा अंश। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं बहुत-कुछ जानता हूँ और वह सब मैंने पुलिस के लिए रख छोड़ा है।"

रजनी के ओठों से एक चीख़ तेज़ी से निकल गई।

"पुलिस ! नहीं, नहीं, इन्द्र, ऐसा मत करो, इस मामले को पुलिस के हाथ में मत दो !"

"ख़ुफ़िया-विभागवालों को इस मामले का संक्षिप्त विवरण मिल चुका है," इन्द्र ने कठोर स्वर में कहा। "आज सबेरे उस विभाग के सबसे बड़े अफ़सर से मैंने टेलीफोन पर देर तक बात की थी। सदर से एक जासूस एक तेज़ मोटर पर सवार होकर रवाना हो चुका है और दो घंटे के अन्दर यहाँ पहुँच जायेगा।

"अगर तुम दोषी नहीं हो तो पुलिस की तहक़ीक़ात के विचार से घबराती क्यों हो ? अपनी स्थिति समझ रही हो न ?

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अगर मैं कुछ न बतलाऊँ तब भी वह जासूस उस जले हुए तार का पता तुरन्त लगा लेगा और आध घंटे के अन्दर ही तुम्हारा दरवाज़ा खटखटाता नज़र आयेगा। ऐसी दशा में उचित यह है कि तुम सफ़ाई से काम लो और जो कुछ जानती हो मुझे बतला दो।"

रजनी ने उसकी ओर विनयपूर्ण दृष्टि से देखा।

"मेरे ऊपर विश्वास करो इन्द्र, कृपया विश्वास करो। जो कुछ जानती हूँ वह अपने लिए मैं नहीं छिपा रही हूँ। यहाँ आकर मैंने तुम्हारे लिए अपनी जान ख़तरे में डाली है। मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि जिन बातों का तुमने पता लगाया है उनके लिए मैं ज़िम्मेदार नहीं हूँ। तुम्हें केवल चेतावनी देने के लिए मैं यहाँ आई हूँ। मेहरबानी करके मुझसे फ़िज़ूल जिरह न करो। जो कुछ तुम जानना चाहते हो वह मैं तुम्हें नहीं बतला सकती। तुमसे मैं सिर्फ़ इतना ही चाहती हूँ कि यहाँ से चले जाओ, तुरन्त चले जाओ और यहाँ की सारी बातें भूल जाओ, मुझे भी भूल जाओ।"

"क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम मुझे क्यों चेतावनी देने आई हो?"

रजनी की आँखों से आँसू जारी थे, मानो कुसुमों की पँखुड़ियों से तुहिन-विन्दु ढुलक रहे हों।

"इसका केवल एक कारण है, और वह यह है कि तुमने मेरे साथ शालीनता का व्यवहार किया था; मुझे देखते ही मुझसे मित्रता जोड़ ली थी। और, ईश्वर साक्षी है, इस जंगली स्थान में एक सहृदय मित्र पा जाना मुझे बड़ा प्रिय लगा था। मैंने सोचा था कि मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया है जो मेरे ऊपर विश्वास कर सकेगा। लेकिन, खेद है, तुम भी बदल गये हो। आज तुम भी मेरे साथ वैसा ही रूखा व्यवहार कर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रहे हो जैसा यहाँ के लोग मेरे साथ एक मुद्दत से करते आ रहे हैं। फिर भी मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे बारे में जब सोचूँ तब तुम्हारे उसी रूप की कल्पना करूँ जो कल देखने को मिला था—वही रूप जो कृपा का सूचक था, सहानुभूति का सूचक था, समझदारी से भरा था। और मैं चाहती हूँ कि इस स्थान से चले जाओ—इस शापग्रस्त स्थान से जितनी दूर जा सको, चले जाओ।"

उसके कन्धे पकड़कर इन्द्र ने उसे कुर्सी पर बैठा दिया।

"अब यह अच्छा होगा" शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में इन्द्र ने कहा, "कि हमारी यह बहस किसी तरह समाप्त हो जाय। समय बीता जा रहा है—ऐसा मूल्यवान् समय जिसके बीत जाने का पछतावा शायद तुम्हें जीवन भर रहेगा। मैं यह नहीं चाहता कि तुम मुझे जानवर समझो या अन्यायी समझो। लेकिन इस रहस्य का पता तो मैं लगाकर ही छोड़ूँगा। अब मैं तुम्हें एक अन्तिम अवसर देता हूँ। थोड़ा-सा विचार करने पर तुम्हें पता लग जायेगा कि अपने लिए तुम कैसी बुरी स्थिति पैदा कर रही हो। कल रात को क़रीब दस बजे ठाकुर साहब के साथ मैं रजनी-कुटीर के सामने पहुँचा।"

भयभीत दृष्टि से रजनी ने उसकी ओर देखा।

"अच्छा?"

"रास्ते भर बनर्जी हमारे आगे-आगे चल रहा था।"

वह सहम गई। किन्तु इन्द्र ने यह ज़ाहिर किया कि उसका ध्यान इस बात की ओर नहीं गया।

"धीरे-धीरे मैं घर के पीछे की ओर जा रहा था कि मैंने एक हलकी-सी आवाज़ सुनी। शायद किसी के सिर पर आघात किये जाने और किसी के धीरे से गिरने की वह आवाज़ थी। मैं यह नहीं कहता कि बात सचमुच यही थी, लेकिन मुझे लगा ऐसा ही था। आध घंटे के बाद मैं फिर मकान के सामने पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ठाकुर साहब का कहीं पता नहीं था। धुएँ की तरह वे ग़ायब हो गये थे। आध घंटे तक मैं खोज करता रहा। तमाम झाड़ियाँ मैंने देख डालीं, बाग़ का कोना-कोना खोज डाला पर ठाकुर साहब नहीं मिले। वहाँ से मैं विदा होने जा रहा था कि मुझे गली में किसी के चलने की आहट मिली। बनर्जी मकान वापस आ रहा था।

"एक घंटा बीत चुका था, उस समय से एक घंटा जब मैंने किसी के गिरने की आवाज़ सुनी थी। रजनी-कुटीर से रामेन्द्र भवन तक जाने-आने के लिए एक घंटा बहुत काफ़ी था। एक ऐसे-व्यक्ति के लिए, जो श्रीगंज की एक-एक इंच भूमि से अच्छी तरह परिचित हो, इतना समय तो अवश्य ही काफ़ी है। ठीक है न? अब अगर मैं उस जासूस को सलाह दूँ कि वह बनर्जी को तुरन्त गिरफ़्तार कर ले, तो मेरा ख़याल है कि ठाकुर साहब के ऊपर किये जानेवाले घातक आक्रमण का रहस्य तो अवश्य ही खुल जायेगा। तुम्हारा क्या ख़याल है?"

रजनी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बिलकुल पस्त हो गई थी। मेज़ पर हाथ टेके हुए और हाथों में मुख छिपाये हुए, वह असीम विवशता से सिसक रही थी। दुःख का जो तूफ़ान उसके मन में उठा हुआ था वह आँसुओं के द्वारा बाहर निकल रहा था।

इन्द्र ने बड़ी कोमलता से उसे स्पर्श किया।

"क्या अब भी नहीं बताओगी?" विनम्र स्वर में उसने पूछा। "तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि अब तुम अधिकारियों से सच्ची बातें अधिक समय तक नहीं छिपा सकोगी। और अपनी इस चुप्पी से तुम अपने लिए विपत्ति का एक पहाड़ खड़ा कर रही हो। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो, कम से कम घातक आक्रमणवाले मामले में तो तुम ज़रूर ही निर्दोष हो। एक व्यक्ति को बचाने की तुम कोशिश कर रही हो।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वह व्यक्ति बनर्जी है; पर सन्देह से भी उसकी रक्षा तुम नहीं कर सकीं। उसका अपराध उसी तरह स्पष्ट है जिस तरह तुम्हारी भावुकता। तुम हार चुकी हो, अब ज़िद से कोई लाभ नहीं।"

सिसकियाँ जारी रहीं। वह कुछ बोल नहीं सकी।

अब इन्द्र ने अपना आख़िरी वार करने का निश्चय किया।

"रजनी! मैंने यहाँ बहुतेरी ऐसी बातें देखी हैं जिन पर आसानी से विश्वास नहीं किया जा सकता। एक दिन मैंने देखा कि आसमान में उड़ती हुई एक मुर्ग़ाबी एकाएक बिना किसी स्पष्ट कारण के मरकर गिर पड़ी। गिरते समय उसके परों और मांस की धज्जियाँ उड़ी जा रही थीं। फिर एक दिन मैंने देखा कि तेज़ी से दौड़ता हुआ एक ख़रगोश अकस्मात् मरकर ढेर हो गया।

"मैंने देखी है मरुभूमि के आर-पार खिंची हुई मृत्यु की एक भयानक रेखा—वह रेखा जिसने भूमि के उस भाग को ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था जिस पर वह खिंची हुई थी। अब से प्रलयकाल तक उस रेखा पर कभी कोई चीज़ न उगेगी। उसने तो उसके प्राण ही हर लिये, उसका वह जीवन-रस ही नष्ट कर दिया जिस पर पेड़-पौदे पनपते हैं।

"बिजली के तारों के द्वारा फेंकी गई एक नीली किरण के प्रभाव से अपने हाथों का चमड़ा उधड़ते मैंने इन्हीं आँखों से देखा है। और मैं यह भी जानता हूँ कि ये सब बातें केवल बाहरी हैं, साधारण प्रयोग-मात्र हैं और इनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण तथा भयानक घटनायें घटने को हैं।

"उन विनाशकारी घटनाओं की तैयारियाँ जारी हैं। धीरे-धीरे किन्तु निश्चयपूर्वक उनसे सम्बन्ध रखनेवाली योजनायें उस मनुष्य-रूपी राक्षस बनर्जी के मस्तिष्क में पक्की हो रही हैं। उस राक्षस की रक्षा करने के प्रयास से तुम्हारी स्थिति भी नाज़ुक हुई

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

जा रही है। अपनी इस स्थिति पर तुम अब देर तक जमी नहीं रह सकतीं।

"अपनी योजनायें पूरी कर सकने का अवसर बनर्जी को अब हर्गिज़ नहीं मिलेगा। आज की रात बीतते-बीतते जासूस उसकी हुलिया तंग कर देंगे। हम जानते हैं कि उसकी तलाश हमें कहाँ करनी चाहिए। उधर ऊसर में हम उसकी खोज करेंगे जहाँ हरी किरणें झलमलाया करती हैं। सैकड़ों आदमी मैदान में फैल जायँगे, और उसके इंच-इंच पर उस समय तक कड़ी नज़र रक्खेंगे जब तक बनर्जी को उसकी ही माँद में गिरफ़्तार न कर लेंगे। समझदारी से काम लो रजनी, और सच्ची बातें साफ़-साफ़ बतला दो। ऐसे भयंकर मामले में आगा-पीछा करने से काम नहीं चल सकता। दो पक्ष तुम्हारे सामने हैं—एक क़ानून और दूसरा बनर्जी। बोलो, रजनी, किसका साथ दोगी ? बोलो, निश्चय करो।"

सातवाँ अध्याय

टंडन आया

रजनी धीरे धीरे उठ बैठी। वह अपने को क़ाबू में करने का प्रयत्न कर रही थी, लेकिन आँसू उसकी आँखों से जारी थे। इन्द्र की विकट दृढ़ता के सामने रजनी के हठ को अन्त में झुकना ही पड़ा। उस जाल के भयानक चित्र ने उसे पूर्णतया परास्त कर दिया जिसकी रचना उसने उसके सामने असाधारण कुशलता से की थी।

"मैं……मैं बतला दूँगी," विवश होकर उसने कहा। "जितना बता सकती हूँ उतना तुम्हें बतला दूँगी। बनर्जी मुझे जीता न

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

छोड़ेगा, अगर उसे यह मालूम हो जायेगा कि मैं यहाँ आई हूँ। मुझे मार डालने में उसे उसी तरह संकोच न होगा जिस तरह तुम्हें ख़त्म कर देने में न होगा।"

सहमतिसूचक भाव से इन्द्र ने सिर हिलाया।

"तो स्वयं बनर्जी ही वह ख़तरा है जिससे बचने की सलाह तुम मुझे दे रही हो ? सचमुच बड़ा भयानक है वह ख़तरा !"

"हाँ, सचमुच ख़तरा स्वयं वही है। लेकिन तुम फिर मेरी दिल्लगी उड़ा रहे हो। तुम्हें उसकी शक्ति का ज्ञान नहीं है। बड़ी भयानक है उसकी शक्ति। बाज़ वक़्त मैं सोचती हूँ कि पागल हो जाऊँगी। मेरे चित्त पर जो भयंकर दबाव पड़ रहा है उसे मैं अधिक दिनों तक सह नहीं सकती। कल रात को उसने क़सम खाकर कहा था कि अब वह तुम्हारे ऊपर प्रयोग करेगा।"

"बड़ा अच्छा विचार है !"

"कल रात को उसकी योजना में कुछ गड़बड़ी पैदा हो गई थी। उसने सोचा कि वह ठाकुर साहब की करतूत है। बाद में जब वह वापस आया तो उसने देखा कि उसकी एक मशीन बिल-कुल टूटी-फूटी पड़ी है। उस मशीन को तैयार करने में उसने पाँच वर्ष लगाये थे। उस मशीन से एक ऐसी शक्ति पैदा होती है जो बिजली ही की तरह एक तार के द्वारा जहाँ जी चाहे भेजी जा सकती है। विज्ञान-जगत् में यह एक बिलकुल नया आविष्कार है—बहुत बड़ी सफलता है।

"किन्तु वह मशीन उसके आविष्कारों में से केवल एक ही है। अन्य मशीनें उससे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, कहीं अधिक भयंकर हैं। इन सबके मुक़ाबिले में तो वह केवल एक खिलौना थी। तुमने उसे तोड़ डाला। उसकी शोचनीय दशा देखकर वह क़रीब-क़रीब पागल हो गया। वह जान गया कि यह तुम्हारा ही काम है। ठाकुर साहब के सामर्थ्य के वह बाहर था। उसका क्रोध

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

देखकर मैं तो काँप उठी। मेरा ख़याल है कि उस समय अगर वह कहीं तुम्हें पकड़ पाता तो तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालता। इसी लिए मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा। उसकी पैशाचिक शक्ति का अभी तुम आभास भी नहीं पा सके हो। तुम्हारे निकट आये विना, मीलों की दूरी से ही वह तुम्हारी हत्या कर सकता है।"

"धन्यवाद," इन्द्र ने अन्यमनस्क भाव से कहा। "और क्या कहना है तुम्हें?"

"उसकी खोज मत करो—कृपया उसकी खोज मत करो। उसकी तलाश में रजनी कुटीर आना बेकार है। वह चला गया। कल रात को ही शागिर्दपेशे से लौटने के बाद ही क्रोध से उन्मत्त होकर वह चला गया। जाने से पहले उसने कहा कि अब वह कभी वापस न आयेगा। हमेशा के लिए वह चला गया। अब आगे क्या होगा इसकी कल्पना करने का भी मुझे साहस नहीं हो रहा है।"

"लेकिन मैं तो कल्पना कर सकता हूँ," विकट दृढ़ता से इन्द्र ने कहा। "हम मरुभूमि की एक एक इंच ज़मीन छान डालेंगे। उस समय तक हम वहाँ बराबर डटे रहेंगे जब तक उसे ढूँढ़ निकालने में सफल न होंगे।"

"इन्द्र! तुमसे बिलकुल सच कह रही हूँ, सफल न हो सकोगे। तुम्हें भी वह उसी तरह आसानी से फाँस लेगा जिस तरह औरों को फाँस चुका है। मरु-भूमि में जो कुछ हो रहा है या जो कुछ हो चुका है उस सबके लिए वह ज़िम्मेदार है। सैकड़ों नहीं तुम हज़ारों आदमी उसकी तलाश करने के लिए भेजो, लेकिन यह निश्चित समझो कि तुम उन्हें मृत्यु के मुख में भेज रहे हो। ऐसा करना उनकी हत्या करने के बराबर होगा, क्योंकि इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि वे वहाँ से किसी तरह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वापस नहीं आ सकेंगे। यह भी तुम नहीं जान पाओगे कि वे कैसे मरे कहाँ लोप हो गये।"

"बस इतना ही तुम्हें कहना था ?"

"हाँ, बहुत ज़्यादा बतला चुकी हूँ। आगे कुछ कहने का साहस अब मुझमें नहीं है।"

"बनर्जी मरु-भूमि में कहाँ छिपता है ?"

"यह मैं नहीं जानती," धीरे से उसने उत्तर दिया। इन्द्र समझ गया कि वह सच्ची बात छिपा रही है।

"अगर मैं इस ज़िले का एक नक़शा ले आऊँ, तो क्या तुम उसमें उसके छिपने का स्थान दिखा सकोगी ?"

विवशता और भय के भाव फिर रजनी के चेहरे पर प्रकट हो गये और उसकी आँखें फिर कुछ खोजती-सी कमरे में इधर-उधर दौड़ने लगीं। ज़रा देर के बाद लड़खड़ाते हुए स्वर में उसने कहा—हाँ...शायद दिखा सकूँगी।

"बस एक सवाल मैं और करना चाहता हूँ। बनर्जी को बचाने की कोशिश तुम क्यों कर रही हो ?"

वह काँप उठी और मुख मोड़कर दूसरी ओर देखने लगी।

"कोई न कोई कारण तो अवश्य होगा रजनी ?" कोमल स्वर में इन्द्र ने कहा। "मैं समझता हूँ कि वह कारण प्रेम नहीं हो सकता। बनर्जी पागल है। श्रीगंज का प्रत्येक निवासी यह बात जानता है और तुम भी इससे अपरिचित नहीं हो सकतीं। वह पूरा पागल है और उसके उन्माद-पीड़ित मस्तिष्क में न जाने कैसे-कैसे विचार चक्कर काट रहे हैं। फिर भी तुम उसकी रक्षा करने पर तुली हो। तुम इस तरह बातें करती हो जैसे उसका पक्ष न्याय का है और हमारा अन्याय का। ऐसा तुम क्यों करती हो ? इसका वास्तविक कारण क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रजनी कई क्षणों तक निस्तब्ध, मूर्तिवत् बैठी रही। तब एक-दो बार उसकी ओर देखकर उसने कहा—इस प्रश्न पर विचार करने के लिए मुझे कुछ समय की आवश्यकता है इन्द्र! कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर विचार करना बहुत ज़रूरी है और उचित यह होगा कि मैं उन पर एकान्त में शान्तिपूर्वक विचार करूँ।

"अच्छी बात है, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं नक़शा लेने जाता हूँ, तब तक तुम विचार कर लो।"

मुड़कर वह दरवाज़े की ओर चला, रुका, और जैसे कुछ और कहने के लिए मुड़ा। लेकिन उसका विचार बदल गया। तब बिना कुछ कहे ही वह धीरे से कमरे के बाहर चला गया। ज्यों ही दरवाज़ा खुला एक व्यक्ति जो कुंजी के सूराख़ से अन्दर झाँक रहा था उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

"अरे, टंडन! ख़ूब आये भाई! कब आये?"

"चला ही आ रहा हूँ। तीन घंटे हुए सदर ने मुझे टेलीफ़ोन किया। रोशनपुर में एक मामूली से मामले की जाँच कर रहा था। चीफ़ ने स्वयं मुझसे बातें कीं। वे बड़े जोश में थे। इस मामले की तुमसे सुनी हुई बातें बतला कर उन्होंने मुझे यहाँ आने का आदेश दिया। तब कार पर सवार होकर मैं तुरन्त चल पड़ा।"

हाथ में हाथ देकर इन्द्र उसे हाल की ओर ले गया।

"ज़ोर से बातें मत करो यार", उसने कहा। "तुम्हें यहाँ पाकर मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है। यह मामला बड़ा विचित्र और जटिल है। मेरा ख़याल है कि ऐसा मामला कभी पहले तुम लोगों के सामने न आया होगा। सारी बातें जान लेने के बाद तुम्हें भी मुझसे सहमत होना पड़ेगा। शैतानी हथकंडों की जैसी रचना यहाँ हो रही है वैसी शायद कभी कहीं न हुई होगी।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

टंडन एकटक देखता रहा। वह औसत क़द का एक बलिष्ठ युवक था, सूट पहनता था, हैट लगाता था। उसके वस्त्रों से तम्बाकू की तेज़ गन्ध निकलती थी। चेहरे, चाल-ढाल और वस्त्रों से रोब टपकता था। चुस्ती उसकी रग-रग में भरी थी।

हर व्यक्ति को वह घूरकर देखता था और उसका इस तरह देखना कभी-कभी असभ्यता के निकट पहुँच जाता था। उसके मतानुसार केवल दो प्रकार के लोग संसार में बसते हैं—सज्जन और बदमाश। सज्जनों से उसे कोई मतलब नहीं था, लेकिन बदमाशों की निगरानी करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझता था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं, जिनमें मुस्कान बड़ी कठिनाई से कभी व्यक्त हो पाती थी। सिर कुछ गंजा हो चला था, मूँछें छोटी-छोटी थीं और आवाज़ बड़ी तेज़ और सख़्त थी।

"लंच का समय आ रहा है," इन्द्र ने कहा। "उस समय तुम्हें सारा क़िस्सा सुनाऊँगा। जिन बातों का पता लगा सका हूँ वह सब भी तुम्हें बता दूँगा। शायद तुम्हें सदर से सहायता माँगने की ज़रूरत पड़ेगी।"

"काम में तो शायद तुम भी लगे हो," टंडन ने कहा।

"तुम्हारा मतलब उस लड़की से है?"

"हाँ। जो कुछ तुमने उससे कहा था वह सब मैंने सुन लिया। जान पड़ता है, इस मामले का तुम्हें अच्छा ज्ञान है। और तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो कि कहाँ किस बात का पता लग सकता है। वह तुम्हारी पकड़ में कैसे आगई? उससे हमें काफ़ी सहायता मिल सकती है। लेकिन उसे भाग निकलने का मौक़ा देकर तुमने अच्छा नहीं किया।"

चकित होकर विचित्र ढङ्ग से इन्द्र उस जासूस के चेहरे की ओर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रजनी कई क्षणों तक निस्तब्ध, मूर्तिवत् बैठी रही। तब एक-दो बार उसकी ओर देखकर उसने कहा—इस प्रश्न पर विचार करने के लिए मुझे कुछ समय की आवश्यकता है इन्द्र! कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर विचार करना बहुत ज़रूरी है और उचित यह होगा कि मैं उन पर एकान्त में शान्तिपूर्वक विचार करूँ।

"अच्छी बात है, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं नक़शा लेने जाता हूँ, तब तक तुम विचार कर लो।"

मुड़कर वह दरवाज़े की ओर चला, रुका, और जैसे कुछ और कहने के लिए मुड़ा। लेकिन उसका विचार बदल गया। तब बिना कुछ कहे ही वह धीरे से कमरे के बाहर चला गया। ज्यों ही दरवाज़ा खुला एक व्यक्ति जो कुंजी के सूराख़ से अन्दर झाँक रहा था उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

"अरे, टंडन! ख़ूब आये भाई! कब आये?"

"चला ही आ रहा हूँ। तीन घंटे हुए सदर ने मुझे टेलीफ़ोन किया। रोशनपुर में एक मामूली से मामले की जाँच कर रहा था। चीफ़ ने स्वयं मुझसे बातें कीं। वे बड़े जोश में थे। इस मामले की तुमसे सुनी हुई बातें बतला कर उन्होंने मुझे यहाँ आने का आदेश दिया। तब कार पर सवार होकर मैं तुरन्त चल पड़ा।"

हाथ में हाथ देकर इन्द्र उसे हाल की ओर ले गया।

"ज़ोर से बातें मत करो यार", उसने कहा। "तुम्हें यहाँ पाकर मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है। यह मामला बड़ा विचित्र और जटिल है। मेरा ख़याल है कि ऐसा मामला कभी पहले तुम लोगों के सामने न आया होगा। सारी बातें जान लेने के बाद तुम्हें भी मुझसे सहमत होना पड़ेगा। शैतानी हथकंडों की जैसी रचना यहाँ हो रही है वैसी शायद कभी कहीं न हुई होगी।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

टंडन एकटक देखता रहा। वह औसत क़द का एक बलिष्ठ युवक था, सूट पहनता था, हैट लगाता था। उसके वस्त्रों से तम्बाकू की तेज़ गन्ध निकलती थी। चेहरे, चाल-ढाल और वस्त्रों से रोब टपकता था। चुस्ती उसकी रग-रग में भरी थी।

हर व्यक्ति को वह घूरकर देखता था और उसका इस तरह देखना कभी-कभी असभ्यता के निकट पहुँच जाता था। उसके मतानुसार केवल दो प्रकार के लोग संसार में बसते हैं—सज्जन और बदमाश। सज्जनों से उसे कोई मतलब नहीं था, लेकिन बदमाशों की निगरानी करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझता था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं, जिनमें मुस्कान बड़ी कठिनाई से कभी व्यक्त हो पाती थी। सिर कुछ गंजा हो चला था, मूँछें छोटी-छोटी थीं और आवाज़ बड़ी तेज़ और सख्त थी।

"लंच का समय आ रहा है," इन्द्र ने कहा। "उस समय तुम्हें सारा क़िस्सा सुनाऊँगा। जिन बातों का पता लगा सका हूँ वह सब भी तुम्हें बता दूँगा। शायद तुम्हें सदर से सहायता माँगने की ज़रूरत पड़ेगी।"

"काम में तो शायद तुम भी लगे हो," टंडन ने कहा।

"तुम्हारा मतलब उस लड़की से है?"

"हाँ। जो कुछ तुमने उससे कहा था वह सब मैंने सुन लिया। जान पड़ता है, इस मामले का तुम्हें अच्छा ज्ञान है। और तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो कि कहाँ किस बात का पता लग सकता है। वह तुम्हारी पकड़ में कैसे आगई? उससे हमें काफ़ी सहायता मिल सकती है। लेकिन उसे भाग निकलने का मौक़ा देकर तुमने अच्छा नहीं किया।"

चकित होकर विचित्र ढङ्ग से इन्द्र उस जासूस के चेहरे की ओर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रजनी कई क्षणों तक निस्तब्ध, मूर्तिवत् बैठी रही। तब एक-दो बार उसकी ओर देखकर उसने कहा—इस प्रश्न पर विचार करने के लिए मुझे कुछ समय की आवश्यकता है इन्द्र! कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर विचार करना बहुत ज़रूरी है और उचित यह होगा कि मैं उन पर एकान्त में शान्तिपूर्वक विचार करूँ।

"अच्छी बात है, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं नक़शा लेने जाता हूँ, तब तक तुम विचार कर लो।"

मुड़कर वह दरवाज़े की ओर चला, रुका, और जैसे कुछ और कहने के लिए मुड़ा। लेकिन उसका विचार बदल गया। तब बिना कुछ कहे ही वह धीरे से कमरे के बाहर चला गया। ज्यों ही दरवाज़ा खुला एक व्यक्ति जो कुंजी के सूराख़ से अन्दर झाँक रहा था उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

"अरे, टंडन! ख़ूब आये भाई! कब आये?"

"चला ही आ रहा हूँ। तीन घंटे हुए सदर ने मुझे टेलीफ़ोन किया। रोशनपुर में एक मामूली से मामले की जाँच कर रहा था। चीफ़ ने स्वयं मुझसे बातें कीं। वे बड़े जोश में थे। इस मामले की तुमसे सुनी हुई बातें बतला कर उन्होंने मुझे यहाँ आने का आदेश दिया। तब कार पर सवार होकर मैं तुरन्त चल पड़ा।"

हाथ में हाथ देकर इन्द्र उसे हाल की ओर ले गया।

"ज़ोर से बातें मत करो यार", उसने कहा। "तुम्हें यहाँ पाकर मुझे बड़ी ख़ुशी हो रही है। यह मामला बड़ा विचित्र और जटिल है। मेरा ख़याल है कि ऐसा मामला कभी पहले तुम लोगों के सामने न आया होगा। सारी बातें जान लेने के बाद तुम्हें भी मुझसे सहमत होना पड़ेगा। शैतानी हथकंडों की जैसी रचना यहाँ हो रही है वैसी शायद कभी कहीं न हुई होगी।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

टंडन एकटक देखता रहा। वह औसत क़द का एक बलिष्ठ युवक था, सूट पहनता था, हैट लगाता था। उसके वस्त्रों से तम्बाकू की तेज़ गन्ध निकलती थी। चेहरे, चाल-ढाल और वस्त्रों से रोब टपकता था। चुस्ती उसकी रग-रग में भरी थी।

हर व्यक्ति को वह घूरकर देखता था और उसका इस तरह देखना कभी-कभी असभ्यता के निकट पहुँच जाता था। उसके मतानुसार केवल दो प्रकार के लोग संसार में बसते हैं—सज्जन और बदमाश। सज्जनों से उसे कोई मतलब नहीं था, लेकिन बदमाशों की निगरानी करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझता था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं, जिनमें मुस्कान बड़ी कठिनाई से कभी व्यक्त हो पाती थी। सिर कुछ गंजा हो चला था, मूँछें छोटी-छोटी थीं और आवाज़ बड़ी तेज़ और सख़्त थी।

"लंच का समय आ रहा है," इन्द्र ने कहा। "उस समय तुम्हें सारा क़िस्सा सुनाऊँगा। जिन बातों का पता लगा सका हूँ वह सब भी तुम्हें बता दूँगा। शायद तुम्हें सदर से सहायता माँगने की ज़रूरत पड़ेगी।"

"काम में तो शायद तुम भी लगे हो," टंडन ने कहा।

"तुम्हारा मतलब उस लड़की से है?"

"हाँ। जो कुछ तुमने उससे कहा था वह सब मैंने सुन लिया। जान पड़ता है, इस मामले का तुम्हें अच्छा ज्ञान है। और तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो कि कहाँ किस बात का पता लग सकता है। वह तुम्हारी पकड़ में कैसे आगई? उससे हमें काफ़ी सहायता मिल सकती है। लेकिन उसे भाग निकलने का मौक़ा देकर तुमने अच्छा नहीं किया।"

चकित होकर विचित्र ढङ्ग से इन्द्र उस जासूस के चेहरे की ओर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"भागने का मौक़ा देकर ? तुम्हारा मतलब क्या है टंडन ? वह उस कमरे में मौजूद है और मेरा इन्तज़ार कर रही है।"

टंडन हँस पड़ा।

"नहीं इन्द्र, तुम भ्रम में हो," टंडन ने धीरे से कहा। "अभी तुम्हें स्त्रियों के बारे में बहुतेरी बातें जाननी हैं। उसने तुमसे अपना पीछा छुड़ा लिया। आसान काम था। नक़शा लाने के बहाने उसने तुम्हें कमरे से दूर कर दिया। उस कमरे की खिड़कियों में सीख़चे नहीं हैं। यहाँ आते समय मैंने यह देख लिया था। नीचे की मंज़िल की तमाम खिड़कियों का यही हाल है। इस मकान में यह एक बहुत बड़ी ख़राबी है। वह रफ़ूचक्कर हो गई। जाकर देख लो।"

इन्द्र ने जाकर देखा, वहाँ कोई नहीं था। खिड़कियाँ खुली थीं, हवा अन्दर आ रही थी, परदे हिल रहे थे। रजनी का कहीं पता न था। खिड़की के बाहर ज़मीन पर जूते का एक निशान था। रजनी बेशक धप्पा दे गई। इन्द्र समझ गया कि उसका पीछा करना बिलकुल बेकार होगा। उस सुविस्तृत मरुभूमि में, जिसके कोने-कोने से वह भी अच्छी तरह परिचित है, वह किसी तरह उसे पकड़ न सकेगा।

"भाड़ में जाय !" खीझकर उसने कहा। फिर क्रोधपूर्ण दृष्टि से वह मरुभूमि की ओर देखने लगा। अगर टंडन न आगया होता, तो रजनी की यह चाल उसे इतनी बुरी न लगती, क्योंकि अब भी वह उसके मन में बसी हुई थी। उसे झुँझलाहट विशेष रूप से इसलिए हुई कि टंडन के सामने उसे नीचा देखना पड़ा।

टंडन के पास वह वापस जा रहा था कि सीढ़ियों पर उसे भड़भड़ाहट की आवाज़ सुनाई दी। कोई बड़ी तेज़ी से उतर रहा था और उसका नाम ले-लेकर उसे पुकार रहा था। वह दौड़

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कर बाहर निकला। डाक्टर उसी की ओर भागा आ रहा था। उसका चेहरा फ़क़ था। वह बदहवास था।

"जल्दी चलिए, मिस्टर इन्द्रविक्रम," उसने कहा। "ठाकुर साहब दम तोड़ रहे हैं। उनकी हालत बहुत बिगड़ गई है और उनके बचने की अब कोई आशा नहीं है। उनकी बेटी उनके पास है। मरने से पहले वे आपसे और अरुणा से एकान्त में बात करना चाहते हैं। जल्दी जाइए। दस-पन्द्रह मिनट से ज़्यादा अब वे नहीं जियेंगे।"

आठवाँ अध्याय

वादा

इन्द्र को गहरा आघात लगा। तुरन्त मुड़कर वह तेज़ी से ऊपर दौड़ा। विपत्ति पर विपत्ति! अभिशाप की छाया में पड़े हुए उस घर में दुःखान्त घटनाओं का जैसे ताँता लग गया था। एक मिनट में उसने ठाकुर साहब के शयनागार में प्रवेश किया। ठाकुर साहब तकियों के ढेर के सहारे किसी तरह बैठे हुए थे। अन्त निकट होने के चिह्न स्पष्ट व्यक्त थे।

खिड़की के निकट पड़े हुए एक सोफ़े पर कुछ बैठी, कुछ लेटी हुई अरुणा बिलख-बिलखकर रो रही थी। मनोवेदना का वारा-पार न था; दिल बैठा जा रहा था। वह अपनी आवाज़ दाबने की कोशिश कर रही थी, और इससे उसका दुःख बढ़ता ही जा रहा था। उसकी वैसी दशा देखकर इन्द्र का हृदय करुणा से भर गया।

ठाकुर साहब के ओठ हिल रहे थे। इन्द्र रोगी की शय्या के

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

समीप जाकर, झुककर वह सुनने की कोशिश करने लगा। ठाकुर साहब का कंठ-स्वर अत्यधिक क्षीण था।

"बेचारी लड़की पर मुसीबत का पहाड़ टूटा पड़ रहा है," उन्होंने कहा, और इससे कहीं अधिक कहा उनकी आँखों ने। "मैं जा रहा हूँ। तेज़ी से जा रहा हूँ। इस बात का मुझे बड़ा दुःख है कि तुम दोनों को एक होकर सुख से रहते देखने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा। इस प्रश्न को अब तुम्हें हल करना ही होगा बेटा! दो-चार मिनट के बाद वह संसार में बिलकुल अकेली रह जायेगी। इसी तरह एक दिन उसकी मा भी उसे एकाएक छोड़-कर चली गई थी। तब उसकी देख-रेख करने के लिए मैं था। लेकिन अब तो कोई न रहेगा। कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा नहीं है जिस पर मैं विश्वास कर सकूँ। वह तुम्हारी है। वास्तव में तुम्हारे पिता के मरने के बाद से ही वह तुम्हारी हो चुकी थी। इस बात का वादा मैंने उसी समय किया था जब वे मर रहे थे और तुम्हारी तरह मैं भी उनकी मृत्यु-शय्या के समीप खड़ा हुआ उनकी बातें सुनने की कोशिश कर रहा था। सुन रहे हो न, इन्द्र?"

"जी हाँ। एक बात बतलाइए। यह काम भी क्या बनर्जी ही का था?"

ठाकुर साहब अपने को क़ाबू में रखने का विकट प्रयत्न कर रहे थे। अत्यधिक ज़ोर पड़ने के कारण उनके जबड़ों की नसें उभर आई थीं और ऐंठती हुई उँगलियाँ काँप रही थीं।

"हाँ। सावधानी से उसका सामना करना। वह साँड़-सा ताक़तवर है। दोनों हाथों से मेरा सिर पकड़कर उसने फाटक से लड़ा दिया। अरुणा कहाँ है? तुम कहाँ हो? अब कुछ देख नहीं पा रहा हूँ। जल्दी करो इन्द्र। उसे बुलाओ। मैं...... मैं जा रहा हूँ!"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"अरुणा !" इन्द्र ने तुरन्त आवाज़ लगाई।

अरुणा दौड़कर रोगी-शय्या के पास आई। उसकी आँखों से आँसू जारी थे और चेहरा बिलकुल भीग गया था।

"अरुणा ! तू ही है मेरी अरुणा ?"

उसने उनका काँपता हुआ हाथ अपने हाथों में लेकर दबाया। दरवाज़ा खुला। बर्फ़ की टोपी लिये हुए डाक्टर अन्दर आया।

"वादा करो, बेटी ! तुम जानती हो कि मेरा मतलब क्या है ? वादा करो कि तुम इन्द्र की सच्ची संगिनी बनोगी। वादा करो बेटी, वादा करो !"

उनके गले से लिपटकर सिसक-सिसककर अरुणा वादे करने लगी, आश्वासन देने लगी।

इन्द्र ने तेज़ी से इशारा करके डाक्टर को रोक दिया। डाक्टर नहीं देख सका, लेकिन उसने देख लिया कि ठाकुर साहब की आँखों की पुतलियाँ फिर गईं और उनकी उँगलियों की कँपकँपी बन्द हो गई। जीवन-दीपक फड़फड़ाकर बुझ गया। माया-ममता के बंधन तोड़कर रायबहादुर ठाकुर रामेन्द्रप्रतापसिंह राठौर दुनिया से कूच कर गये।

इन्द्र दबे पाँव कमरे से बाहर निकल गया। डाक्टर और अरुणा को उसी तरह कमरे में छोड़कर, धीरे से दरवाज़ा बन्द करके वह नीचे भागा।

माथे से पसीना पोंछता हुआ वह पुस्तकालय में पहुँचा। असीम करुणा, अथाह वेदना से भरा हुआ वह दृश्य ! जीवन में कभी पहले उसे ऐसा दृश्य देखने को नहीं मिला था। दस मिनट से अधिक नहीं लगे थे। किन्तु वे दस मिनट कितने दुःखद सिद्ध हुए थे !

पुस्तकालय में टंडन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। भावुकता का कोई चिह्न उसके चेहरे पर नहीं था। सदैव की भाँति वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

शान्त, गम्भीर और क्रियाशील था। वह था ही ऐसा व्यक्ति जिसके लिए मृत्यु दैनिक जीवन की एक साधारण घटना से अधिक मूल्य नहीं रखती। भौंहों को ज़रा-सा उठाकर उसने इन्द्र की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"चल बसे ?" उसने शान्त स्वर में पूछा।

"हाँ," इन्द्र ने लड़खड़ाई हुई आवाज़ में उत्तर दिया। आँखें बन्द करके वह उस करुण दृश्य को मस्तिष्क से निकाल देने की कोशिश करने लगा।

"तब तो इसे हत्या कहना पड़ेगा," जासूस ने कहा, (उसके शब्दों में सन्तोष की ध्वनि थी) "अब तो वह शैतान फाँसी पर लटकने से किसी तरह बच नहीं सकता। बनर्जी जैसे नर-पिशाच को फाँसी से कम सज़ा देना पाप करने के बराबर होगा। उसका क़िस्सा तो ख़त्म करके ही छोड़ना चाहिए।"

जेब से अपनी घड़ी निकालकर और पुस्तकालय की घड़ी से समय मिलाकर, उसने अपने नोट-बुक में कुछ बातें दर्ज कीं। फिर वह इन्द्र की ओर मुड़ा।

"जान पड़ता है इन्द्र, बड़ी कठिनाई से निकल कर आये हो ?"

"कठिनाई नहीं टंडन, मुसीबत थी! बड़ा करुणाजनक दृश्य था! शोक के मारे अरुणा का बुरा हाल था। उसका दिल बैठा जा रहा था। लेकिन उसी दशा में बेचारी को मेरे साथ विवाह करने का वादा करना पड़ा !"

"अच्छा ?"

"हाँ, भाई। ठाकुर साहब की आँखों की रोशनी बुझ रही थी। उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। अरुणा बेहाल थी। जान पड़ता था कि बस बेहोश हुआ ही चाहती है। लेकिन ठाकुर साहब ने उससे वचन लेकर छोड़ा। ईश्वर जाने, कैसे वह ऐसा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कर सकी। अगर वह दृश्य कुछ देर तक और जारी रहता, तो मैं ख़ुद अपने होश-हवास खो बैठता।"

टंडन को कुछ आश्चर्य हुआ।

"इसमें ख़राबी क्या है? तुम उससे शादी करना नहीं चाहते?"

"शादी! अरे यार, दो साल से तो मैंने उसे देखा भी नहीं। आज भी मैं उसे नहीं देख सका। एक बार भी नज़र उठाकर उसने मेरी ओर नहीं देखा। मैं यह भी नहीं जानता कि वह कैसी है। लड़कियाँ ज्यों ज्यों सयानी होती हैं त्यों त्यों उनका रंग, रूप बदलता रहता है। इसके अलावा उसकी इच्छा-अनिच्छा का ख़याल करना भी ज़रूरी था। अब वह ज़माना नहीं रहा कि उच्च वर्ग का कोई पिता अपनी लड़की को, बिना उसकी इच्छा-अनिच्छा पर विचार किये, किसी भी व्यक्ति के गले मढ़ दे। ठाकुर साहब के दिमाग़ में वह विचार एक मुद्दत से जमा बैठा था। और अपनी अन्तिम घड़ी में उन्होंने ज़बरदस्ती उसे उस बेचारी के ऊपर लाद दिया। उसके होश-हवास ठिकाने नहीं थे, और वह यह समझ सकने के योग्य नहीं थी कि वह क्या कह रही है। ऐसी दशा में किये गये वादे को पूरा कराने की बात कोई भला आदमी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता।"

"अगर ऐसी बात है, तो जाकर उसे अपनी राय बतला दो।"

"कैसी बात करते हो टंडन? अभी हफ़्तों ऐसी बात की तरफ़ इशारा करना भी मुनासिब न होगा। ज़रा अपने को टटोलो, और अदालती दुनिया से बाहर निकलने की कोशिश करो। जिस विचित्र परिस्थिति में वह अपने को पा रही है, उस पर भी ज़रा ग़ौर करो। दो वर्ष तक बाहर रहने के बाद जब वह घर वापस आती है तो देखती है कि सारे मकान में सन्नाटा छाया हुआ है। लोग फुसफुसाकर बात करते हैं और दबे-पाँव चलते

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हैं। नौकरों के अतिरिक्त कोई उसका स्वागत करने नहीं आता। एक पागल के हाथों घायल होकर उसके पिता ऊपर रोग-शय्या पर पड़े हुए हैं। खानसामा उसे सूचित करता है कि मैं यहाँ एक मेहमान की हैसियत से टिका हुआ हूँ। मैं उससे भेंट करने का अवसर नहीं पाता। लेकिन यह बात तो वह जानती नहीं। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि वह यह समझे कि मैं जान-बूझकर उसकी अवहेलना कर रहा हूँ, उसके साथ रुखाई का बर्ताव कर रहा हूँ।

"अप्रत्याशित रूप से एकाएक उसके पिता की दशा बहुत बिगड़ जाती है। हम दोनों रोगी-शय्या के निकट बुलाये जाते हैं और इससे पहले कि वह समझ सके कि वह क्या करने जा रही है, उसे विवश होकर मुझसे विवाह करने का वादा करना पड़ता है! इतना ही अन्याय कुछ कम नहीं है, ऊपर से तुम कहते हो कि मैं जाकर उसे अपनी राय भी बता आऊँ! टंडन! या तो तुम मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हो या बिलकुल जड़ हो गये हो।"

टंडन को किंचित् आश्चर्य हुआ।

"ख़ैर," शान्त स्वर में उसने कहा, "अब उस काम की बात करो जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ। यह बतलाओ, रजनी-कुटीर कहाँ है? मैं समझता हूँ कि अब मुझे जाकर रजनी से भेंट करना चाहिए। इससे कुछ लाभ होने की सम्भावना है।"

इन्द्र सँभलकर बैठ गया। रजनी-कुटीर! वह भी एक ऐसी बात है जिस पर ग़ौर करना ज़रूरी है।

कल उसने रजनी से वादा किया था कि आज चार बजे शाम को वह उससे मिलन-कुञ्ज में अवश्य भेंट करेगा। वह समय उसने जान-बूझकर नियत किया था, क्योंकि ठीक उसी वक़्त अरुणा के रामेन्द्र-भवन पहुँचने की आशा की जाती थी। बिदा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

होते समय उसने रजनी से जो शब्द कहे थे वे अब भी उसे अच्छी तरह याद थे—"मैं ज़रूर आऊँगा, रजनी—और मुझे बड़ी निराशा होगी अगर तुम यहाँ न मिलोगी।" कितना सुन्दर था वह क्षण! उसकी आत्मा अनिर्वचनीय आनन्द से विभोर हो गई थी और उसके हृदय के तार स्वर्गिक संगीत की नीरव लहरियों से झंकृत हो उठे थे।

और रजनी ने कहा था—कल शायद मुझसे भेंट करना भी पसंद न करोगे!

"ओफ़!" उसने अपने मन में कहा। "कैसी विकट समस्या है! शायद ही कभी किसी को ऐसी कठिनाई का सामना करना पड़ा हो।"

ठाकुर साहब का देहावसान अभी थोड़ी ही देर पहले हुआ था, उनका मृतक शरीर घर ही में पड़ा था। ऐसी दशा में किसी दूसरे विषय पर बात करना भी इन्द्र को पसन्द नहीं आ रहा था। लेकिन क़ानून का चर्ख़ा तो चलता ही रहता है, दुनिया में चाहे जो हो जाय। क़ानून की माँग है कि यदि किसी मनुष्य की हत्या हो जाय, तो उसके हत्यारे को जल्द से जल्द प्राण-दण्ड मिलना चाहिए। और उसकी माँग यह भी है कि हत्यारा शीघ्रातिशीघ्र गिरफ़्तार कर लिया जाय। पेन्सिल हाथ में लिये हुए टण्डन उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।

इन्द्र उसकी ओर मुड़ा।

"मैं यह चाहता हूँ टण्डन, कि तुम रजनी-कुटीर......गोधूलि से पहले न जाओ।"

"इससे तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम यह चाहते हो कि उसे फ़रार हो जाने का पूरा मौक़ा मिल जाय?"

इन्द्र के चेहरे पर लज्जा की लालिमा दौड़ गई।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"नहीं-नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है," उसने कहा। "मैं जानता हूँ कि अगर तुम रजनी को गिरफ़्तार कर लो, तो तुम्हारा यह काम किसी तरह अनुचित नहीं कहा जा सकता। बनर्जी की सहायता करना—उसे बचाने का प्रयत्न करना, सच्ची बातें प्रकट न करना, इत्यादि अनेक अभियोग उसके ऊपर लगाये जा सकते हैं। मैं जानता हूँ कि उसके विरुद्ध मामला बहुत मज़बूत है और उसे गिरफ़्तार करने के लिए तुम व्यग्र हो। लेकिन..."

उसकी हैरानी और भी बढ़ गई। उसने देखा कि टण्डन बस हँसा ही चाहता है।

"मैं उसे गिरफ़्तार करूँगा?" व्यंग्यपूर्ण स्वर में टण्डन ने कहा। "होश की दवा कीजिए हज़रत! मैं उस बच्ची को गिरफ़्तार नहीं कर सकता। तुम्हारा दिमाग़ इस वक़्त ठीक तरह काम नहीं कर रहा है। क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि हमारे और बनर्जी के बीच वह एक कड़ी का काम कर रही है? जब तक वह आज़ाद रहेगी तब तक उसके द्वारा हमें बनर्जी के सम्बन्ध की कितनी ही बातें मालूम होती रहेंगी। सम्भव है यह बात वह न जानती हो। नहीं, इन्द्र, उसे तो हम आज़ाद ही रक्खेंगे। कभी न कभी वह हमें उस व्यक्ति के निकट अवश्य पहुँचा देगी जिसकी तलाश में हम हैं। ख़ैर, जो हो, उससे भेंट तो मैं करना ही चाहता हूँ।"

"क्यों?"

"वह बड़ी होशियार है। और वह बड़ी सच्ची भी है। जब तुम उससे पूरे जोश के साथ जिरह कर रहे थे, तो उसने केवल एक झूठी बात कही थी। और यह साफ़ ज़ाहिर हो गया था। वह अच्छी तरह जानती है कि बनर्जी कहाँ छिप जाया करता है। कभी न कभी उस गुप्त स्थान का पता रजनी ही के द्वारा हम अवश्य लगा लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"उस भेंट के समय मैं भी मौजूद रहूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति तो न होगी ?"

टंडन कई क्षणों तक उसे तीक्ष्ण दृष्टि से देखता रहा।

"बधाई, इन्द्र ! बड़ा अच्छा चुनाव किया है तुमने। अब मेरी समझ में आया कि ऊपरवाली बातों ने तुम्हें क्यों उतना उत्तेजित कर दिया था। ख़ैर वह तुम्हारा मामला है, उससे मुझे कोई मतलब नहीं। मेरी यह निश्चित धारणा है कि ऐसी कोई घटना नहीं होती जिसमें किसी न किसी रूप में किसी स्त्री का हाथ न हो। तुम उससे कब भेंट करना चाहते हो ?"

"चार बजे।"

"आज ही ?"

"हाँ।"

"लेकिन अभी उससे बात करते समय तो इसके सम्बन्ध में तुमने कुछ नहीं कहा था ?"

"न कहा होगा। भेंट करने की बात मैंने कल निश्चित की थी।"

"अच्छा !" टंडन ने कहा। "लेकिन अब तो यह भेंट शायद तुम्हारे लिए कुछ अधिक मनोरंजक न होगी।"

"ठीक कहते हो। लेकिन भेंट तो मैं ज़रूर ही करूँगा।"

"चार बजे ?"

"ठीक चार बजे।"

"मैं वहाँ पाँच बजे के क़रीब पहुँचूँगा।"

"ठीक है। रजनी-कुटीर का पता तुम्हें आसानी से लग जायेगा। वह यहाँ से क़रीब दो मील के फ़ासले पर एक गली में है। उस गली का नाम है मिलन-कुञ्ज।"

"बड़ा सुन्दर नाम है !"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नवाँ अध्याय

तालाब का रहस्य

नियत समय आया, लेकिन भेंट नहीं हो सकी। इसमें इन्द्र का कोई दोष नहीं था। अपना विचार उसने बदला नहीं था। रजनी से मिलने की उसकी उत्सुकता ज्यों-की-त्यों बनी हुई थी। लेकिन रजनी-कुटीर के फाटक पर जब वह पहुँचा, तो रजनी वहाँ नहीं थी।

रामेन्द्र-भवन से जब वह हार्डी के साथ रवाना हुआ था, तब वर्षा बन्द हो चुकी थी। आकाश काफ़ी साफ़ हो गया था। जल से भरे बादल निकल गये थे। जो बाक़ी थे उनमें जल नहीं था।

मिलन-कुञ्ज में वह कई मिनट पहले ही पहुँच गया था और रजनी की प्रतीक्षा में इधर-उधर टहल रहा था। फाटक ही पर मिलने का वादा था, इसलिए वह वहीं उसकी प्रतीक्षा करता रहा। हार्डी दुम हिलाता हुआ झाड़ियों की ओर दौड़ गया।

चारों ओर विकट सन्नाटा छाया हुआ था। पक्षी अपना चहचहाना भी जैसे भूल गये थे। दूर ऊसर में जहाँ-तहाँ कुहरा छाया हुआ था।

इन्द्र फाटक पर बैठा हुआ असीम व्यग्रता से सिग्रेट पी रहा था। बँगले के अन्दर से ज़रा भी आवाज़ नहीं आ रही थी। ऐसा जान पड़ता था जैसे वह बिलकुल ख़ाली पड़ा हो और पास-पड़ोस में छाये हुए सूनेपन का कुछ अंश उसमें भी आ बसा हो।

उसने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली। साढ़े चार बज चुके थे। टंडन अब आता ही होगा। रजनी से टंडन भेंट अवश्य करेगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

किन्तु ऐसा होना क्या उचित होगा ? नहीं, नहीं। तहक़ीक़ात करते समय पुलिसवाले बिलकुल हृदयहीन हो जाते हैं। वे करें क्या, उनका पेशा ही ऐसा है। रजनी आज बहुत काफ़ी परेशानी उठा चुकी है। उसे अब अधिक तङ्ग करना निर्दयता से कम न होगा। टंडन स्पष्ट रूप से वादा कर चुका है कि वह उसे गिरफ़्तार नहीं करेगा। अपने वादे से हटनेवाला व्यक्ति तो वह नहीं है। रजनी अभी तक बाहर नहीं निकली। आख़िर बात क्या है ? चलकर देखना चाहिए। इसी तरह यहाँ बैठे रहने से काम न चलेगा।

फाटक से उठकर वह अन्दर चला। अन्दर की सड़क के आख़िरी मोड़ पर पहुँचते ही उसे सदर दरवाज़ा दिखाई दिया। वह बन्द था और उस पर एक चौकोर सफ़ेद काग़ज़ लगा हुआ था। समीप जाकर उसने देखा; वह एक लिफ़ाफ़ा था जो हलका गोंद लगाकर दरवाज़े पर चिपका दिया गया था। उस पर लिखा था—"श्रीयुत इन्द्रविक्रमसिंह, रामेन्द्र-भवन, श्रीगंज।"

इन्द्र ने बड़ी सावधानी से लिफ़ाफ़े को दरवाज़े से अलग किया। फिर उसे खोलकर, उसके अन्दर रक्खा हुआ पत्र निकाल-कर वह पढ़ने लगा—

"प्रिय इन्द्र,

मुझे बड़ा खेद है कि मैं अपना वादा पूरा करने में असमर्थ हूँ। थोड़ा ध्यान करने पर तुम आसानी से समझ जाओगे कि तुमसे भेंट करना अब मेरे लिए बिलकुल असम्भव है। कल से आज तक कितनी ही घटनायें घट चुकी हैं—ऐसी घटनायें जिनका प्रभाव हम दोनों के जीवन पर पड़े बिना न रहेगा। बहुधा चाही बातें नहीं होतीं और अनचाही बातें होकर रहती हैं। मानव-जीवन का यह एक अप्रिय सत्य है और प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन इसके सामने सिर झुकाना ही पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

यह पत्र मैं तुम्हें इसलिए लिख रही हूँ कि मैं जानती हूँ कि मेरी चेतावनी की तुम कुछ भी परवाह न करोगे और नियत समय पर मुझसे भेंट करने के लिए ज़रूर आओगे। मैं यहाँ से जा रही हूँ। अच्छा होता, तुम भी श्रीगंज से चले जाते! विश्वास करो, तुम्हारा जीवन ख़तरे में है और वह ख़तरा ऐसा-वैसा नहीं, बड़ा भयानक है। मेरा कहना न मानोगे?

हमारी उस पहली और अन्तिम भेंट की मधुर स्मृति मेरे मन में सदैव बनी रहेगी। ईश्वर करे, तुम सदैव सुखी रहो!

—रजनी।"

पत्र मोड़-माड़कर उसने जेब में रख लिया। एक क्षण के लिए वह भूल गया कि वह कहाँ खड़ा है और क्या कर रहा है। उधर मरुभूमि में छाया हुआ कुहासा जैसे किसी तरह एकाएक उसके मस्तिष्क में भी पहुँच गया। जब पग-पग पर कठिनाइयाँ सामने आने लगती हैं, तब ठीक तरह विचार कर सकना भी कठिन हो जाता है। केवल एक बात उसके दिमाग़ में गूँज रही थी, और वह यह थी कि उसके सारे काम चौपट हुए जा रहे हैं और कठिनाइयाँ उसे चारों ओर से घेर रही हैं। रामेन्द्र-भवन मे एक दुःखद परिस्थिति उसकी प्रतीक्षा कर रही है। यहाँ रजनी-कुटीर में दूसरी विकट परिस्थिति उसके सामने है। कुहासा चारों-ओर छाया जा रहा है। आलोक की एक किरण भी कहीं दृष्टि गोचर नहीं हो रही है।

टंडन से इस समय मिलना उचित होगा? नहीं, नहीं। जीवन भर अपराधियों और निम्न श्रेणी के लोगों से उसका पाला पड़ा है और उसके दृष्टिकोण में भी कुछ उन्हीं लोगों की-सी कठोरता आ गई है। उसके स्वभाव पर शुष्कता और व्यंग्य का रंग चढ़ गया है और जीवन के कोमल पहलुओं पर वह उचित रीति से विचार नहीं कर सकता। उससे सहानुभूति या

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सान्त्वना की आशा करना बिलकुल बेकार है। व्यंग्यपूर्ण शब्दों में उसे कुछ सलाह दे देने के अतिरिक्त वह कुछ नहीं करेगा। और इस समय यह बात वह किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि कोई उसके मुँह पर कहे कि वह बेतरह बेवक़ूफ़ बना है।

मिलन-कुञ्ज का दूसरा सिरा ऊसर से मिला हुआ था। दो-चार पेड़ों के अतिरिक्त वहाँ केवल झाड़-झंखाड़ ही थे। मरुभूमि के उस भाग में इन्द्र ने कभी क़दम नहीं रक्खा था। ज़ोर से सीटी बजा बजाकर अपने कुत्ते को पुकारता हुआ वह उसी ओर चल पड़ा।

ठाकुर साहब ने उसे बतलाया था कि उस ओर एक बहुत बड़ा तालाब है, जिसका जल बड़ा स्वच्छ है और जो बराबर ज्यों का त्यों भरा रहता है। उस तालाब से मिली हुई एक छोटी-सी नदी है, जिसके द्वारा उसमें जल पहुँचता है। गर्मी के दिनों में वह नदी तो बिलकुल सूख जाती है, लेकिन तालाब बराबर भरा रहता है। रामेन्द्र-भवन का माली अक्सर उसमें मछलियों का शिकार करता था। उसने इन्द्र से निवेदन किया था कि यदि कभी तबीअत चाहे तो उस तालाब में वह मछली का शिकार अवश्य करे। तालाब के पास ही जिस जगह वह अपने जाल और बंसियाँ इत्यादि रखता था वह भी उसने उसे बतला दी थी। जहाँ वह प्रकृति-निर्मित तालाब था वह स्थान एक पहाड़ी के कक्ष में स्थित था और वहाँ निविड़ नीरवता का एकच्छत्र राज्य था। घंटे दो-घंटे शान्तिपूर्वक विचार करने के लिए वहाँ से अधिक एकान्त कहीं मिल नहीं सकता था। तालाब में बंसी लगाकर, उसके किनारे बैठकर वह चुपचाप विचार करेगा। सम्भव है उस समय उन पेचीदा मामलों का कोई हल निकल आये। एक बात स्पष्ट है, और वह यह है कि रामेन्द्र-भवन वापस जाने और वहाँ अरुणा से भेंट करने के पहले ही उसे अपना

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कार्य-क्रम निश्चित कर लेना होगा। केवल अच्छे इरादे रखने ही से काम नहीं चल सकता, उन्हें कार्यरूप में परिणत करने का कोई सरल मार्ग निकाल लेना भी अत्यन्त आवश्यक है।

सुव्यवस्थित गति से वह उस ओर चला जा रहा था। पाँच बजे तक वह पहाड़ियों की पहली पंक्ति के ऊपर पहुँच गया। निर्दिष्ट स्थान अभी एक मील दूर था। रुककर, मुड़कर उसने घाटी पर दृष्टि डाली। छोटे-छोटे वृक्षों के एक झुरमुट में रजनी-कुटीर एक सुन्दर घिरौंदे की तरह दिखाई दे रहा था। लेकिन उसके फाटक पर टंडन नहीं दिखाई दिया। मिलन-कुञ्ज नामक वह गली बिलकुल सूनी नज़र आ रही थी।

दिन काफ़ी ढल गया था। अस्ताचल हलके कुहासे के परदे में छिपा था। लेकिन अभी प्रकाश बहुत काफ़ी था। टंडन अगर मिलन-कुञ्ज में मौजूद होता, तो वह उसे ज़रूर देख लेता। लेकिन वहाँ तो किसी मनुष्य का नाम-निशान भी नहीं था।

आश्चर्य से वह मिलन-कुञ्ज की ओर कुछ देर तक देखता रहा, फिर पहाड़ी के उस ओर धीरे-धीरे उतरने लगा। टंडन वहाँ क्यों नहीं आया? रजनी से मिलकर कुछ नई बातों का पता लगाने की उसे उत्कट इच्छा थी। उन बातों का पता लगाये बिना वह न तो स्वयं चैन लेगा और न दूसरों को चैन लेने देगा। तब क्या बात है? सम्भव है वह रजनी-कुटीर आया हो और उसे खाली पाकर रजनी की खोज में चल पड़ा हो। उसका पता वह न पा सके तो अच्छा हो। टंडन उसकी नाक में दम कर देगा। बेचारी अब तक बहुत काफ़ी हैरानी उठा चुकी है। अब जासूसों से पाला पड़ना उसके लिए बहुत बुरा होगा।

विचार-शृङ्खला एकाएक टूट गई। इसका एक कारण था। अगली पहाड़ी से एक तगड़ा व्यक्ति तेज़ी से उतरता हुआ दिखाई दिया। उसे देखते ही वह व्यक्ति दौड़ने, हाथ हिलाने और गला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

फाड़कर चिल्लाने लगा। इन्द्र उसका एक शब्द नहीं सुन सका, लेकिन यह तुरन्त समझ गया कि वह अत्यधिक उत्तेजित है।

उसका दौड़ना और चिल्लाना बराबर जारी रहा। उस असाधारण उत्तेजना का असर इन्द्र के ऊपर भी पड़ने लगा। उसकी चाल स्वतः तेज़ होती गई और ज़रा देर में वह भी उसकी ओर दौड़ने लगा। वह उसे पहचान गया। वह था रामेन्द्र-भवन का माली शिवदीन। इन्द्र जानता था कि शिवदीन बहुत शान्त प्रकृति का आदमी है और आसानी से उत्तेजित हो उठना उसके स्वभाव के सर्वथा विरुद्ध है। अपने काम में वह बड़ा दक्ष था और बड़ी होशियारी, इतमीनान और आत्म-विश्वास से काम करता था। आरम्भ ही से वह व्यक्ति इन्द्र को पसन्द आ गया था।

शिवदीन को उस दशा में देखते ही इन्द्र समझ गया था कि कोई असाधारण घटना घटी है। लेकिन जब अन्त में उसने उसके मुख से उसकी कहानी सुनी, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने समझा कि शायद उसके होश-हवास ठीक नहीं हैं। जो कुछ उसने कहा उस पर किसी प्रकार विश्वास ही नहीं होता था।

उसका चेहरा फ़क़ था, वह हाँफ रहा था और उसकी आँखों में भय का भाव था। रह-रहकर वह काँप उठता था। कुछ समय तक वह कुछ बोल नहीं सका। कभी वह मुड़कर उस पहाड़ी की ओर देखता, कभी इन्द्र के चेहरे की ओर एकटक ताकता।

"क्या बात है शिवदीन ?" इन्द्र ने पूछा।

"तालाब, हुज़ूर !" बड़ी कठिनाई से माली ने उत्तर दिया, "महतो का तालाब ग़ायब हो गया।"

"ग़ायब हो गया ! यह तुम क्या कह रहे हो ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ग़ायब हो गया हुज़ूर, साफ़ ग़ायब हो गया। वहाँ वह है ही नहीं। सिर्फ़ गढ़ा बाक़ी रह गया है।"

इन्द्र उसे ग़ौर से देखने लगा। वह नशे में नहीं था। ठाकुर साहब ने उसे बतलाया था कि शिवदीन कोई मादक द्रव्य नहीं खाता और उन्माद का भी कोई लक्षण उसके चेहरे पर नहीं था। वह केवल भयभीत था और कुछ नहीं।

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही है शिवदीन!" इन्द्र ने कहा, "कोई तालाब कैसे ग़ायब हो सकता है?"

"लेकिन वह तो ग़ायब हो गया हुज़ूर। पानी का एक बूँद भी उसमें नहीं है। वह बिलकुल सूखा पड़ा है। पानी उसमें पहले ही से भरा था, ऊपर से कल रात को भी ख़ूब वर्षा हुई थी। फिर भी उस तालाब में जल का एक बूँद भी नहीं है और भट्टी की तरह वह गर्म हो गया है। गर्मी की लहरें उसमें से उठ रही हैं। बदबू भी उड़ रही है। उसके पेंदे में जो झाड़-झंखाड़ था वह सब जैसे पका जा रहा है। बहुत पहले ही मैं जान गया था कि महतो के तालाब में कोई अनहोनी बात हो रही है। सबेरे ही की तो बात है। बहुत तड़का था। आसमान में कुछ कुछ रोशनी फैल गई थी। मैं बाग़ में काम कर रहा था, और—"

उसका हाथ पकड़कर इन्द्र उसे घटना-स्थल की ओर ले चला।

"देखो शिवदीन, बेवक़ूफ़ी की बात मत करो," उसने कहा, "तुम भागे क्यों जा रहे हो? होश ठीक करो। अगर तुम्हारा यही हाल कुछ देर तक और रहा, तो तुम बीमार हो जाओगे। ठीक तरह चलो। घबराने की कोई बात—"

"आप समझ नहीं रहे हैं, हुज़ूर। अपनी आँखों से तो आपने देखा नहीं। इसलिए आप समझें तो कैसे समझें? महतो का तालाब कई सौ गज़ लम्बा, कई सौ गज़ चौड़ा था और ख़ूब गहरा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

था, और उसमें हज़ारों टन पानी था। लेकिन सारे का सारा जल न जाने कैसे, न जाने कहाँ लोप हो गया। अब आप ख़ुद बताइये कि—"

उसे पकड़े हुए इन्द्र बराबर चलता रहा।

"ख़ैर, यही सही," सहानुभूतिसूचक स्वर में उसने कहा, "मान लिया कि महतो का तालाव सचमुच सूख गया। लेकिन इसमें घबराने की क्या बात है? चलो, चलकर देखता हूँ। शायद कोई कारण समझ में आ जाय। यह जादू का काम तो हो नहीं सकता। कोई ऐसा जादूगर मैंने नहीं देखा जो ऐसा अद्भुत काम कर सके।"

"जादूगर का नहीं हुज़ूर, यह पिशाचों का काम है! ऐसे ऐसे खेल यहाँ देखने को मिल रहे हैं जिनके सामने जादूगरी झख मारे! वे राक्षसों के खेल हैं सरकार; और लोग कहते हैं कि उन्हें देखनेवाले ज़िन्दा नहीं रह सकते! यहाँ के बहुतेरे लोगों ने वे खेल देखे हैं, और वे सब डर के मारे मरे जा रहे हैं! मैं तो सोच रहा हूँ कि घर-बार छोड़-छाड़कर भाग जाऊँ! यहाँ राक्षसों का राज्य क़ायम हो गया है, और अब श्रीगंज क्या सारी दुनिया की ख़ैरियत नहीं है! वे सब उस पागल डाक्टर के क़ब्ज़े में हैं और वह उनसे मनमाने ढंग से काम लेता है। जो कुछ मैंने देखा है वह सब अगर आप भी देखते, तो इस तरह बात न करते! तालाव का उड़ना भी मैंने अपनी आँखों से देखा है!"

"सच कहते हो?"

"जी हाँ हुज़ूर! आज सबेरे जब मैं बाग़ में काम कर रहा था तब एकाएक उस पहाड़ी की ओर मेरी दृष्टि गई। वैसे मैं रोज़ दिन में कई बार समय का पता लगाने के लिए उसकी ओर देखता हूँ। लेकिन उस समय न जाने क्यों आप ही आप मेरी आँखें उसकी ओर उठ गईं। अजीब तरह की रोशनी उस पर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

फैली हुई थी, उस तरह की नीली और हरी रोशनी नहीं, जो अशोक के खोहों के पास अकसर दिखाई देती है! वह रोशनी ख़ूब लाल थी, ख़ून की तरह लाल थी!

"जब रोशनी काफ़ी तेज़ हो गई, तब मैंने बादल का एक बहुत बड़ा टुकड़ा देखा। घने कुहरे की तरह वह तालाब से ऊपर उठ रहा था। पानी ज़ोर से बरसने लगा। हवा बन्द हो गई लेकिन वह बादल खम्भे की तरह आसमान की ओर उठता ही गया। वह कम से कम आध मील लम्बा रहा होगा। मैं समझ गया कि कोई भयानक घटना घट रही है। राक्षस हमारे ऊपर धीरे-धीरे क़ब्ज़ा जमा रहे हैं हुज़ूर, और हम सब सर्वनाश की ओर बढ़ रहे हैं। मेरा तो यही ख़याल है हुज़ूर, आप चाहे विश्वास करें या न करें।"

इन्द्र सहसा रुक गया।

"शिवदीन!" उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "तुम पूरे मूर्ख बन गये हो। इस समय तुम समझदारी से काम नहीं ले सकते। तुम्हें वहाँ ले जाने से कोई फ़ायदा न होगा। लौट जाओ। रामेन्द्र-भवन लौट जाओ। वहाँ पहुँचकर टंडन साहब से भेंट करना। टंडन साहब वही हैं जो आज दोपहर को आये हैं। उनसे कहना कि मैं महतो के तालाब पर हूँ और उनसे तुरन्त मिलना चाहता हूँ। उनसे यह भी कह देना कि काम बहुत ज़रूरी है और उन्हें तुरन्त उस तालाब के लिए रवाना हो जाना चाहिए। समझ गये?"

शिवदीन ने शान्ति की साँस ली। यह बिलकुल स्पष्ट था कि उस तालाब की ओर वापस जाने के विचार से ही उसका दिल बैठा जा रहा था।

"हाँ हुज़ूर, मैं कह दूँगा, ज़रूर कह दूँगा," उसने कहा और वह तेज़ी से रामेन्द्र-भवन की ओर चल पड़ा। उसे डर था कि इन्द्र कहीं उसे फिर न रोक ले।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कुछ देर तक इन्द्र उसकी ओर देखता रहा, फिर तेज़ी से घटना-स्थल की ओर चल पड़ा। क़रीब सौ गज़ की दूरी से मृत्यु की काली छाया की भाँति बनर्जी सुव्यवस्थित गति से उसका पीछा कर रहा था। किन्तु इन्द्र को इस बात का पता न था।

दसवाँ अध्याय

मुठभेड़

इन्द्र पहाड़ी की उस पगडंडी पर चलने लगा जो अन्य पगडंडियों की अपेक्षा कम ख़राब थी। ऊबड़-खाबड़ भी वह ज़्यादा नहीं थी और झाड़ियाँ भी उसमें बहुत नहीं थीं। उस पर चलना बहुत कठिन नहीं था।

शिवदीन ने अतिशयोक्ति से ज़रूर काम लिया होगा। वह कुछ पढ़ा-लिखा ज़रूर है, फिर भी ग्रामीण ही तो है। अन्य देहातियों की तरह वह भी अंधविश्वासी है। बात का बतंगड़ बनाना, तिल को ताड़ कर दिखाना उन लोगों के लिए मामूली-सी बात है। जादू-टोना, भूत-प्रेत, दैत्य-पिशाच—इन सबका उनके दैनिक जीवन में स्थान है। मामूली बातों के लिए भी बहुधा वे झाड़-फूँक का सहारा लेते हैं। ऐसी दशा में शिवदीन ने जो कुछ बयान किया है उसका अधिकांश कल्पनाजनित अवश्य होगा।

महतो के तालाब के सूख जाने के अनेक तर्क-संगत कारण हो सकते हैं। सम्भव है उसका पेंदा फट या धसक गया हो और इस तरह जल का काफ़ी भाग अन्दर समा गया हो। ऐसा अक्सर होते देखा गया है। पहाड़ी की बनावट की किसी ख़राबी से तालाब के पेंदे का धसक जाना असम्भव नहीं है। ऐसा होने

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

से जल अवश्य ही काफ़ी घट जायगा और यह बात देखनेवालों को असाधारण लगेगी।

उसे विश्वास होगया कि इसी तरह की कोई बात हुई होगी। अलौकिक बातों पर उसे कभी विश्वास नहीं रहा। मृत्युरेखा, भेड़ों का ग़ायब हो जाना, मुर्ग़ाबी और ख़रगोश का अकारण मर जाना, रामेन्द्र-भवन पर वह आक्रमण—ये सब रहस्य अभी रहस्य ही बने हुए थे। फिर भी उसने यही मान लिया कि तालाबवाली घटना किसी प्राकृतिक परिवर्तन के कारण ही हुई होगी। क्योंकि अगर माली का बयान बिलकुल ठीक है, तो उस घटना के मुक़ाबिले में अन्य घटनायें बिलकुल फीकी पड़ जाती हैं।

यह असम्भव नहीं कि एक प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिक किसी अज्ञात वैज्ञानिक सिद्धान्त की सहायता से एक ख़रगोश या मुर्ग़ाबी को रहस्यजनक ढंग से समाप्त कर दे या कुछ भेड़ों को ग़ायब कर दे। यह भी असम्भव नहीं कि वह ज़मीन के एक टुकड़े को निर्जीव कर दे—कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ हैं जिनकी सहायता से अच्छे से अच्छे खेत वर्षों के लिए बंजर कर दिये जा सकते हैं। लेकिन एक बड़े तालाब को केवल एक रात में बिलकुल सुखा देना तो पूर्णतया असम्भव प्रतीत होता है। नहीं, ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता।

हो न हो यह पिछली घटनाओं के आतंकपूर्ण प्रभाव की उपज है। शिवदीन और उसके साथियों ने उन्हें ख़ूब बढ़ाया-चढ़ाया होगा। भयजनित निर्मूलता का पुट दे-देकर कल्पनायें दौड़ाई गई होंगी और इस तरह इस घटना का जन्म हुआ होगा। जो लोग जन्म से ही अन्धविश्वासी हैं, जो आज-दिन भी भूतों और पिशाचों में विश्वास करते हैं, उनके लिए इस तरह की अनहोनी घटना गढ़ लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क़रीब सौ गज़ आगे बढ़कर, पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, इन्द्र अकस्मात् रुक गया। उसके पैरों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। वह स्तब्ध दंग रह गया। अगाध आश्चर्य में डूबा हुआ वह उस आश्चर्यजनक दृश्य की ओर एकटक ताकता हुआ कई मिनट तक मूर्तिवत् खड़ा रहा।

शिवदीन का बयान अक्षरशः सत्य निकला। महतो का तालाब सचमुच ग़ायब हो गया था। जल का एक बूँद भी उसमें नहीं था। जहाँ पहले एक सुन्दर और सुविस्तृत जल-राशि लहराती थी वहाँ अब केवल भूरे रंग का एक गहरा गढ़ा शेष था और वह बिलकुल सूखा था। तालाब के अन्दर उगी हुई घास और नरकुल का रंग भी भूरा हो गया था। सदियों से लगी हुई काई भी भूरे रंग की हो गई थी और थक्के की तरह जम गई थी। हज़ारों मछलियाँ जहाँ-तहाँ मरी पड़ी थीं। उनकी सफ़ेद चमक बिलकुल मन्द पड़ गई थी।

वह अपने बहकते हुए विचारों को क़ाबू में करने की कोशिश करने लगा। उस घटना को उसने सर्वथा असम्भव मान रक्खा था, किन्तु अब उसकी यथार्थता में कोई सन्देह नहीं रह गया था। इतनी विचित्र थी वह घटना कि उसकी हैरानी बढ़ती ही जा रही थी।

एक बात निश्चित थी, और वह यह थी कि जल के सूखने के पहले ही मछलियाँ मर गई थीं। मृत्यु-रेखा की भाँति तालाब का जल भी निर्जीव हो गया था। जीवन रस से वंचित हो जाने के बाद ही जल अदृश्य हुआ था।

इस निर्णय पर पहुँचने के बाद उसे उस घटना और इस घटना में अत्यधिक समानता दृष्टिगोचर हुई। तालाब की भाँति वह मृत्यु-रेखा भी बिलकुल सूखी हुई थी। उसे याद आया कि जहाँ वह भयानक रेखा पड़ी थी वहाँ की ज़मीन में ज़रा भी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नमी नहीं थी और वह इतनी भुरभुरी हो गई थी कि वह उसमें अपना पैर बड़ी आसानी से धँसा सकता था।

इस बात ने उसे इतना आकृष्ट किया कि वह तेज़ी से पहाड़ी के नीचे उतरने लगा। ज़रा देर में वह तालाब के किनारे पहुँच गया। एक क्षण रुककर वह धीरे-धीरे तालाब में उतरने लगा। सँभाल-सँभाल कर वह एक एक पग रख रहा था, जैसे डर रहा हो कि कहीं धँसकर रसातल में न पहुँच जाय। पेंदे के किनारे पहुँच कर, दुविधा में पड़कर वह रुक गया।

तेज़ गर्मी की लहरें सचमुच उठ रही थीं।

शिवदीन की यह बात भी बिलकुल ठीक थी। किसी ज्वालामुखी के समीप की भूमि की तरह वह स्थान ख़ूब गर्म था। उसके मन में विचार उठा कि सम्भव है कि पहाड़ी के तल से ज्वालामुखी की उष्णता निकली हो और इसी से तालाब सूख गया हो। किन्तु यह विचार एक क्षण से अधिक टिक नहीं सका, क्योंकि किसी ज्वालामुखी का कोई चिह्न कभी श्रीगंज में देखा नहीं गया। इसके अतिरिक्त यह बात भी थी कि कितनी भी उष्णता क्यों न पैदा हुई होती वह उतने बड़े तालाब को एक रात में किसी तरह नहीं सुखा सकती थी।

यह उसे मालूम था कि वह तालाब कल अपनी साधारण अवस्था में था। माली ने उसे बतलाया था कि कल तीसरे पहर वह उसमें मछली मारने गया था। और उस समय वह सदैव की भाँति मस्ती से लहरा रहा था। कोई असाधारण बात उस समय उसमें नहीं थी। शिवदीन जैसे होशियार और अनुभवी व्यक्ति की दृष्टि इस सम्बन्ध में किसी तरह धोका नहीं खा सकती थी।

गर्मी असह्य सिद्ध होने लगी। वह तालाब से बाहर निकल आया। हवा का एक तेज़ झोंका आया। धूल का एक बादल

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उठा और उसमें वह छिप गया। उसके फेफड़े में गर्द घुस गई। छींक पर छींक आने लगी। उस धूल में सुँघनी का-सा असर था और अच्छी तरह बुकी हुई खड़िया की तरह वह बारीक थी।

जहाँ कहीं वह पैर रखता, घास-फूस, झाड़-झंखाड़ चूर-चूर होकर ढेर हो जाते । मृत्यु-रेखा की जो दशा थी, ठीक वही दशा यहाँ भी थी। जीवन-रस यहाँ से भी खिंच गया था और समस्त जीवित वस्तुएँ निर्जीव हो गई थीं।

तट पर दो नावें बँधी थीं। वे ढाल पर तिरछी पड़ी थीं। उन दोनों की भी वही दशा हो गई थी जो घास-फूस की थी। उन पर जड़े हुए लोहे के पत्तरों को उसने स्पर्श किया। उसके छूते ही वे राख होकर गिर गये।

मुड़कर वह पहाड़ी की ओर चल पड़ा। अब उसे टंडन के आगमन की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उसके आये बग़ैर वह कुछ न कर सकेगा। दो दिमाग़ या दो से भी अधिक दिमाग़ जब एक साथ विचार करेंगे तब कहीं शायद वैज्ञानिक उन्माद के इस असाधारण प्रदर्शन का कोई हल निकल सकेगा। अकेले तो उसके लिए कुछ समझ पाना असम्भव है। उसकी दशा तो उस समय उस व्यक्ति की-सी हो गई थी जो घने कुहरे में फँस गया हो और इधर-उधर भटकता हुआ मार्ग खोज रहा हो।

एक परेशानी की बात और है। ठाकुर साहब के दुःखद मृत्यु की ख़बर शीघ्र ही दूर दूर तक फैल जायेगी। वे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति थे। कोई ऐरा-ग़ैरा उस हालत में मरता, तो शायद कोई ध्यान भी न देता। लेकिन ठाकुर साहब जैसे रईस और तालुक़ेदार की रहस्यपूर्ण मृत्यु की ख़बर समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए बिना न रहेगी। मामला आगे बढ़ेगा। समाचारपत्रों और समाचार-समितियों के प्रतिनिधि शीघ्र ही आयेंगे, तरह तरह के ऊल-जलूल प्रश्न करेंगे, अपने ढंग से छान-

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बीन करेंगे, और झूठी-सच्ची, अनाप-शनाप बातें प्रकाशित करना शुरू कर देंगे। इससे मामला और भी चौपट हो जायगा। ख़ैर, उससे उसे कोई विशेष सरोकार नहीं। उस परिस्थिति का सामना करने का काम टंडन का है। उस तरह के कामों का उसे बहुत काफ़ी अनुभव है।

इस रहस्य की जाँच का काम भी वह उसी के ऊपर छोड़ देगा। वह स्वयं अपना वही कार्यक्रम पूरा करने की कोशिश करेगा जिसे वह पहले ही से निश्चित कर चुका है। रात होते ही वह अशोक की गुफाओं की ओर जायगा और वहाँ से निकलने-वाले हरे और नीले प्रकाश के रहस्य को हल करने का प्रयत्न करेगा। अगर उसका वह प्रयत्न सफल हुआ, तो आशा है कि सारे रहस्य आसानी से हल हो जायँगे।

पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, उसने घाटी पर चारों ओर दृष्टि डाली। कहीं कोई व्यक्ति दृष्टिगोचर नहीं हुआ। टंडन नहीं आ रहा है ? लेकिन इतनी जल्दी वह कैसे आ सकता है ? शिवदीन से अगर उसकी भेंट हो गई होगी, तो भी यहाँ उसके पहुँचने में अभी एक घंटा ज़रूर लगेगा।

एक बड़े पत्थर पर बैठकर वह उसकी प्रतीक्षा करने लगा। उसकी दृष्टि फिर उस सूखे हुए तालाब पर जम गई और उसका मस्तिष्क फिर उसके रहस्य में उलझ गया। किन्तु उस रहस्य का भेद उसकी पहुँच से दूर ही भागता रहा। जेब से सिग्रेट-केस और दियासलाई निकालकर, सिग्रेट जलाकर, वह कश पर कश खींचने लगा।

विचारों में डूबा हुआ वह कुछ समय तक स्थिर भाव से बैठा रहा। सहसा उसे अपने मस्तिष्क पर किसी बाह्य शक्ति का प्रभाव पड़ता हुआ जान पड़ने लगा। उसे एक विचित्र प्रकार की बेचैनी अनुभव होने लगी और अपने चित्त की एकाग्रता क़ायम रखना

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके लिए असम्भव हो गया। यह बात नहीं कि उसके मनोभाव उसके प्रति विद्रोह कर उठे हों, या वह भय का शिकार हुआ जा रहा हो, या उसकी सहन-शक्ति जवाब दे रही हो।

नहीं, उसकी उस विकलता का कारण कहीं अधिक जटिल था। उसे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे कुछ अज्ञात शक्तियाँ उसे धीरे-धीरे घेरे ले रही हों और उसकी अन्तरात्मा उनसे लड़ने के लिए आतुर हो उठी हो।

कुछ और उसकी समझ में आया। उसे एकाएक ज्ञात हुआ कि वह वहाँ अकेला नहीं है, कोई उसे ग़ौर से देख रहा है। उसकी यह अनुभूति प्रतिपल ज़ोर पकड़ती गई।

प्रत्येक व्यक्ति की सहन-शक्ति की एक हद होती है। इन्द्र की सहन-शक्ति पर पहले ही बहुत अधिक ज़ोर पड़ चुका था। अब अधिक सह सकना उसके लिए असम्भव हो गया। वह एकाएक तेज़ी से उठ खड़ा हुआ और पीछे की ओर घूम पड़ा। जैसे गहरा धक्का खाकर वह चित्रलिखित-सा खड़ा रह गया। अत्य-धिक घृणा से उसकी ओर घूरता हुआ बनर्जी क़रीब दो गज़ के फ़ासले पर उसके सामने खड़ा था।

उसकी काली आँखें अंगारे की तरह लाल थीं और उनमें ऐसी भयानक कटुता, ऐसी भयानक घृणा थी जैसी इन्द्र ने पहले कभी अपने जीवन में नहीं देखी थी। उन्मादजनित पाशविकता पुतलियों में स्पष्ट अंकित थी। उसकी भौंहें ख़ूब घनी, एक-दूसरे से मिली हुई और ऐंठी हुई-सी थीं। काली हैट माथे पर काफ़ी झुकी हुई थी, और चेहरे की भयानकता की वृद्धि कर रही थी। उसके हाथ काले लबादे की आस्तीनों के बाहर लटके हुए थे, और किसी बृहदाकार शिकारी पक्षी के पंजों जैसे लग रहे थे।

ज़रा भी आवाज़, ज़रा भी हरकत वह नहीं कर रहा था,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

लेकिन उसके शरीर की स्थिति से ऐसा लग रहा था कि आक्रमण और आत्म-रक्षा के लिए वह बिलकुल तैयार है।

वह चट्टान-सा अटल लग रहा था। अजेय शक्ति जैसे उसके उस विकट रूप में मूर्तिमान् हो उठी थी।

ग्यारहवाँ अध्याय

नायब दारोग़ा गुरुमुखलाल

दिन का तीसरा पहर था। श्रीगंज थाने के नायब दारोग़ा मुंशी गुरुमुखलाल फ़तेहपुरी अपने क्वार्टर की बैठक में आराम से लेटे हुए हुक़्क़ा गुड़गुड़ा रहे थे। भारी-भरकम शरीर था, ख़ूब भरा हुआ बड़ा चेहरा, बड़ी बड़ी मूछें, विशाल तोंद। पचास से ऊपर हो चुके थे। पेन्शन का समय आया ही चाहता था। सबसे हँस-कर बोलते थे, और उनकी सफलता का श्रेय प्रधानतः उनकी इसी विशेषता को था। अपने भयानक रोष को वे उन्हीं मौक़ों के लिए रिज़र्व रखते थे जब वे तहक़ीक़ात करते थे और उसके सिलसिले में अपराधियों और संदिग्ध व्यक्तियों के बयान लेते थे। गाँव में पैदा हुए थे। अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। पुलिस में भर्ती होकर कांस्टेबिल बन गये। कुछ दिनों के बाद तरक़्क़ी पाकर हवलदार हो गये और फिर कई साल की कोशिश के बाद अपने इस महत्त्वपूर्ण पद पर आरूढ़ हुए। दारोग़ा साहब की ग़ैरहाज़िरी के दिनों में अस्थायी काल तक उनके सर्वथा वांछ-नीय पद की शोभा बढ़ाने के अतिरिक्त अब किसी तरक़्क़ी की आशा उन्हें नहीं थी। हौसला भी पस्त हो चुका था। बस यही मनोकामना थी कि नौकरी के बाक़ी दिन हँसी-ख़ुशी से कट जायँ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

धुँये का सुरसुरा छत की ओर फेंककर नायब महोदय दीवार की ओर ताकने लगे। ओठों पर खेलती हुई हलकी-सी मुस्कराहट मूँछों के परदे से बाहर झाँक रही थी। पुलाव बड़ा मज़ेदार था। पुलाव पकाने की कला में मुन्नू की मा बड़ी दक्ष है। कैसी नेक है मुन्नू की मा! शराब भी बहुत बढ़िया थी। आज सबेरे ही तो राजाराम दो बोतलें, एक उनके लिए और दूसरी दारोग़ा साहब के लिए, भेंट कर गया था। मेवे की चीज़ थी। बेशक बहुत अच्छी थी। राजाराम ने उसकी जो तारीफ़ की थी वह बेजा नहीं थी। काश दो बोतलें वह और दे जाता! इशारा तो किया ही जा चुका है, और राजाराम पुलिस की आँख पहचानता है।

निद्रा की एक लहर हवा में तैरती हुई आई और आँखों पर चक्कर काटने लगी। आँखें धीरे-धीरे बन्द हो गईं। मुंशी जी .खुर्राटे भरने लगे। सटक की निगाली हाथ से छूट गई।

कई मिनट बीत गये। एक कांस्टेबिल झपटकर अन्दर आया।

"नायब साहब! हुज़ूर!"

नींद उड़ गई। उन्होंने तुरन्त आँखें खोलीं।

"टंडन साहब आये हैं हुज़ूर!"

"कौन टंडन साहब?"

".खुफ़िया के बड़े अफ़सर।"

"मिस्टर टंडन! सुपरिंटेंडेंट टंडन! फ़ौरन चाय बनवाओ, अंडे और बकरे मँगवाओ, राजाराम से कई बोतलें माँग लाओ। जल्दी करो शीतलादीन! आज ख़ैरियत नहीं है। मिस्टर टंडन यहाँ आसानी से आनेवाले असामी नहीं हैं। चलो, चलो। मैं आता हूँ, फ़ौरन आता हूँ।"

कांस्टेबिल शीतलादीन तुरन्त चला गया। हड़बड़ाकर उठकर, कमीज़ और चप्पल पहनकर, मुंशी जी भी भागे।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

थाने की दालान में टंडन व्यग्रता से टहलता हुआ सोच रहा था—देहाती हलक़ों के ये थानेदार पूरे अफ़ीमची होते हैं। और जब अफ़सरों का यह हाल है, तब मातहतों की कौन कहे ? चुस्ती इन लोगों में नाम को भी नहीं होती, काहिली रग रग में भरी रहती है। हराम की रोटी डकारना और पैर फैलाकर आराम से ख़ुर्राटे भरना ! क़रीब ही में ऐसी संगीन वारदातें हो रही हैं और नायब साहब सो रहे हैं ! बड़े दारोग़ा साहब का कुछ पता ही नहीं है। दस मिनट हो गये, शीतलादीन अभी तक नहीं लौटा। कहीं बैठकर दम लगाने लगा होगा। उसने जेब से पाइप और पाउल निकाला और पाइप में तम्बाकू भरने लगा।

"आदाब अर्ज़ है हुज़ूर !" तेज़ी से सामने आकर नायब ने कहा।

"आदाब अर्ज़ ! कहिए नायब साहब, ग़फ़लत की नींद के मज़े ले रहे थे ?"

"नहीं तो हुज़ूर। सवेरे दूर के एक गाँव में चोरी के एक मामले की तहक़ीक़ात करने गया था। वहाँ वड़ी देर लग गई। दोपहर हो गई। अभी थोड़ी देर पहले वापस आया था और खाना खाकर पाँच मिनट के लिए लेटा ही था कि हुज़ूर के आने की ख़बर मिली। भागा चला आ रहा हूँ।"

"आपका यह बयान सही है या ग़लत, इससे मुझे कोई वहस नहीं। लेकिन आपकी लापरवाही का एक बहुत बड़ा सबूत मेरे पास है। आपके हलक़े में संगीन वारदातें हो रही हैं और आप कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं।"

"हुज़ूर का इशारा किस मामले की तरफ़ है ?"

"बाद में बतलाऊँगा। दारोग़ा साहब कहाँ हैं ?"

"एक ज़रूरी काम से शहर गये हैं। चाय बनवाऊँ ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"चाय-वाय रहने दीजिए । बस आप फ़ौरन वर्दी पहनकर तैयार हो जाइए। अपने मातहतों को भी तैयार होने का हुक्म दे दीजिए।"

"बेहतर है हुज़ूर।"

हवलदार माधवसिंह को आदेश देकर मुंशी जी तुरन्त घर की ओर भागे। पाइप सुलगाकर टंडन कश पर कश खींचने लगा।

वर्दी पहनकर मुंशी जी दस मिनट में वापस आगये।

"घोड़ा तैयार करवाऊँ हुज़ूर ?"

"नहीं, घोड़े की ज़रूरत नहीं। पैदल ही चलना होगा।"

"बेहतर है। कांस्टेबिलों को भी साथ ले चलना होगा ?"

"नहीं। बस उन लोगों से कह दीजिए कि तैयार रहें। जब ज़रूरत पड़ेगी बुलवाये जायेंगे।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर।"

और तब दो मिनट के बाद वे थाने से निकलकर एक ओर चल पड़े।

टंडन तेज़ी से चल रहा था। मुंशी जी हाँफते हुए उसका साथ दे रहे थे। टंडन एक-एक करके सारी बातें सुना रहा था। मुंशी जी मन ही मन बेहूदी घटनाओं को कोस रहे थे जिनके कारण टंडन का श्रीगंज में आगमन हुआ और उनकी शान्ति नष्ट हो गई।

"अब बतलाइए जनाब," सब कुछ सुना चुकने के बाद टंडन ने कहा, "ये वारदातें क्या संगीन नहीं हैं ? उनकी ओर क्या आप लोगों को ध्यान न देना चाहिए था ?"

"ठाकुर साहब के इन्तक़ाल की ख़बर अभी दोपहर को मुझे मिली थी। सुनकर बड़ा अफ़सोस हुआ। इस वक़्त रामेन्द्र-भवन जाने का इरादा था । दूसरी बातों के बारे में अर्ज़ है कि हमारा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कोई कुसूर नहीं था। उड़ती हुई ख़बरें हम लोगों ने सुनी थीं और हमारी इच्छा थी कि तहक़ीक़ात करें। लेकिन ठाकुर साहब ने हम लोगों से कह रक्खा था कि रामेन्द्र भवन के पास-पड़ोस के किसी मामले में हम तब तक दख़ल न दें जब तक वे ख़ुद हमें हिदायत न दें। इसलिए हम मजबूर थे।"

"वे आपके अफ़सर नहीं थे।"

"लेकिन वे मजिस्ट्रेट तो थे।"

"ख़ैर, जाने दीजिए। बहस फ़िज़ूल है। जो हुआ, सो हुआ।"

एक घंटे में वे मिलन-कुञ्ज में पहुँच गये। रजनी-कुटीर सामने थी। लेकिन इन्द्र का कहीं पता न था। रजनी भी दिखाई नहीं दे रही थी। अभी केवल पौने-पाँच बजे थे। वह बिलकुल ठीक समय पर पहुँचा था। फिर भी न तो इन्द्र का पता है, न रजनी का! दोनों कहाँ चले गये? बँगला सूना-सूना-सा क्यों लग रहा है? रजनी क्या सचमुच भाग गई? अगर ऐसी बात है तो बड़े अनर्थ की बात है। उससे अगर वह भेंट कर पाता, तो बहुत-सी ऐसी बातों का पता लगा लेता जिनकी ओर इन्द्र का ध्यान ही नहीं गया। इन्द्र को उस लड़की से लगाव है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। तो क्या इन्द्र की सलाह से ही उसने फ़रार हो जाने का निश्चय किया? नहीं, इन्द्र ऐसा नहीं कर सकता। रजनी को गिरफ़्तार न करने का वचन तो वह दे ही चुका है। लेकिन क्या सचमुच वह फ़रार हो गई है? मालूम तो यही होता है। बँगले के अन्दर चलकर देखना चाहिए।

नायब को फाटक पर छोड़कर, वह अन्दर गया। चारों ओर दृष्टि दौड़ा-दौड़ाकर वह ग़ौर से देखने लगा। मकान ख़ाली पड़ा था। सदर दरवाज़ा बन्द था। रजनी सचमुच फ़रार हो गई थी। ढाई बजे तक तो वह यहाँ मौजूद थी। अपनी आँखों से उसने उसे देखा था। उसी समय वह उससे भेंट कर लेता, लेकिन तब

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके पास समय नहीं था, कई बहुत ज़रूरी काम उसे करने थे। रजनी से किसी न किसी तरह सम्पर्क स्थापित करना ही होगा। बिना इसके काम न चलेगा।

घूम-घूमकर वह बँगले के प्रत्येक भाग का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा। कुछ देर तक वह इस काम में लगा रहा। आवश्यक बातें वह अपनी डायरी में दर्ज करता जाता था।

निरीक्षण का आवश्यक कार्य समाप्त कर चुकने के बाद वह बँगले से बाहर निकला और नायब को साथ लेकर रामेन्द्र-भवन की ओर रवाना हो गया।

मिलन-कुञ्ज से निकलकर वे कुछ गज़ ही आगे बढ़े थे कि उन्हें अपने पीछे किसी के दौड़ने की आहट मिली। रुककर, घूमकर टंडन पीछे की ओर देखने लगा। नायब को भी रुककर मुड़ना पड़ा। एक व्यक्ति दौड़ता हुआ उनकी ओर चला आ रहा था।

"वह कौन है ?"

"कोई देहाती है हुज़ूर !"

"देहाती तो है, लेकिन है कौन ?"

वह शिवदीन माली ही था जिसे तालाबवाली घटना ने अत्यधिक आन्दोलित कर दिया था। उनके सामने पहुँचकर वह हाँफता हुआ खड़ा हो गया।

"क्या है ?" टंडन ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखकर पूछा, "क्या बात है ?"

"रामेन्द्र-भवन का माली हूँ सरकार," ज़रा देर दम लेकर माली ने उत्तर दिया, "नाम शिवदीन है। इन्द्र बाबू ने आपको फ़ौरन बुलाया है।"

"कहाँ हैं वे ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"महतो के तालाब पर। ग़ज़ब हो गया हुज़ूर! महतो का तालाब ग़ायब हो गया।"

"तालाब ग़ायब हो गया! यह तुम क्या कह रहे हो?"

"बिलकुल सच कह रहा हूँ। आप ख़ुद जाकर देख लें।"

"वह तालाब कहाँ है?"

"उस पहाड़ी के पीछे," पीछे की ओर इशारा करके शिवदीन ने उत्तर दिया।

"महतो का तालाब मैंने देखा है हुज़ूर" नायब ने कहा।

"तो चलिए, चलें।"

"चलिये।"

फिर वे महतो के तालाब की ओर तेज़ी से चल पड़े।

रामेन्द्र-भवन के सुरम्य उद्यान में अरुणा शोक की मूर्ति बनी हुई, खोई हुई-सी टहल रही थी। चारों ओर उसे सूना-सूना सा लग रहा था और गहन शून्य उसके मन में भी जम कर बैठ गया था। दुख का घाव अभी बिलकुल ताज़ा था। आँखों के आँसू अभी अभी सूखे थे। मा पहले ही मर गई थी, आज पिता से भी नाता टूट गया। वह उसे इन्द्र को सौंप तो ज़रूर गये हैं, लेकिन—

शिवदीन एक ओर से आकर ज़मीन पर लद से बैठ गया। वह बदहवास था, हाँफ भी रहा था।

"क्या बात है शिवदीन?" उसके समीप जाकर अरुणा ने पूछा।

"गज़ब हो गया बीबी जी! महतो का तालाब उड़ गया!"

"उड़ गया! कैसी बात करते हो शिवदीन?"

"बिलकुल सच कह रहा हूँ बीबी जी! उड़ गया—बिलकुल उड़ गया! इन्द्र बाबू वहाँ गये हैं और अभी दारोग़ा जी के साथ टंडन बाबू भी गये हैं। न जाने क्या होनेवाला है! राक्षसों का राज दुनिया में क़ायम हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

महतो का तालाब उड़ गया ! इन्द्र और टंडन वहाँ गये हैं ! कुछ देर तक अरुणा चुपचाप खड़ी रही। फिर वह बाग़ से बाहर निकली और महतो के तालाब की ओर तेज़ी से चल पड़ी।

बारहवाँ अध्याय

तालाब पर

पतलून की जेब में हाथ डालकर इन्द्र ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया। लेकिन बनर्जी ने रिवाल्वर की ओर दृष्टि भी नहीं डाली। वह बराबर इन्द्र के चेहरे की ओर देखता रहा। एक लम्बे-तगड़े प्रेत की तरह वह मूर्तिवत् खड़ा था।

यह बिलकुल स्पष्ट था कि वह घोर पागल है और साथ ही ख़तरनाक भी। यह देखने के लिए किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं थी कि उसकी दशा उस डाकगाड़ी की सी हो गई थी जिसका इंजन उसके चालक के क़ाबू के बाहर हो गया हो।

बहुत धीरे से इन्द्र ने अपने रिवाल्वर का घोड़ा खींचा। वह रिवाल्वर ही शायद उस साँड़ जैसे व्यक्ति से उसकी रक्षा कर सकेगा। उस पूर्ण नीरवता में रिवाल्वर के घोड़े की खटक साफ़ सुनाई दी। फिर भी बनर्जी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। बड़ी भयानक लग रही थी उसकी वह निश्चल, विकट तटस्थता, और उसके पागलपन का एक और प्रमाण उपस्थित कर रही थी।

उसकी उस स्थिर, चुभती हुई दृष्टि के सामने सँभले रहना इन्द्र के लिए अत्यन्त कठिन हुआ जा रहा था। अगर वह एकाएक उसके ऊपर हमला कर बैठता या हमला करने के लिए झपटता, तो इतना बुरा न होता। वह भी लड़ने को तुरन्त तैयार

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हो जाता। किन्तु उसकी वह स्थिर, निश्चल दृष्टि तो उसे शक्तिहीन किये दे रही थी।

ख़ैर, रिवाल्वर तो उसके पास है ही। इस दृष्टि से वह अपने प्रतिद्वन्द्वी से तगड़ा है। लेकिन अन्य बातों में वह विवश है, लाचार है। एक ऐसे व्यक्ति पर वह गोली कैसे चला सकता है जो निस्तब्ध, निश्चल खड़ा हुआ केवल उसे घूरकर देख रहा है? यह तो वीरत्व के विरुद्ध है। और टंडन के आने के समय तक वह उसे रोके भी कैसे रहेगा? इसके अतिरिक्त सम्भव है टंडन उसे गिरफ़्तार करना भी पसंद न करे, क्योंकि उसके विरुद्ध कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है।

कुछ न कुछ किये विना रह सकना उसके लिए असम्भव हो गया। बनर्जी की आँखें की विजली उसकी हुलिया तङ्ग किये दे रही थी। तनकर, हाथ उठाकर, उसने अपना रिवाल्वर बनर्जी के सीने की ओर ताना।

"क्या चाहते हो बनर्जी?" उसने कड़ककर पूछा।

"मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"

बड़ी शान्ति और निश्चिन्तता से बनर्जी ने उत्तर दिया, जैसे उसने यह समझ रक्खा हो कि प्रश्नकर्ता को उसका उत्तर पहले ही से मालूम था और उसने वह प्रश्न यों ही बेमतलब किया था। ऐसा जान पड़ा जैसे वह विलकुल निरुद्देश्य भाव से बोला हो। उसका कंठ-स्वर ख़ूब मँजा हुआ था और उसमें उच्चतम शिक्षा और संस्कृति का रंग था।

बनर्जी की दृष्टि इन्द्र के चेहरे से हट गई। इन्द्र ने शान्ति की साँस ली। बनर्जी गढ़े की ओर ताकने लगा। रिवाल्वर के प्रति उसकी अवहेलना अत्यधिक प्रभावोत्पादक थी। भय व चिन्ता की किंचित्-मात्र छाया भी उसके अन्दर नहीं थी। वह अपने ही में पूर्णतया केन्द्रीभूत था, और किसी बात से उसे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कोई प्रयोजन नहीं रह गया था। पहाड़ी से उतरकर वह तालाब के किनारे पहुँचा। इन्द्र भी उसके साथ था।

"हाँ, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है," गढ़े को ग़ौर से देखते हुए उसने कोमल स्वर में कहा, "तैंतीस मिनट, केवल तैंतीस मिनट लगे। और केवल एक तार ने काम कर दिया। कैसी अद्भुत बात है! लेकिन यह तो मैं जानता ही था। पहली मशीन तैयार करने के पहले ही यह मुझे मालूम हो गया था। और यह ऐसी बात है जिसमें मैं अन्य लोगों से बहुत आगे बढ़ गया हूँ। कोई वैज्ञानिक मेरा मुक़ाबिला नहीं कर सकता। केवल तैंतीस मिनट में और केवल एक तार के द्वारा महतो का तालाब एक बार फिर अपनी प्रारम्भिक अवस्था में पहुँच गया! बड़े कमाल की बात है! वाह! अब इसमें ज़रा भीं सन्देह नहीं कि संसार का संहार करने में मैं अवश्य सफल होऊँगा! कोई शक्ति मेरे हाथों से संसार की रक्षा नहीं कर सकेगी।"

बनर्जी ने अपना सिर उठाया। उसकी दृष्टि पहाड़ियों के उस पार फैले हुए प्रदेशों की ओर दौड़ गई। फिर उसने अपने सूखे हुए हाथ ऊपर उठाये। उस समय वह ऐसा लगने लगा जैसे वह कोई महान् पुजारी हो और बलिदान के लिए चुने गये जीवों को अन्तिम बार आशीर्वाद दे रहा हो।

"संहार अवश्य होगा! इसकी व्यवस्था हो चुकी है। अपनी दुष्टताओं और पापों का बोझ लिये हुए यह संसार नष्ट हो जायगा। बहुत दिनों की बात नहीं है। केवल कुछ दिनों के बाद ही इस दुनिया की दशा ठीक वैसी हो जायगी जैसी आज इस तालाब की हो गई है। केवल धूल-गर्द, अणु-परमाणु ही बच रहेंगे। संसार का और उसकी बेहूदा सभ्यता का नाम-निशान भी बाक़ी नहीं रहेगा। संहार होगा, अवश्य होगा।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके समीप जाकर इन्द्र ने उसकी बाँह पर रिवाल्वर से हलका धक्का दिया।

"यह उचित होगा," इन्द्र ने कहा, "कि अब तुम अपने घर वापस जाओ।"

"नहीं," बनर्जी ने लापरवाही से उत्तर दिया, "घर मैं नहीं जाऊँगा। मेरे कोई घर नहीं है और अभी मुझे बहुत कुछ करना है, रात होने से पहले ही बहुत कुछ कर लेना है। रात! शीघ्र ही मैं एक ऐसी रात की रचना कर दूँगा जो कभी समाप्त न हो सकेगी।"

घूमकर वह इन्द्र के सामने खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर एक विचित्र प्रकाश आ गया और उसकी रुक्ष निर्जीव-सी त्वचा और भी रुक्ष और निर्जीव लगने लगी।

"सुन रहे हो?" टूटती हुई लकड़ी की तरह कड़कड़ाते हुए स्वर में उसने कहा। "संसार का अन्तकाल निकट आता जा रहा है। मैं ही उसे निकट ला रहा हूँ। मैं ही संहार का संचालन कर रहा हूँ। इस महत्त्वपूर्ण काम के लिए ईश्वर ने मुझे ही चुना है। मैं वीरभद्र हूँ; महाकाल मेरा सहायक है। मैं भगवान् शंकर का प्रधान गण हूँ। उन्हीं से मुझे आदेश मिला है। संसार अब अपनी दुष्टता की चरम सीमा तक पहुँच गया है। जीवित रहने के योग्य अब यह नहीं रह गया है। इसका संहार करना अब परम आवश्यक हो गया है; अनिवार्य हो गया है।

"पाप का राज्य सर्वत्र स्थापित हो गया है। क्या शहर क्या देहात; हर जगह दुष्टता का बोलबाला है। अपराध और हिंसा की हर जगह तूती बोलती है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को कच्चा खा जाना चाहता है। युद्ध आये दिन कहीं न कहीं छिड़ा रहता है। शान्ति कहीं नहीं है। लोग शैतान को पूजने लगे हैं, ईश्वर को बिलकुल भूल गये हैं। धार्मिकता की हँसी उड़ाई जाती है,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पाप वृत्ति सराहनीय बन गई है। जप, तप, पूजन का कोई महत्त्व नहीं रहा; 'खाओ, पियो, मौज उड़ाओ' सर्वमान्य सिद्धान्त बन गया है। जहाँ देखो, रस-रंग का दौरदौरा है। ईश्वर के महान् प्रतिनिधियों और उनके महान् सन्देशों की अब मनुष्य को ज़रूरत नहीं रही। वह अब अपने को सब कुछ समझने लगा है। किन्तु शीघ्र ही उसे मालूम हो जायगा कि यह केवल उसका भ्रम था। शीघ्र ही उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि सर्वशक्तिमान् विधाता के सामने उसकी कोई सत्ता नहीं।

"युद्ध-सामग्रियाँ तैयार करनेवाले कारख़ाने दिन-रात पूरे ज़ोर-शोर से चल रहे हैं और करोड़ों आदमी उनमें काम कर रहे हैं। युद्ध का रथ अपनी सम्पूर्ण शक्ति से चल रहा है और ध्वंस तथा विनाश के अभूतपूर्व दृश्य रणक्षेत्रों में उपस्थित कर रहा है। आक्रमणकारी लड़ाकू राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों को पीसे डाल रहे हैं और दोहाई दे रहे हैं उच्चतम सिद्धान्तों की। किन्तु अन्तर्यामी को वे धोके में नहीं डाल सकते। उनके सामने यह ढोंग, यह छल नहीं चल सकता।"

एक क्षण के लिए वह रुक गया और फिर उसके स्वर में तूफ़ानी बादलों की-सी तीव्र, गम्भीर घनघनाहट आगई। अत्यधिक जोश के कारण उसके चेहरे की नसें फड़कने लगीं।

"यह अन्धेर अब देवताओं को असह्य हो उठा है। भगवान् शंकर की समाधि टूट गई है; उनका भयानक रोष जाग पड़ा है। संसार के विकास-क्रम का अन्त हो चुका है। उन्नति के पथ से अलग होकर अब वह अवनति के मार्ग पर दौड़ने लगा है। दिन-प्रति-दिन यह बात स्पष्ट होती जा रही है। अवनति की गति दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है। जिन महान् उद्देश्यों को लेकर उसकी उत्पत्ति हुई थी, उनकी पूर्ति की ओर से उसने मुख मोड़ लिया है और उसका अस्तित्व अब विधाता को पूर्णतया असह्य

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हो उठा है। समस्त ग्रहों में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिसने अपने रचयिता के प्रति अवहेलना प्रकट की है और प्रतिकार की विकट अग्नि-परीक्षा का सामना अब उसे करना ही पड़ेगा। पतितपावन भगवान् बहुत दिनों तक उसे क्षमा प्रदान करते रहे, किन्तु परिणाम सदैव उलटा ही हुआ। उनकी असीम करुणा को, अपार दया को उसने अपनी जीत समझी। उसका हौसला बराबर बढ़ता ही गया। पाप के मार्ग का परित्याग लोभवश या दम्भवश वह नहीं कर सकी। इसका परिणाम और दण्ड अब उसे भुगतना ही पड़ेगा। अनादि शम्भु के त्रिशूल-प्रहार से अब वह किसी तरह बच नहीं सकती। प्रलयकाल अब उसके लिए आया ही चाहता है। पूर्णतया नष्ट और ध्वस्त होकर, वह अपनी आदि अवस्था को प्राप्त हो जायगी; प्रारम्भिक वाष्प-रूप में परिणत हो जायगी। और यह महत्त्वपूर्ण कार्य करूँगा मैं, रमणीरंजन बनर्जी। मैं हूँ सदाशिव का तुच्छ सेवक वीरभद्र, भगवान् ब्रह्मा तथा भगवान् विष्णु का मनोनीत प्रतिनिधि, समस्त देवताओं का कृपा-पात्र, प्रिय मित्र। मैं अजर हूँ, अमर हूँ। मेरी शक्ति अपरिमित है, अपार है, अतुलनीय है। पृथ्वी को अब केवल कुछ घंटों ही तक जीवित रहना है। शीघ्र ही अन्य संसारों के नक्षत्र-निरीक्षक एक अद्भुत दृश्य देखेंगे। इस भूमंडल का प्रारम्भिक वाष्प-रूप में पुनः परिणत होना सचमुच कैसा अद्भुत लगेगा!"

इन्द्र का शरीर अकड़ गया। उसे अनुभव हुआ कि बनर्जी का कथन प्रलाप-मात्र नहीं है। उसके शब्द अर्थहीन नहीं थे। उनमें गूढ़ अर्थ था, भयानक तत्परता थी, विकट उद्देश्य था और यह सब अस्वीकार करना बुद्धिमानी के सर्वथा विपरीत था। जो कुछ उसने कहा था वह सब वह करना भी चाहता था और शायद कर भी सकता था। मरुभूमि में जो अज्ञेय, रहस्यपूर्ण प्रदर्शन उसने किये थे उनसे यह स्पष्ट सिद्ध होता था कि उसने

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ऐसी भयानक शक्तियाँ उत्पन्न कर ली हैं जिनकी अभी तक केवल कल्पना ही की जाती थी और जिनका उत्पन्न किया जा सकना सर्वथा असम्भव प्रतीत होता था।

वह शक्ति-सम्पन्न था, प्रतिभासम्पन्न था, यह बात पिछले कुछ सप्ताहों में बीसियों बार वह प्रमाणित कर चुका था। उसका धर्मोन्माद उसे धोका नहीं दे रहा था। अपने भयानक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकने के लिए उसके पास अपार मानसिक बल था।

टंडन आ गया है या नहीं, इस बात का पता लगाने के लिए इन्द्र इधर-उधर देखने लगा। उसके आगमन का कोई चिह्न कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अगर अब वह शीघ्र ही नहीं आ पहुँचता, तो केवल एक ही उपाय से उसकी रक्षा हो सकेगी। उसकी वह हथेली जिसमें रिवाल्वर दबा हुआ था पसीने से तर हो गई।

बनर्जी ने तालाब के उखड़े-बिखड़े पेंदे की ओर इशारा किया।

"उसे देख रहे हो? वही मेरा पहला महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। और यह प्रयोग किया गया है उस महान् दिवस के लिए जो शीघ्र ही आनेवाला है। केवल एक तार ने यह ज़बरदस्त काम कर दिखाया और एक छोटी-सी मशीन के द्वारा उत्पन्न की हुई शक्ति काम में लाई गई। मोटर-कार के मेगनेटो से वह मशीन बड़ी नहीं थी। और वह केवल चौबीस घंटे तक चलती रही थी।

"मेरे कारख़ाने में बहुत बड़ी-बड़ी मशीनें हैं, और वे वर्षों स काम कर रही हैं। उनकी बड़ी चर्ख़ियाँ दिन-रात निरन्तर तेज़ी से चक्कर काटती रहती हैं। संसार के ध्वंस भर को शक्ति एकत्र हो चुकी है। उस संहारिणी शक्ति को छोड़ते ही यह विशाल भूमंडल छिन्न-भिन्न होकर अणु-परमाणुओं में परिणत हो जायगा और फिर वे अणु-परमाणु वाष्प के रूप में बदल जायँगे।

"तार का केवल लच्छा तालाब के बीच फेंका गया। बहुत

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

थोड़ी शक्ति उसके द्वारा छोड़ी गई और महतो का तालाब साफ़ ग़ायब हो गया!

"दुनिया के लालबुझक्कड़ गम्भीरतापूर्वक सिर हिला-हिलाकर माथापच्ची करेंगे। वे कहेंगे कि ज़मीन के अन्दर की उष्णता एकाएक उभर आई होगी, तालाब गर्म हो उठा होगा और उसका सारा जल खौलकर, भाप बनकर उड़ गया होगा! मध्यरात्रि से उषाकाल तक के थोड़े से समय में ऐसा हो सकना असम्भव है यह वे न मानेंगे। भूमि के गर्भ से उष्णता का अकारण अकस्मात् उभर आना असम्भव है, यह भी वे स्वीकार नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त वे कर ही क्या सकते हैं?

"बड़े गर्व से समस्त संसार के सामने वे अपने मत की घोषणा करेंगे, यद्यपि उनके मन में उसकी सत्यता के विषय में सन्देह अवश्य ही बना रहेगा। उनके छोटे दिमाग़ इस बात की सम्भावना में किसी तरह विश्वास नहीं कर सकेंगे कि यह कठिन कार्य भी मनुष्य की शक्ति के परे नहीं है। इस बात में वे किसी तरह विश्वास न कर सकेंगे कि एक वैज्ञानिक देवताओं की कृपा से एक ऐसी शक्ति उत्पन्न करने में सफल हुआ है जो गुरुत्वाकर्षण-शक्ति और संयोग-शक्ति को बिलकुल नष्ट कर देती है। किन्तु कोई माने या न माने, अशोक की गुफाओं में यह महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ है। इसी के लिए मैंने—भगवान् रुद्र के इस किंकर ने—जन्म लिया था। उन दो महान् निस्सीम शक्तियों को नष्ट कर देना कोई साधारण काम नहीं है।

"कुछ घंटों के अन्दर ही गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का अन्त हो जायगा, संयोग-शक्ति समाप्त हो जायगी। महतो के तालाब के साथ यही बात हुई है। उसके परमाणुओं का संयोग समाप्त कर दिया गया। उसका भार शून्य के नीचे तक घटा दिया गया। वह वायु से भी अधिक हलका हो गया। वह ऊपर उठने लगा! गैस

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

से भी अधिक सूक्ष्म होकर वह छिन्न-भिन्न हो गया। उसी महाशून्य में वह विलीन हो गया जिससे उसकी उत्पत्ति हुई थी। और अब शीघ्र ही पृथ्वी भी इसी तरह छिन्न-भिन्न होकर महा-शून्य में विलीन हो जायगी।"

रुक कर, वह इन्द्र की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा। उसके सूखे हुए गालों में हलकी-सी सुर्ख़ी आ गई। उस स्वरूपवान्, वलिष्ठ युवक को वह कई क्षणों तक अत्यधिक सन्तोष से देखता रहा।

"लेकिन संहार से पहले एक परम आवश्यक क्रिया सम्पादित होनी है। समस्त जीवों-सहित पृथ्वी का विध्वंस होगा। किन्तु इसे चेतावनी भी मिल जानी चाहिए। यह अधिक अच्छा होगा कि दुनिया के निवासी पाप-गर्त्त में पड़े पड़े न मरें। पापियों को पश्चात्ताप करने का एक अन्तिम अवसर मिलना चाहिए। दयानिधि से दया की भिक्षा उन्हें अब भी मिल सकती है। उनका द्वार सदैव खुला रहता है, कभी किसी के लिए बन्द नहीं होता। लेकिन समय बहुत थोड़ा है, और वह तेज़ी से बीतता जा रहा है। जो हो, चेतावनी अवश्य दी जायगी और समस्त संसार में उसकी घोषणा करने का दुर्लभ सम्मान तुम्हें प्रदान करने का निश्चय किया गया है।

"मैं तुम्हें अशोक की गुफाओं में ले चलूँगा और वहाँ सब कुछ तुम अपनी आँखों से देखोगे। तुम्हारे सामने उन शक्तियों का मैं प्रदर्शन करूँगा; और तब तुम्हें ज्ञात हो जायगा कि मेरा कथन अक्षरशः सत्य है। मेरे एक संहारक यन्त्र की किरणों के बाहरी प्रभाव-क्षेत्र में तुम केवल दो सेकेंड तक खड़े रहोगे—बस केवल दो सेकेंड तक। तुम जल जाओगे। तुम्हारी खाल उधड़ जायगी, तुम्हारे बाल ग़ायब हो जायँगे। अपने ही शरीर में तुम उस शक्ति का प्रभाव अनुभव करोगे जो संसार का विध्वंस करने

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

जा रही है और गुप्त मार्गों से मैं तुम्हें फिर बाहर पहुँचा दूँगा। संसार को अपनी कथा सुनाने के लिए तुम रामेन्द्र-भवन के फाटक तक पहुँचा दिये जाओगे। समस्त मानव-समाज के लिए तुम एक मूर्तिमान् चेतावनी, एक जीवधारी पत्र बन जाओगे और उन गुप्त, विशाल गुफाओं में, जहाँ मेरी मशीनें हर समय गर्जन करती रहती हैं, तुम फिर नहीं पहुँच पाओगे—क्योंकि तुम अन्धे बन जाओगे !"

गोधूलि के परदे में छिपते हुए आकाश की ओर एकटक ताकता हुआ और भावोन्माद से किंचित् काँपता हुआ बनर्जी कई क्षणों तक निस्तब्ध, मूर्तिवत् खड़ा रहा। उसकी आत्मा आध्यात्मिक आह्लाद के उच्चतम शिखर पर पहुँच गई थी। अपार स्फूर्ति उसके रग-रग में दौड़ रही थी। कल्पना के सहारे वह अपना महान् प्रयोग सफल होते देख रहा था।

उसके विकृत मस्तिष्क में यह अटल विश्वास, कि वह स्वयं वीरभद्र है और स्वयं सदाशिव ने उसे इस पापग्रस्त, अवनतिशील संसार का संहार करने का आदेश दिया है, पूर्णतः सजग हो उठा था। अनादि शम्भु के वचन वह जैसे पुनः सुन रहा था, उनके निकट जैसे अपने को पुनः पा रहा था। ऐसा विकट था उसका धर्मोन्माद !

इन्द्र को मिचली-सी आने लगी। उसका सिर चकराने लगा। उसकी उपस्थिति के प्रति बनर्जी की उदासीनता, जैसे उसने समझ रक्खा हो कि उसका शिकार उसके जाल में पूरी तरह फँस गया है और बच निकलने का कोई मार्ग अब उसके लिए बाक़ी नहीं बचा है, उसके उत्तेजित मन में भय का संचार करने लगी। वह घबरा उठा। सारी बातें उसे स्वप्नवत्-सी, दुष्कल्पनाजनित-सी लगने लगीं।

उस भाव का उसके मन में जम जाना स्पष्टतः अत्यधिक हानिकर था। उस पागल के जाल में क्या वह सचमुच पूरी तरह फँस

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गया है ? बचाव का कोई उपाय क्या वास्तव में बाक़ी नहीं है ? नहीं, ऐसी बात नहीं। जब तक उसके पास रिवाल्वर है, यह तर्क प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ। भय का भाव उसके हृदय से तुरन्त ग़ायब हो गया और उसे फिर से साहस आगया।

उसे एक स्वर्ण सुयोग अपने सामने दिखाई देने लगा। उसने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि बनर्जी ने अशोक की गुफाओं के गुप्त द्वारों और मार्गों का पता लगा लिया है और उसकी भयानक मशीनें पहाड़ियों के वक्ष में कहीं काम कर रही हैं। अनेक पुरातत्त्ववेत्ता अनेक बार उन गुफाओं में गये थे, लेकिन उन मशीनों के अस्तित्व के बारे में उन्हें कभी कुछ पता नहीं लगा था। अगर उन गुफाओं में वे मौजूद होतीं, तो वे उन्हें अवश्य देख लेते। तब कहाँ है बनर्जी का शैतानी कारख़ाना ?

उसने शायद गुफाओं की एक अन्य श्रेणी का पता लगा लिया है जो सर्वविदित गुफाओं के पीछे या नीचे है। वहीं अपनी मशीनें लगाकर वह निष्कंटक भाव से कार्य-संचालन करता है। अगर किसी तरह वह उन गुप्त गुफाओं में पहुँच सके, तो काम बन जाय।

बनर्जी उसकी हत्या नहीं करना चाहता। यह विचित्र बात है, किन्तु प्रत्येक पागल में कोई न कोई विचित्रता अवश्य होती है। यह सम्भव है कि उसके द्वारा उसकी हत्या हो जाय, लेकिन जानबूझ कर वह ऐसा कदापि नहीं करेगा। करोड़ों मनुष्यों की हत्या वह कर सकता है, लेकिन उसे वह हर्गिज़ नहीं मारेगा। इसका कारण यह है कि उससे वह एक दूसरा ही काम लेना चाहता है।

अपनी योजना में उसे भी वह वैसा ही महान् स्थान प्रदान कर रहा है जैसा महान् स्वयं उसका स्थान है। एक महान् सन्देश-वाहक के रूप में, अन्तिम पैग़म्बर के रूप में, मुख में चेतावनी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

और शरीर पर ज्वलंत प्रमाण लेकर, वह संसार के सामने भेजा जायगा। पापियों से पश्चात्ताप करने की अपील करके उसे अपने महान् पद के महान् उत्तरदायित्व का पालन करना पड़ेगा।

वहाँ तक परेशानी की कोई बात नहीं। अपनी मशीनों के सामने जब तक वह उसे खड़ा नहीं कर लेगा तब तक उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचायेगा। ख़तरा तो वास्तव में उसके बाद ही उपस्थित होगा। तब काम करने का मौक़ा आयेगा। उस समय आत्म-रक्षा क्या वह नहीं कर सकेगा ? क्यों नहीं कर सकेगा ? बनर्जी से वह कमज़ोर नहीं पड़ेगा। उसके ऊपर वह आक्रमण कर देगा, पूरी ताक़त से लड़कर उसे ज़ेर करने की कोशिश करेगा, और अगर ज़रूरत होगी तो उसे मौत के घाट उतार देगा। उस समय तक उन गुफाओं का सारा भेद उसे अवश्य मालूम हो जायगा। उस ख़तरे का भी वह अंदाज़ा लगा लेगा जो संसार के सिर पर मँडरा रहा है। और एक बार अन्दर पहुँच जाने के बाद बाहर निकलने का मार्ग भी किसी न किसी तरह मिल ही जायगा।

जो हो, चाहे जिस तरह हो, गुफाओं के भेदों का पता तो लगाना ही होगा। एक मशीन नष्ट करने में तो वह सफल हो ही चुका है। विद्युत्-प्रवाह का एक गहरा धक्का खाने के अतिरिक्त उस काम में उसे कोई कष्ट भी नहीं हुआ था। अगर ईश्वर की दया हुई, तो अन्य मशीनों को भी वह काफ़ी तोड़-फोड़ डालेगा और बनर्जी को उस समय तक उलझाये रक्खेगा जब तक टंडन से पुनः सम्पर्क क़ायम न कर लेगा। अगर यह सब करने में वह सफल हो सका तो मरुभूमि में बड़े मज़ेदार दृश्य देखने को मिलेंगे। गुफाओं पर हमला करने के लिए सदर से तेज़ मोटरों के द्वारा मँजे हुए जवानों का एक दल टंडन बुला लेगा।

अगर किसी तरह काम नहीं चलेगा, तो गुफायें बारूद और

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

डाइनामाइट से उड़ा दी जायँगी। परिस्थिति की गम्भीरता से परिचित हो जाने के बाद अधिकारीगण चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे। माँगने पर भी बनर्जी को पनाह नहीं मिलेगी। तब तक न दम लिया जायगा न दम लेने दिया जायगा जब तक बनर्जी के पैशाचिक आविष्कार पूरी तरह नष्ट न हो जायँगे।

मामले का एक दूसरा पहलू भी है। अगर बनर्जी के साथ वह चुपचाप गुफाओं के अन्दर चला जाय, तो यह भी सम्भव है कि वह कभी जीता-जागता बाहर न निकल सके। एक बटन दबाने ही से उसका ख़ात्मा हो सकता है। उसका वह बलिदान बिलकुल बेकार साबित होगा। दुनिया के भाग्य का फ़ैसला हो जायगा, और ख़तरे की पूर्व सूचना भी उसे नहीं मिल पायेगी।

टंडन क्यों नहीं आया? वह आगया होता तो बनर्जी जैसे विशालकाय नर-पशु से निपट सकना आसान हो जाता। शिवदीन को गये बड़ी देर हो गई और डर के मारे वह दौड़ता-भागता गया था।

तब उसे रिवाल्वर की फिर याद आई। इस याद के आते ही आशा फिर उसके हृदय में चमक उठी। उसे भूल जाने के लिए वह अपने को कोसने लगा। जब तक रिवाल्वर उसके हाथ में है तब तक तो बनर्जी उससे जीत नहीं सकता, बाद में चाहे जो हो। स्वर्ण-सुयोग अपना द्वार उसके लिए खोल रहा था। थोड़े से साहस, थोड़ी सी दृढ़ता से काम लेने से मरुभूमि की बिभीषिकाओं का सदैव के लिए अन्त हो जायगा।

रमणीरंजन बनर्जी संसार का सर्वश्रेष्ठ आविष्कारक हो सकता है, उसका मस्तिष्क इस या समस्त युगों का सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क हो सकता है—लेकिन उसका शरीर गोली-प्रूफ़ नहीं हो सकता। गोली मार देने का भय दिखाकर अगर वह उसे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इस बात के लिए मजबूर कर सके कि वह उसे गुफाओं में ले जाकर अपनी मशीनें दिखा दे और उनके सञ्चालन के सिद्धान्त समझा दे, तो बड़ा अच्छा हो। बनर्जी आगे आगे चलेगा और वह रिवाल्वर ताने हुए उसके पीछे पीछे चलेगा। इस तरह बनर्जी भागने का कोई मौक़ा न पा सकेगा।

गुफाओं के अन्दर पहुँचने पर अगर कोई गड़बड़ी पैदा हो जायगी और उसकी हत्या कर डालने के विचार से अगर बनर्जी उसके ऊपर हमला कर बैठेगा, तो गोली चलाकर वह उसे ख़त्म कर देगा। कोई उसे बुरा न कहेगा, और कोई मामला भी उसके विरुद्ध नहीं चलाया जा सकेगा। इसके विपरीत ख़तरे में पड़ी हुई दुनिया उसके प्रति कृतज्ञता ही प्रकट करेगी, उसकी सराहना ही करेगी।

बस यह योजना बहुत ठीक है। इसी को काम में लाना चाहिए। अगर यह सफल हो गई, तो सारी समस्यायें बड़ी आसानी से हल हो जायँगी और संसार उस नर-पिशाच के भयंकर षड्यन्त्रों से सदैव के लिए छुटकारा पा जायगा।

"बनर्जी!" उसने कड़ककर कहा—"अपने हाथ ऊपर उठाओ!

बनर्जी घूमकर उसकी ओर देखने लगा। अब भी वह हवा में उड़ रहा था, स्वप्न-लोक में विचरण कर रहा था। उसकी आँखों और आवाज़ के भावों को वह समझ नहीं सका।

"तैयार हो?" बनर्जी ने पूछा।

"हाथ उठाओ!"

"चलो, मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा।" वह उसकी ओर बढ़ने लगा। रिवाल्वर के प्रति यह पूर्णतः उदासीन था, ख़तरे की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। सुशिक्षा तथा संस्कृति के रंग

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

में रँगे हुए उसके कंठ-स्वर में भय की किंचित्-मात्र छाया नहीं थी।

"हाथ उठाओ! पीछे हटो! मैं कहता हूँ, पीछे हटो—नहीं तो गोली चला दूँगा!"

इन्द्र की आवाज़ अत्यधिक कर्कश हो गई थी, शेर की तरह वह गरज उठा था। लेकिन बनर्जी बढ़ता ही आ रहा था। वह इस तरह हाथ फैलाये हुए था जैसे उसकी बाँह पकड़कर उसे मना लेना चाह रहा हो।

इन्द्र ने उसे अन्तिम बार चेतावनी दी।

"पीछे हट जाओ बनर्जी!" वह गरज उठा, "पीछे हट जाओ, वर्ना सारी गोलियाँ तुम्हारे ऊपर चला दूँगा!"

बनर्जी रुका नहीं। वह लापरवाही से आगे बढ़ता ही गया। रिवाल्वर की नली से वह केवल पाँच गज़ की दूरी पर था। इन्द्र ने गोली चला दी। ठीक दिल पर निशाना साधकर उसने रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया। ज़ोर की आवाज़ हुई, और उसकी प्रतिध्वनि दिशाओं में गूँज उठी। बनर्जी ज़रा-सा लड़खड़ा गया। इन्द्र ने देखा कि गोली उसके सीने पर लगी। गोली के धक्के ने उसे कुछ इंच पीछे ढकेल दिया। किन्तु दूसरे ही क्षण सँभलकर वह फिर आगे बढ़ने लगा। उसके चेहरे पर आश्चर्य व्यक्त हो गया।

"पीछे हट, ओ पागल!" इन्द्र चिल्लाया।

पर कोई नतीजा नहीं हुआ। तब उसने फिर गोली चलाई। फिर तेज़ चमक हुई और गोली की तीव्र आवाज़ की प्रतिध्वनि सूखे तालाब में भनभनाती हुई गूँजने लगी। गोली के आघात से बनर्जी फिर लड़खड़ा गया। रोष के भूत उसके विशाल मस्तिष्क में फिर जागकर ताण्डवनृत्य करने लगे। भयंकर घृणा का वही पुराना भाव फिर उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में चमकने

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

लगा। उन्मादजनित विकट उत्तेजना फिर उसके चेहरे पर व्यक्त हो गई। इन्द्र का गला पकड़ लेने के लिए दोनों हाथ फैलाकर वह तेज़ी से आगे बढ़ने लगा।

अपने को क़ाबू में रक्खे रहना अब इन्द्र के लिए असम्भव हो गया। उसे दबना ही पड़ा। गोली चलाता हुआ वह पीछे हटने लगा। दो—तीन—चार—पाँच—छः—सात। बाक़ी गोलियाँ भी उसे लगीं, लेकिन वह दैत्य-सा मनुष्य उसी तरह लापरवाही से, सुव्यवस्थित गति से आगे बढ़ता रहा। इन्द्र ने देखा कि जोश से थर्राती हुई उसकी उँगलियों और उसकी गर्दन के बीच केवल एक .फ़ुट का फ़ासला बाक़ी रह गया है। उसके चेहरे पर निशाना साधकर उसने घोड़ा दबाया, लेकिन गोली का ख़ाना ख़ाली था। एक हलकी-सी झनझनाहट रिवाल्वर में गूँजकर रह गई। और तब—ज़मीन इन्द्र के पैरों के नीचे से खिसकने लगी। उसके पैर फिसले, और वह लुढ़कता हुआ तालाब में गिरने लगा।

उसका शरीर एक बार उछला। उसके कन्धों में सख़्त चोट लगी। फिर वह तालाब की ढलुई दीवार पर लुढ़कने लगा।

धूल उड़ने लगी। भाप की तरह हवा में तैरती हुई वह ऊपर उठती गई, बराबर ऊपर उठती गई। काफ़ी उँचाई पर पहुँचकर, अति सूक्ष्म होकर, वह अदृश्य हो गई।

पचास .फ़ुट नीचे पहुँच जाने पर इन्द्र किसी तरह रुका। वह बेदम हो गया था और बुरी तरह हाँफ रहा था। उसकी आँखों, मुख, नथुनों और फेफड़ों में दम घोटनेवाली धूल भर गई थी। वह खाँसता-खखारता हुआ उठने की कोशिश करने लगा। धूल फिर उड़ने लगी। वह लड़खड़ाया, सँभला, फिर लड़खड़ाया। इस तरह किसी तरह वह उठ खड़ा हुआ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

धूल के कारण कुछ देख पाना कठिन हो रहा था। धूल के निकल जाने की वह प्रतीक्षा करने लगा। ज़रा देर में वह निकल गई। अब चारों ओर का दृश्य उसे दिखाई देने लगा। उसे रुकने का आदेश देता, आवाज़ें लगाता, हाथ हिलाता हुआ और लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ बनर्जी चला आ रहा था। उसके पैर ज़रा भी फिसल नहीं रहे थे, बराबर उसका शरीर सँभला हुआ चल रहा था। इन्द्र को बड़ा आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि तालाब की दीवारें उन किरणों के प्रभाव से ख़ूब चिकनी हो गई थीं। पैर उन पर फिसले बग़ैर नहीं रहते थे। बिना फिसले उन पर चल पाना अत्यधिक कठिन था। हर जगह ख़ूब बारीक और चिकनी धूल पटी पड़ी थी। बनर्जी के बड़े-बड़े बूट धूल में काफ़ी गहराई तक धँस जाते थे, पर फिसलते न थे। इन्द्र के हृदय में भय का पुनः संचार होने लगा। उस नर-पशु से बच पाना उसे कठिन प्रतीत होने लगा। गोलियाँ उसे रोक नहीं सकीं। अपना पूरा रिवाल्वर उसने उसके ऊपर ख़ाली कर दिया था। प्रत्येक गोली उसे लगी थी। कई गोलियाँ उसके सीने पर भी लगी थीं। लेकिन किसी गोली का कोई असर उसके ऊपर नहीं हुआ। वह ज्यों का त्यों बना रहा।

इसमें सन्देह नहीं कि अब वह जाल में फँस गया है, और वह पागल दैत्य की तरह उसकी ओर झपटा आ रहा है। अब क्या करना चाहिए? बचने की पूरी कोशिश किये बिना उसके चंगुल में फँस जाना तो उचित नहीं? नहीं, नहीं। वह भागने लगा, दौड़ने लगा। रह-रहकर वह फिसल पड़ता, लेकिन फिर सँभलकर भागता। धूल फिर उसके चारों ओर उड़-उड़कर उसे तंग करने लगी। भय को अपने मस्तिष्क से दूर करने के लिए वह रिवाल्वर में गोलियाँ भरने लगा। लेकिन वह जानता था कि रिवाल्वर उसकी सहायता नहीं कर सकता। चौदह गोलियाँ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बेकार साबित हुईं, तो चौदह गोलियाँ फिर चलाने से क्या लाभ होगा ? वह शैतान तो जैसे गोलियाँ भी हज़म कर जाता है।

दौड़ ज़ोरों से जारी हो गई। इन्द्र आगे-आगे भाग रहा था, और बनर्जी उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। दोनों के बीच कभी कुछ गज़ से अधिक फ़ासला नहीं हो पाता था। अनेक बार इन्द्र को बनर्जी की गहरी साँस स्पष्ट सुनाई पड़ी।

बनर्जी अब उसे मनाने की कोशिश नहीं कर रहा था, उसके विचारों के प्रति वह अब उदासीन भी नहीं था। अब वह पूरा शिकारी बन गया था, और अपने शिकार का पीछा पूरे जोश के साथ कर रहा था। उसके प्रति वह पूर्णतया कठोर और निर्दय बन गया था। अपने विशाल शरीर की सम्पूर्ण शक्ति वह अपने शिकार को पकड़ने के प्रयत्न में लगा रहा था। यह देखकर उसके मन में अपार आश्चर्य और क्रोध उमड़ रहा था कि उसका मनोनीत सन्देशवाहक अपने कर्त्तव्य से इस तरह भाग रहा था। उसका उद्वेलित मस्तिष्क इन्द्र की इस हरकत को अक्षम्य अपराध समझ रहा था। सदाशिव के आदेशों का इस तरह उल्लंघन किया जा रहा था, और स्वयं वीरभद्र के सामने ! अब वह कुछ बोल नहीं रहा था, विकट निस्तब्धता धारण किये हुए केवल दौड़ लगाये जा रहा था।

बार-बार इन्द्र के लड़खड़ाते हुए शरीर को पकड़ने के लिए वह हाथ फैलाता। बार-बार इन्द्र को अपने कानों के पीछे उसकी उँगलियों की उपस्थिति अनुभव होती और उसकी साँस अपनी गर्दन पर लगती मालूम होती। हर बार वह बच जाता। ज्यों ही उसके हाथ उसे स्पर्श करते हुए जान पड़ते, त्यों ही अपने शरीर को एक ओर झुकाकर उसके पंजों की पहुँच से वह बाहर हो जाता। हर बार वह बच निकलता, किन्तु उसकी हर जीत उसे हार की ओर ढकेल रही थी।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सहसा फिसलन से बचने की कोशिश करते हुए वह लड़खड़ा गया। पैर धूल में धँस गये। पंजों को आगे गाड़कर निकलने के बजाय वह अपने पैरों को घुमाने लगा। धूल का एक बड़ा-सा ढेर नीचे खिसक गया और बनर्जी उसके परदे में ढँक गया। उसे कुछ देर के लिए रुक जाना पड़ा। इन्द्र तेज़ी से ऊपर चढ़ने लगा।

उसने ऊपर की ओर दृष्टि दौड़ाई। टंडन कहीं दिखाई नहीं दिया। अभी तक वह नहीं आया! क्या बात है? अब वह ऊपर पहुँच जायगा, और तब बनर्जी उसे किसी तरह पकड़ नहीं सकेगा। नीचे की ओर धूल उड़ाता हुआ वह ऊपर चढ़ता गया।

जब तालाब पाँच गज़ दूर रह गया, तब वह दम लेने के लिए रुक गया। उसने मुड़कर नीचे दृष्टि दौड़ाई। बनर्जी खड़ा था और उसकी ओर असीम क्रोध से ताक रहा था। वह जान गया था कि इन्द्र को पकड़ पाने में वह क्यों असफल रहा।

तेरहवाँ अध्याय

अरुणा की विकलता

इन्द्र ऊपर चढ़ गया। ठीक उसी समय उसे हथौड़े की गहरी चोट लगी। एक पागल के बलिष्ठ कर से फेंका हुआ वह भारी हथौड़ा ठीक उसके सिर पर लगा। मस्तिष्क पर गहरा आघात हुआ, भयानक पीड़ा अनुभव हुई; आँखों के सामने अँधेरा छा गया और वह ज़मीन पर गिरकर बेहोश हो गया।

टंडन का असीम कौतूहल से भरा हुआ चेहरा एक चट्टान के पीछे से एक क्षण के लिए बाहर निकला, और फिर अदृश्य हो गया।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वनर्जी वहाँ पहुँचा जहाँ इन्द्र बेहोश पड़ा हुआ था। एक क्षण तक चुपचाप खड़ा हुआ वह उसे झल्लाई हुई दृष्टि से देखता रहा, फिर झुककर बिना किसी विशेष प्रयास के उसे उठाकर उसने अपने कंधों पर लाद लिया।

अशोक की गुफाओं की छाया घनीभूत होती जा रही थी। दिन का बचा-खुचा प्रकाश अंधकार के वक्ष में क्रमशः विलीन हो रहा था। छाया की लम्बी, मोटी पंक्तियाँ जहाँ-तहाँ दृष्टि-गोचर होने लगी थीं। इनमें सबसे गहरी थी वह पंक्ति जिसकी आड़ में अशोक की गुफाओं के द्वार छिपे हुए थे।

वनर्जी गुफाओं की ओर चल पड़ा। उसके कंधों पर इन्द्र का शरीर ख़ाली बोरे की तरह झूल रहा था। वह बिना कहीं ज़रा भी रुके, झाड़-झंखाड़ के बीच से चला जा रहा था।

जब वनर्जी काफ़ी दूर निकल गया तब टंडन, जो उस चट्टान के पीछे छिपा था। उठ बैठा।

"देखा आपने ?" उसने पूछा।

एक वर्दीपोश महोदय भी उठ बैठे। वे थे नायब दारोग़ा मुंशी गुरुमुखलाल फ़तेहपुरी। उनका चेहरा फ़क़ था। जो भयानक काण्ड अभी उनकी आँखों के सामने हुआ था उसे देखकर उनके होश उड़ गये थे। टंडन की संगति ही कुछ कम दुखदायक नहीं थी, ऊपर से ऐसी भयानक घटना भी घट गई और—उन्हीं की आँखों के सामने। ऐसी घटनाओं की रिपोर्ट लिख लेना और बाद में उनके बारे में तहक़ीक़ात करना कुछ अधिक बुरा नहीं होता, लेकिन घटना-स्थल पर स्वयं मौजूद होना और सब-कुछ अपनी आँखों से देखना तो किसी भयानक शारीरिक और मानसिक यातना से किसी तरह कम नहीं होता।

मुंशी जी बेतरह घबरा गये थे। चोरी, नक़बज़नी और नाजायज़ शराब तैयार करने के बहुतेरे मामलों से उन्हें पाला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

पड़ा था। मामूली मार-पीट के कई मामलों की तहक़ीक़ात भी उन्होंने की थी। लेकिन इस तरह की संगीन वारदात का सामना उन्हें कभी नहीं करना पड़ा था, न ऐसे मामलों की जाँच करके नाम कमाने का हौसला ही उन्हें था। उनकी राय में सामना करने का हौसला करना कोरा पागलपन था।

टंडन अपनी नोटबुक में तेज़ी से लिख रहा था।

"देखा आपने ?" उसने पूछा।

"जी हाँ, हुज़ूर," शिकायत-भरे स्वर में नायब ने उत्तर दिया।

"ग़नीमत है ! यही है बनर्जी। उसका जीवट देखा ? कैसा भयानक आदमी है ! ऐसे व्यक्ति से मुक़ाबिला है जनाब। उससे निपटने से जी चुराइएगा, तो वह एक दिन आपको भी धर दबोचेगा; समझे ? आप हिम्मत से काम लेते और पहले ही कार्रवाई करते, तो नौबत शायद यहाँ तक न पहुँचती। ख़ैर, जो हुआ सो हुआ । अब ग़फ़लत से काम नहीं चलेगा। दारोग़ा साहब वापस आ गये होंगे ?"

"नहीं, हुज़ूर," विकल स्वर में नायब ने उत्तर दिया। "वे तो कल सबेरे वापस आयेंगे।"

"ख़ैर, कोई हर्ज नहीं। आप तो मौजूद ही हैं। फ़ौरन थाने जाइए, और अपने जवानों को साथ लेकर आइए। अशोक की गुफाओं पर जल्द से जल्द हमला करना होगा। अगर हो सके तो ग़ैरसरकारी लोगों को भी जमा करके ले आइएगा। लालटेनें, मशालें, चिराग़, रोशनी के जो भी सामान मिल सकें साथ लाइएगा। और थोड़ी-सी खड़िया भी लेते आइएगा। भूलिएगा नहीं। खड़िया की भी सख़्त ज़रूरत है। उससे मैं ज़मीन पर निशान बनाता चलूँगा, ताकि गुफाओं से बाहर निकलने में कोई कठिनाई न हो। समझ गये ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"जी हाँ हुज़ूर," नायब ने उठकर कहा।

"बस जाइए, आँधी की तरह जाइए, और आँधी ही की तरह वापस आइए। गुफाओं के पास मैं आपका इन्तज़ार करता रहूँगा। अशोक की गुफाओं में आज करारी मुठभेड़ होगी। बनर्जी से लड़कर उसे जीता-जागता ही गिरफ़्तार कर लेना होगा। लेकिन अगर किसी कारण से ऐसा न हो सका, तो—"

उसे बीच ही में चुप हो जाना पड़ा। काँपती हुई उँगली से मुंशी जी उस छाया की ओर इशारा कर रहे थे जो उन्हीं लोगों की ओर लपकी चली आती थी। नायब साहब तो समझ रहे थे कि वह कोई भूत है, लेकिन टंडन उसे ग़ौर से देखता रहा। वह निकट आती गई। मुंशी-जी भय से काँपने लगे।

टंडन उसे पहचान गया। वह एक नवयुवती थी। भय से उसका बुरा हाल था। तालाब में इन्द्र और बनर्जी के बीच होने-वाली भयानक लड़ाई उसने अपनी आँखों से देखी थी। वह इतनी घबराई हुई थी कि मुख से एक शब्द भी निकाल सकना उसके लिए कठिन हो रहा था।

"अरुणा ही है न ?" टंडन ने धीरे से पूछा। ज़ोर से सिर हिलाकर नायब साहब ने सहमति प्रकट की, यद्यपि वे उसे पहचानते नहीं थे। अरुणा को वहाँ देखकर टंडन को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"यहाँ यह कैसे आ गई ?" उसने कहा। "अगर वह शोर करेगी, तो सारा मामला चौपट हो जायगा। उसका यहाँ क्या काम था।"

ओठों पर उँगली रखकर उसने अरुणा को चुप रहने का इशारा किया। लेकिन वह तो इतनी आन्दोलित थी कि उस समय कुछ भी समझ पाना उसके लिए कठिन था। हाँफती हुई, क्रोध से उबलती हुई, वह उनके सामने आई।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"आप—आप ही मिस्टर टंडन हैं न ?" कड़ी आवाज़ में उसने पूछा।

"हाँ, लेकिन ज़ोर से मत बोलिए। यहाँ एक—"

"आपकी आँखों के सामने एक व्यक्ति के ऊपर घातक आक्रमण किया गया, और आप चुपचाप देखते रहे! ये हज़रत भी यहाँ मौजूद हैं। कहने को दारोग़ा हैं, और ईश्वर की दया से ख़ूब भारी-भरकम भी हैं, लेकिन हिम्मत का यह हाल है। आप दोनों ने उन्हें बचाने—"

"बस कीजिए मिस अरुणा," बात काटकर टंडन ने कहा।

किन्तु अरुणा ने ध्यान नहीं दिया।

"आप जानते हैं कि वे दोनों कौन हैं ?" उसने पूछा। ऐसा जान पड़ा जैसे उत्तेजना के आधिक्य के कारण वह मूर्च्छित हुआ ही चाहती है।

"हाँ—उनमें से एक बनर्जी था," शान्त स्वर में टंडन ने कहा।

"और—दूसरे व्यक्ति थे इन्द्रविक्रमसिंह! कृपया अब तो उनकी रक्षा करने के लिए कुछ कीजिए। उनकी जान ख़तरे में है। बनर्जी उन्हें मार डालेगा। उन्हें बचाइए—ईश्वर के लिए उन्हें बचाइए! वापस लाइए, उन्हें बचाकर वापस लाइए।

"मिस राठौर!" टंडन ने गम्भीर स्वर में कहा, "अगर अब आप अपने को तुरन्त क़ाबू में न करेंगी और धीरे-धीरे न बोलेंगी, तो मैं आपका मुख बन्द कर दूँगा। इसी तरह अगर आपको कुछ देर तक और चीख़ने दिया जायेगा, तो बनर्जी लौट पड़ेगा। आपकी आवाज़ दूर तक जा रही है। इन्द्र सुरक्षित है. आप निश्चिन्त रहें। मुझे पूरी आशा—"

"मामला आपकी समझ में नहीं आ रहा है," अरुणा ने चीख़कर कहा। उसकी आँखें ख़ूब चमक रही थीं, और वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अपनी उँगलियों को तोड़-मरोड़ रही थी। "शिवदीन की ज़बानी यहाँ घटनेवाली भयानक घटना का हाल सुनकर मैं यहाँ आई। और मैंने इन्द्र को अधमरा होते देखा। तुम दोनों कायर हो! मर्द होकर तुम चुपचाप देखते रहे। बड़े शर्म की बात है। ख़ैर, अगर मर्दों से कुछ नहीं हो सकता, तो स्त्रियों को ही कुछ न कुछ करना होगा। मैं ख़ुद बनर्जी से लड़ूँगी, और उन्हें बचाने की कोशिश करूँगी! उन्हें वह मार नहीं पायेगा!"

मुड़कर वह उस ओर दौड़ पड़ी जिधर बनर्जी गया था। टंडन तुरन्त उसके पीछे झपटा।

उसने उसे पकड़ लिया और खड़ी होने को विवश कर दिया।

"मुंशी गुरुमुखलाल!" नायब की ओर मुड़कर उसने कहा। "फ़ौरन थाने जाकर कार्रवाई कीजिए। यहाँ रुके रहने की कोई ज़रूरत नहीं।"

"बेहतर है हुज़ूर" कहकर मुंशी जी चल दिये।

"मिस राठौर!" अरुणा की ओर मुड़कर टंडन ने रोषपूर्ण स्वर में कहा, "अब अगर आप अपने को वश में नहीं कर लेगीं, तो मैं आपको सरकारी काम में बेजा दख़ल देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लूँगा। समझ में आया? मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि आपके दिल पर इस समय क्या बीत रही है, और मुझे आपसे पूरी सहानुभूति है। लेकिन बना-बनाया काम क्षणिक आवेश में आकर चौपट कर देना बुद्धिमानी के बिलकुल विरुद्ध है। मुझे क्या करना चाहिए, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। आपके भावावेश का यह प्रदर्शन इस जटिल मामले को हल करने में कोई सहायता नहीं पहुँचा रहा है। उलटे इससे बाधा ही पड़ रही है। या तो इन्द्र को कल सबेरे आप जीता-जागता देखेंगी या फिर कभी कुछ न देख पायेंगी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क्योंकि तब—दुनिया की हस्ती ही मिट जायगी। बनर्जी की चल पायेगी तो यह रात भी शायद कभी न बीतेगी। ऐसा ज़बरदस्त यह मामला !"

अरुणा ने उसकी बाँह पकड़कर सहारा लिया।

"लेकिन—लेकिन—" रुक-रुककर उसने कहा, "तालाब की दूसरी ओर मैंने क्या देखा, आप यह नहीं जानते। मिस्टर टंडन—"

"ऐं! यह आप क्या कह रही हैं? और कोई भी यहाँ मौजूद था क्या ?"

"रजनी भी यहाँ मौजूद थी—वही घृणित जादूगरनी रजनी! मैंने उसे साफ़-साफ़ देखा। वह उन दोनों का विकट द्वन्द्व बराबर देखती रही। जब इन्द्र गोली चलाने लगे, तब वह तेज़ी से दबे-पाँव भाग गई, और ज़रा देर में—"

टंडन ने उसके कन्धे पकड़ लिये।

"वह—वह किधर गई ?" उसकी आँखों में दृष्टि गाड़कर उसने पूछा।

अरुणा ने तुरन्त एक ओर संकेत किया।

"उस तरफ़—उस तरफ़ वह गई थी" मंद स्वर में उसने कहा। "दोनों मिलकर इन्द्र को मार डालेंगे। आप क्यों नहीं—?"

बल लगाकर टंडन ने उसे दूसरी ओर घुमा दिया।

"उधर जाओ," कड़े स्वर में उसने कहा। "रामेन्द्र-भवन वापस जाओ, और वहीं मेरा इन्तज़ार करो। मैं ख़ुद आकर शीघ्र ख़बर दूँगा।"

अरुणा लड़खड़ाती हुई चली गई। जब तक वह दिखाई देती रही तब तक टंडन उसी की ओर देखता रहा। फिर अशोक की गुफाओं की ओर एक क्षण तक देखकर, वह दबे-पाँव

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अपनी उँगलियों को तोड़-मरोड़ रही थी। "शिवदीन की ज़बानी यहाँ घटनेवाली भयानक घटना का हाल सुनकर मैं यहाँ आई। और मैंने इन्द्र को अधमरा होते देखा। तुम दोनों कायर हो! मर्द होकर तुम चुपचाप देखते रहे। बड़े शर्म की बात है। ख़ैर, अगर मर्दों से कुछ नहीं हो सकता, तो स्त्रियों को ही कुछ न कुछ करना होगा। मैं ख़ुद बनर्जी से लड़ूँगी, और उन्हें बचाने की कोशिश करूँगी! उन्हें वह मार नहीं पायेगा!"

मुड़कर वह उस ओर दौड़ पड़ी जिधर बनर्जी गया था। टंडन तुरन्त उसके पीछे झपटा।

उसने उसे पकड़ लिया और खड़ी होने को विवश कर दिया।

"मुंशी गुरुमुखलाल!" नायब की ओर मुड़कर उसने कहा। "फ़ौरन थाने जाकर कार्रवाई कीजिए। यहाँ रुके रहने की कोई ज़रूरत नहीं।"

"बेहतर है हुज़ूर" कहकर मुंशी जी चल दिये।

"मिस राठौर!" अरुणा की ओर मुड़कर टंडन ने रोषपूर्ण स्वर में कहा, "अब अगर आप अपने को वश में नहीं कर लेगीं, तो मैं आपको सरकारी काम में बेजा दख़ल देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लूँगा। समझ में आया? मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि आपके दिल पर इस समय क्या बीत रही है, और मुझे आपसे पूरी सहानुभूति है। लेकिन बना-बनाया काम क्षणिक आवेश में आकर चौपट कर देना बुद्धिमानी के बिलकुल विरुद्ध है। मुझे क्या करना चाहिए, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। आपके भावावेश का यह प्रदर्शन इस जटिल मामले को हल करने में कोई सहायता नहीं पहुँचा रहा है। उलटे इससे बाधा ही पड़ रही है। या तो इन्द्र को कल सबेरे आप जीता-जागता देखेंगी या फिर कभी कुछ न देख पायेंगी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

क्योंकि तब—दुनिया की हस्ती ही मिट जायगी। बनर्जी की चल पायेगी तो यह रात भी शायद कभी न बीतेगी। ऐसा ज़बरदस्त यह मामला !"

अरुणा ने उसकी बाँह पकड़कर सहारा लिया।

"लेकिन—लेकिन—" रुक-रुककर उसने कहा, "तालाब की दूसरी ओर मैंने क्या देखा, आप यह नहीं जानते। मिस्टर टंडन—"

"ऐं! यह आप क्या कह रही हैं? और कोई भी यहाँ मौजूद था क्या ?"

"रजनी भी यहाँ मौजूद थी—वही घृणित जादूगरनी रजनी! मैंने उसे साफ़-साफ़ देखा। वह उन दोनों का विकट द्वन्द्व बराबर देखती रही। जब इन्द्र गोली चलाने लगे, तब वह तेज़ी से दबे-पाँव भाग गई, और ज़रा देर में—"

टंडन ने उसके कन्धे पकड़ लिये।

"वह—वह किधर गई ?" उसकी आँखों में दृष्टि गाड़कर उसने पूछा।

अरुणा ने तुरन्त एक ओर संकेत किया।

"उस तरफ़—उस तरफ़ वह गई थी" मंद स्वर में उसने कहा। "दोनों मिलकर इन्द्र को मार डालेंगे। आप क्यों नहीं—?"

बल लगाकर टंडन ने उसे दूसरी ओर घुमा दिया।

"उधर जाओ," कड़े स्वर में उसने कहा। "रामेन्द्र-भवन वापस जाओ, और वहीं मेरा इन्तज़ार करो। मैं ख़ुद आकर शीघ्र ख़बर दूँगा।"

अरुणा लड़खड़ाती हुई चली गई। जब तक वह दिखाई देती रही तब तक टंडन उसी की ओर देखता रहा। फिर अशोक की गुफाओं की ओर एक क्षण तक देखकर, वह दबे-पाँव

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उस ओर तेज़ी से चल पड़ा जिधर कुछ देर पहले बनर्जी गया था।

चौदहवाँ अध्याय

पीछा

टंडन चला जा रहा था। कभी-कभी कपड़ों के झाड़ियों से छू जाने से उत्पन्न हुई हलकी सरसराहट और घास-फूस पर जूतों के पड़ने से पैदा होनेवाली बहुत हलकी चरचराहट के अतिरिक्त वह कोई शब्द नहीं कर रहा था। आगे काफ़ी दूर पर बनर्जी लम्बे डग रखता हुआ चला जा रहा था, और हलकी, धुँधली छाया के परदे पर हिलती हुई उसकी गाढ़ी काली छाया बड़ी विचित्र और भयावनी लग रही थी।

अपने और बनर्जी के बीच का फ़ासला कम करने के लिए टंडन दौड़ने लगा। जब फ़ासला केवल पचास गज़ का रह गया, तब उसने दौड़ना बन्द कर दिया और फिर बराबर उतनी ही दूरी से वह उसका पीछा करता रहा।

छाया की भाँति, वह निरंतर इस ढंग से चला जा रहा था कि ज़रूरत पड़ने पर वह तुरन्त कहीं न कहीं छिप सके। बनर्जी अगर एक बार भी मुड़कर पीछे देखता तो उसे मरुभूमि का वह सारा भाग जनशून्य ही दृष्टिगोचर होता।

लेकिन बनर्जी ने एक बार भी पीछे दृष्टि नहीं डाली। उसके मस्तिष्क में केवल एक विचार तरह तरह से चक्कर काट रहा था, और वह था अपनी दूषित योजनाओं को शीघ्रातिशीघ्र पूरी कर डालने का। उसे विश्वास था कि संसार का संहार करने का आदेश उसे स्वयं भगवान् शंकर ने दिया है। अतः उसका विरोध करना

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सदाशिव का विरोध करने के बराबर होगा। कौन अनादि शिव का विरोध करने का साहस कर सकेगा? फिर सावधानी से काम लेने या आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहने की आवश्यकता ही कहाँ है?

केवल एक व्यक्ति ने कुछ विरोध प्रदर्शित किया था। जो इस समय आहत और अचेत उसके कंधों पर लदा है।

जब गुफायें निकट आ गईं, तब टंडन भी बनर्जी के निकट आ गया। पहाड़ी से टूटकर अलग हुई चट्टानें ढेर की ढेर इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। उन्हीं के बीच वह लुकता-छिपता चल रहा था। एक स्थान पर रुककर उसने अपने जूते उतार डाले। उन्हें एक पत्थर के पीछे छिपाकर वह फिर लपक कर उसके पीछे हो लिया। जब तक बनर्जी गुफाओं के एक द्वार में घुस नहीं गया, तब तक वह उसकी छाया का अनुसरण करता रहा।

अशोक की गुफायें उस पहाड़ी ज़िले में आश्चर्य तथा कौतूहल की वस्तु थीं। भूतत्त्वज्ञ उनकी उपस्थिति का वास्तविक कारण समझ पाने में असमर्थ थे।

पहाड़ियों के अन्दर वे कितनी दूर तक चली गई थीं, यह भी ठीक तरह कोई नहीं जानता था। भूतत्त्वज्ञों का मत था कि सृष्टि के आदि-काल में ज़मीन के सिकुड़ने के कारण पड़नेवाले अत्यधिक दबाव से भूमि के अन्दर से कुछ विशेष पदार्थों की लहरें अकस्मात् निकल पड़ी होंगी और इस तरह उनकी रचना हुई होगी।

एक सिरे से दूसरे सिरे तक उन अँधेरी गुफाओं का पूरी तरह निरीक्षण कर लेना, उनसे मिली हुई गुप्त कोठरियों का पता लगा लेना, और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले अन्य दुर्ज्ञेय रहस्यों को हल कर लेना, सचमुच बनर्जी ही का काम था। और वह उन गुफाओं में आँखों पर पट्टी बाँधकर चल सकता था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

टंडन ने सोचा था कि बनर्जी लालटेन या मशाल ज़रूर जलायेगा। उसका पीछा करने में उसे भी उससे सहायता मिलेगी, और वह ज़मीन पर निशान भी आसानी से बनाता चलेगा। लेकिन उसका ख़याल ग़लत निकला। बनर्जी ने किसी तरह की रोशनी नहीं की। और बिना कहीं ज़रा भी रुके या ठोकर खाये, उस अँधेरे, टेढ़े-मेढ़े मार्ग में समान गति से वह आगे चला जा रहा था। गुफाओं का फ़र्श बड़ा कँकरीला था। कुछ दूर चलने ही से टंडन के पैरों की दुर्गति हो गई। बहुत सँभाल-सँभालकर वह पैर रखता, फिर भी कंकड़-पत्थर गड़ ही जाते और ठोकरें लग ही जातीं।

थोड़ी देर के बाद काग़ज़ की सरसराहट-सी मंद ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। पहले तो टंडन ने समझा कि बनर्जी की मशीनों की आवाज़ होगी, पर बाद में उसका ख़याल बदल गया।

आवाज़ उत्तरोत्तर बढ़ती गई। एकाएक एक मोड़ के उस ओर पहुँचते ही टंडन को ज्ञात हो गया कि एक ऐसे झरने की आवाज़ थी जो लोहे के अन्दर ही गिर रहा था।

बनर्जी आगे बढ़ता गया। टंडन उसका पीछा करता गया। झरने का गम्भीर गर्जन बढ़ता गया और टंडन को अत्यधिक कर्ण-कटु प्रतीत होने लगा। उसका सिर भन्ना उठा।

बनर्जी एकाएक तेज़ी से मुड़ा और चट्टान में बने हुए एक छोटे, तंग दरवाज़े में घुस गया। टंडन पाँच गज़ पीछे था। दो-तीन क्षण के बाद वह भी उस दरवाज़े में किसी तरह घुसा। रेंगकर जब वह बाहर निकला, तब बनर्जी कहीं दिखाई नहीं दिया। झरने की भयानक आवाज़ उसके कानों के परदों पर अपनी पूरी शक्ति से चोट कर रही थी। वह झरने के बिलकुल समीप खड़ा था। हवा में उड़ती हुई जल की फुहारें उसके चेहरे और पैरों पर पड़ रही थीं।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वनर्जी ग़ायव हो गया था। उसके जूतों की आवाज़ भी किसी ओर से नहीं आ रही थी। वह आ भी कैसे सकती थी। कुछ देर तक वह इस आशा में खड़ा रहा कि शायद वनर्जी फिर दिखाई पड़ जाय या उसकी आहट ही मिल जाय। किन्तु व्यर्थ। तव साहस करके उसने अपना टार्च जला लिया। टार्च की तेज़ रोशनी कन्दरा के एक भाग में फैल गई। गिरते हुए जल से प्रकाश की किरणें निकल-निकलकर नाचने लगीं। कन्दरा की भीगी हुई दीवारें प्रकाशमान हो उठीं।

जल की एक वड़ी मोटी धार तेज़ी से गिर रही थी, जो अन्धकार में काली स्याही-सी लगती थी। उसने टार्च ऊपर की ओर उठाया, लेकिन वह अन्धकार पूरी तरह दूर करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। जहाँ तक वह देख सका, उसे जल की धार ही दिखाई दी।

झरने के अतिरिक्त उस कन्दरा में कुछ नहीं था। टार्च की रोशनी चारों ओर फेंक-फेंककर उसने ध्यान से देखा। वनर्जी का कोई चिह्न कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हर ओर भीगी, काली दीवारें खड़ी थीं। कोई द्वार, कोई सूराख़ कहीं दिखाई नहीं दिया। एक चूहा भी वहाँ नहीं छिप सकता था। तव वनर्जी कहाँ ग़ायव हो गया?

मन ही मन झल्लाता हुआ, चारों ओर ग़ौर से देखता हुआ वह चुपचाप खड़ा रहा। जिस द्वार से वह इधर आया था उसी से वापस तो नहीं हो गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक मनुष्य से अधिक के लिए उसमें जगह नहीं है। वनर्जी के घुसने के कुछ क्षण वाद ही वह भी उसमें घुसा था और उससे निकलने के वाद वह वरावर उसके समीप ही खड़ा रहा है। वनर्जी अगर फिर उसमें घुसता, तो उसे ज़रूर मालूम हो जाता। हो न हो, वह अव भी यहीं है, यहीं कहीं छिपा है। कहाँ है वह?

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके मन में एक विचार उठा। सम्भव है वह झरने में घुसकर उस ओर चला गया हो। ज़रूर यही हुआ होगा। झरने में पिलकर बनर्जी उस ओर चला गया होगा।

सँभाल-सँभालकर पैर रखता हुआ वह कन्दरा के दूसरी ओर पहुँचा। जहाँ जल गिर रहा था वहाँ एक गढ़ा बन गया था। कोई व्यक्ति उस गढ़े में एक बार उतर कर सही-सलामत बाहर निकल आने की आशा नहीं कर सकता था।

टंडन फ़र्श पर मुँह के बल लेट गया और खिसककर जितना झुक सका गढ़े के ऊपर झुक गया। फिर उसने अपना हाथ झरने की धार में उस स्थान पर घुसेड़ दिया जहाँ पहले पहल ढुलककर वह गढ़े में गिरती थी। वही बात निकली जो उसके दिमाग़ में आई थी। झरना ख़ूब ऊँचा और चौड़ा ज़रूर था, लेकिन वह बहुत मोटा नहीं था। उसकी मोटाई एक फ़ुट से अधिक नहीं थी। उसके पीछे दीवार में एक द्वार था और इस तरह गुफाओं का सिलसिला आगे बढ़ता चला गया था। वास्तव में वह झरना विकट वेग से गिरते हुए जल का एक प्राकृतिक परदा था, जो अगली गुफाओं के द्वार की रक्षा कर रहा था।

पीछे खिसककर टंडन उठ खड़ा हुआ। उसके बाल और कपड़े जल से तर हो गये थे।

"इन्द्र !" उसने अपने मन में कहा, "बस यहीं तक, आगे नहीं। सरकारी जासूस यहाँ तक पहुँचकर पीछे लौट जाता है, और ज़ाहिर करता है कि उसने कुछ देखा ही नहीं। रामेन्द्र-भवन में एक लड़की है, जिसे सुन्दरी ही कहना चाहिए। उसे तुमसे मतलब है, लेकिन तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं। यहाँ भी एक सुन्दरी है, बहुतेरे उसके लिए अपनी जान क़ुर्बान कर सकते हैं। तुम भी कर सकते हो। अब अगर इस मामले में मैं इसी वक़्त

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आगे दख़ल दूँगा, तो रजनी झमेले में फँस जायगी और उसे जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

उसे याद आई उस समय की सारी बातें जब रामेन्द्र-भवन के पुस्तकालय के बन्द दरवाज़े के सामने घुटनों के बल बैठा हुआ कुञ्जी के सूराख़ से वह अन्दर का सारा दृश्य देख रहा था, और याद आई इन्द्र की बादवाली हरकतें। जो कुछ उसने देखा, सुना था उससे मामला आईने की तरह साफ़ हो गया था।

"भैया टंडन!" उसने मन में कहा, "अब लौट चलो। अभी यहाँ तुम्हारा काम नहीं है। इन लोगों को आपस में निपट लेने दो। यही बेहतर होगा। नायब का दल जब आ जाय तब तुम्हारा मौक़ा आयेगा।"

टार्च की सहायता से दीवारों पर अपने हाथ से बनाये हुए निशानों को खोजते और उन्हें गाढ़ा करते हुए, सावधानी से चलकर वह गुफाओं से बाहर निकला।

पन्द्रहवाँ अध्याय

कब ?

टंडन रामेन्द्र-भवन की ओर चला। उसके मस्तिष्क में एक विचित्र भय चक्कर काट रहा था। उसे ऐसा जान पड़ रहा था जैसे रमणीरंजन बनर्जी का भूत उसके पीछे पीछे चला आ रहा हो। वही बनर्जी जो भयानकता का मूर्तिमान् रूप है और जिसने मानवजाति के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाने का दुस्साहस किया है! संसार के निवासी इस समय नींद के मज़े ले रहे होंगे या रस-रंग में डूबे होंगे। यहाँ वह है जो अंधकार में ठोकरें खाता फिर रहा है; और वहाँ वे हैं जो प्रेम-कथा-रस ले रहे हैं, अभिनय,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नृत्य और संगीत के मज़े लूट रहे हैं, .खुशियाँ मना रहे हैं। उस भयानक ख़तरे के सम्बन्ध में वे कुछ नहीं जानते जो अपने पागल आविष्कारक के आदेश की प्रतीक्षा करता हुआ उनके सिरों पर मँडरा रहा है।

अगला विचार मन में आते ही वह सिहरकर ठगा-सा खड़ा रह गया। वह विचार था समय के सम्बन्ध का। कब ?

बनर्जी अपनी मृत्यु-किरण संसार पर कब फेंकेगा ? इसी प्रश्न के उत्तर पर संसार के भाग्य का फ़ैसला निर्भर है। लेकिन यह भेद तो बनर्जी के सिवाय किसी को मालूम नहीं है।

टंडन वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों और सरकारी अफ़सरों के उस छोटे दल से परिचित था, जिसने बनर्जी के इरादों का कुछ-कुछ पता लगा लिया था। खोज और रक्षा की दो उप-समितियाँ बना दी गई थीं, और उनकी कई बैठकें हो चुकी थीं। प्रत्येक बैठक में अधिकारियों के आदेशानुसार वह उपस्थित हुआ था। लेकिन क्या कर सकेंगी वे उप-समितियाँ ?

"बनर्जी अभी तैयार नहीं है" काफ़ी ज़ोर से उसने कहा। "इस बात का मुझे पक्का विश्वास है कि वह जीता-जागता शैतान अभी तैयार नहीं है। लेकिन कब तक तैयार हो जाने की वह आशा करता है ? काश यह भी मालूम हो जाता! अच्छा ! यह क्या मामला है ?"

वह दौड़ पड़ा। बात यह हुई कि ज्यों ही वृक्षों के एक झुरमुट से वह बाहर निकला, रामेन्द्र-भवन उसे दिखाई दिया। उसकी हर खिड़की में मोमबत्ती का मंद प्रकाश दृष्टिगोचर हुआ। वह प्रकाश बड़ा विचित्र और करुण लग रहा था। वह विशाल कोठी विलाप करती-सी प्रतीत हो रही थी, जैसे वह उजड़ गई हो और भूतों ने उसमें अपना डेरा जमा रक्खा हो ! एक दरवाज़ा खुला

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दिखाई दिया। ज़ोर ज़ोर से आवाज़ें लगाता हुआ वह उसी की ओर दौड़ा।

एक स्त्री काँपती हुई छाया-सी उस दरवाज़े के बाहर आकर खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"मिस राठौर!"

वह थरथर काँपती हुई गुम-सुम खड़ी रही।

"मिस राठौर!" तीव्र स्वर में टंडन ने कहा, "क्या बात है? अगर तबीअत ख़राब हो तो जाकर आराम करो। इस तरह घर के बाहर खड़ी रहने से तबीअत ज़्यादा ख़राब हो जायगी। सुनती हो?"

"घर!" अरुणा ने भावशून्य स्वर में कहा। "घर के अन्दर अब मैं क़दम नहीं रक्खूँगी। मुझे डर लग रहा है। इसी लिए मैंने खिड़कियों में मोमबत्तियाँ जला दी हैं। पापा चले गये। लेकिन इतने ही से बस नहीं होगा। अभी बहुतों की जानें जायँगी। इसका मुझे पूरा विश्वास हो गया है।"

टंडन ने उसकी बाँह पकड़ ली। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वह बेहोश हुआ ही चाहती है।

"बहकी बातें करने से काम नहीं चलेगा। तुम्हें फ़ौरन आराम करना चाहिए। किसी को बुलाना पड़ेगा।"

अरुणा को छोड़कर, अन्दर जाकर उसने चिल्लाकर कहा—"कालूराम! जल्दी आओ!"

कोई उत्तर नहीं मिला। तीन बार उसने कालूराम को आवाज़ दी। लेकिन एक बार भी उत्तर नहीं आया। भड़भड़ करता हुआ वह हाल में इधर-उधर टहलने लगा। एक दरवाज़ा उसने खोला और ज़ोर से बन्द कर दिया। अपनी मोटी छड़ी से उसने एक आलमारी पर कई चोटें कीं। दरवाज़े के समीप अरुणा ने जो मोमबत्तियाँ रख दी थीं उनमें से एक टिमटिमाकर बुझ गई।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दूसरी भी बुझ गई। अरुणा की तरह उसके मन में भी भय ज़ोर मारने लगा। वह झल्ला उठा। अरुणा के चेहरे पर उपहास की छाया देखकर उसके पीछे मिज़ाज का पारा और भी चढ़ गया। वह तुरन्त उसकी ओर मुड़ा।

"इस घर को क्या हो गया है ?" कड़े स्वर में उसने पूछा। "क्या सब लोग सो गये हैं ?"

अरुणा ने नकारात्मक भाव से सिर हिलाया। उसकी आँखें उसके ऊपर तरस खाती-सी प्रतीत हुईं। उस समय वह उसे भूल पर भूल करनेवाला एक कमसमझ लड़का-सा लगा। उसका यह भाव देखकर टंडन और भी जल उठा।

"मेरा ख़याल है कि आप पूरे बुद्धू बन गये हैं मिस्टर टंडन," अरुणा ने कहा। "ख़ुद आप ही सो रहे हैं। चाहे जितनी आवाज़ें आप लगायें, आपको कोई उत्तर नहीं मिलेगा। मेरे मृत पिता उत्तर दें तो दें और कोई—"

"उत्तर नहीं मिलेगा। किसी न किसी को जगाकर और तुम्हें उसके सुपुर्द करके ही दम लूँगा।"

सेवकों के नाम ले-लेकर उसने फिर आवाज़ें लगाईं। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। उसकी आवाज़, जो सदैव गम्भीर और हुकूमत से भरी प्रतीत होती थी, इस समय बिलकुल खोखली-सी लगी। अधिकार की भावना उसमें बाक़ी नहीं रही थी। जब वह उसकी ओर मुड़ा तो उसका चेहरा भावशून्य-सा हो गया था। उसके कण्ठ-स्वर में विचित्र विनम्रता आ गई।

"मुझे बड़ा अफ़सोस है, मिस राठौर," विनयपूर्ण स्वर में उसने कहा। "कृपया मुझे क्षमा करें। मैं बड़ा हैरान हो गया हूँ—आप ख़ुद जानती हैं। क्या बात है ? यहाँ क्या हो गया है ?"

"मुझे और आपको छोड़कर इस घर में कोई जीवित व्यक्ति नहीं है," अरुणा ने कहा। "एकाएक भय खाकर सारे नौकर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

भाग गये। कालूराम भी नहीं रुका, मैंने उन लोगों को रोकने की पूरी कोशिश की लेकिन वे किसी तरह नहीं रुके।"

"सब भाग गये !" गम्भीर स्वर में टंडन ने कहा। "खैर, तुम वैसी नहीं हो, ईश्वर को धन्यवाद है !"

अरुणा की हिम्मत बँधी। वह उसके बिलकुल समीप आ गई और टंडन का हाथ एकाएक उसके हाथों में पहुँच गया।

"यह अच्छा ही हुआ कि वे चले गये," टंडन ने तेज़ी से कहा। "वे सबके सब कायर हैं, साहस उनमें ज़रा भी नहीं। अच्छा हुआ, घर साफ़ हो गया, परेशानी कुछ कम हो गई।"

सहमतिसूचक भाव से अरुणा ने सिर हिलाया।

"आप क्या करने जा रहे हैं मिस्टर टंडन ? मैं सब-कुछ करने को तैयार हूँ पर इस मकान में अब मैं किसी तरह रुकी नहीं रहूँगी। इस तरह मेरी ओर मत देखिए—मेरी तबीअत अब चंगी हो गई है। अब मुझे किसी चीज़ का भय नहीं है।"

"शाबाश !" प्रसन्न होकर टंडन ने कहा। "यही भाव तुम्हारे योग्य है ! इन्द्र के विषय में तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। उस पागल का दिमाग़ किस तरह काम करता है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मैं—"

"मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हैं मिस्टर टंडन ? आपको पूरा विश्वास है ?"

"पूरा। इसका कारण है। वह इन्द्र को अशोक की गुफाओं में ले गया है और समझता है कि उसके साथ जो कुछ चाहे कर सकता है। इस तरह के झक्की लोग दर्शकों और श्रोताओं की ज़रूरत अत्यधिक महसूस करते हैं। बनर्जी अपनी घृणित योजनाओं में बिलकुल अकेला लगा रहा है। अब जब कि इन्द्र उसके चंगुल में फँस गया है, वह उसे अपनी आश्चर्यजनक मशीनें दिखाने और उनकी सराहना करने को तड़प रहा होगा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वह इन्द्र पर फ़िक़रे कसेगा। वह बराबर उसे धमकियाँ देता रहेगा, लेकिन जब तक अपने पैशाचिक आविष्कारों की सारी बातें अच्छी तरह समझा न देगा तब तक दम न लेगा।"

टंडन बड़ी सावधानी से उसकी ओर देखता रहा, क्योंकि पक्का विश्वास वास्तव में उसके मन में नहीं था। लेकिन इस समय यह अत्यन्त आवश्यक था कि इन्द्र के विषय में अरुणा को पूरा इतमीनान करा दिया जाय। उसके सम्बन्ध में उसका चिन्तित रहना अब उचित नहीं। उसकी चाल चल गई। सहमति-सूचक भाव से अरुणा ने सिर हिलाया और तब एकाएक उसका रंग फिर बदल गया।

"जो कुछ आप कहेंगे वही मैं करूँगी," उसने कहा। "इन्द्र के बारे में चिन्ता नहीं करूँगी। लेकिन हमें हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहना नहीं चाहिए।—"

उसका कंठ-स्वर फिर कर्ण-कटु हो उठा था। वह झपटकर जाने लगी। आश्चर्य से चकित होकर वह दो सेकंड तक उसकी ओर ताकता खड़ा रहा। फिर लपककर उसके पास पहुँच गया।

"कहाँ जा रही हो ?"

"रजनी-कुटीर जा रही हूँ," "उत्तेजित स्वर में अरुणा ने उत्तर दिया। "मेरा ख़याल है कि रजनी वहाँ इस समय ज़रूर मौजूद होगी। अशोक की गुफाओं में जाकर बनर्जी का मुक़ाबिला करना होगा, और रजनी की सहायता से हम वहाँ आसानी से पहुँच सकते हैं। रजनी को डराकर अगर आप उसकी सहायता प्राप्त नहीं कर सकते, तो मैं यह काम कर दिखाऊँगी !"

टंडन ने अपने गले से असन्तोषसूचक आवाज़ की; लेकिन अपने मन में उसे स्वीकार करना ही पड़ा कि अरुणा की बातें एक प्रकार से ठीक ही हैं।

"अच्छी बात है मिस राठौर, मैं भी चलता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रामेन्द्र-भवन से निकलकर वे रजनी-कुटीर की ओर चल पड़े। घृणा तथा असन्तोष-जनित उत्तेजना के कारण भय अरुणा के मन से दूर हो गया था और वह पुरुषों के समान तेज़ी से चल रही थी। कभी-कभी टंडन के लिए उसके साथ-साथ चल पाना कठिन हो उठता था।

कुछ देर के बाद रजनी-कुटीर आ गया। उसकी एक खिड़की से रोशनी बाहर निकल रही थी। अरुणा का जोश ज्यों का त्यों बना हुआ था। अरुणा ने बन्द दरवाज़े पर धक्का लगाया। कोई उत्तर नहीं मिला। झल्लाकर, कुछ भुनभुनाकर, उसने फिर धक्का दिया। दरवाज़ा खुला। रजनी सामने खड़ी थी।

घृणापूर्ण दृष्टि से अरुणा उसे देखने लगी।

"आप लोग क्या चाहते हैं ?" रजनी ने घबराकर पूछा।

अरुणा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। रजनी ने दरवाज़ा बन्द करना चाहा, लेकिन अरुणा उसे ठेलकर अन्दर चली गई। टंडन भी अन्दर पहुँच गया।

"दरवाज़ा बन्द कर दीजिए मिस्टर टंडन," कड़े स्वर में अरुणा ने आज्ञा दी, फिर वह रजनी की ओर मुड़ी। "सुनो जी। तुम्हें हम लोगों को अशोक की गुफाओं में किसी सुरक्षित मार्ग से ले चलना पड़ेगा। वहाँ तक हमें कितनी देर में पहुँचा सकोगी ?"

रजनी ने उसकी ओर देखा, और वह मुस्कराती हुई प्रतीत हुई। उसकी दृष्टि में घृणा नहीं थी। क्रोध भी नहीं था। असमर्थतासूचक भाव से उसने सिर हिलाया।

"उत्तर नहीं दोगी ?" झल्लाहटभरे स्वर में अरुणा ने पूछा।

दो क्षण तक निस्तब्धता रही।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"उत्तर तो मैं दे चुकी," शान्त स्वर में रजनी ने कहा। "और अब यह आवश्यक है कि आपको चेतावनी भी दे दूँ। यहाँ देर तक रुकना उचित नहीं है। इस घर से बाहर आप लोग अधिक सुरक्षित रहेंगे। यहाँ आप लोगों के लिए कुछ नहीं हैं। ज़्यादा देर तक यहाँ रुकने में खतरा है। भय और अन्धकार का इस छोटे-से घर में राज्य है। कृपया यहाँ से अब विदा हो जाइए। कुशल इसी में है।"

कुछ देर तक निस्तब्धता रही। अपनी उस वैरिणी को एकटक देखती हुई, अरुणा उसे तौल रही थी। रजनी का चेहरा भावशून्य था। टंडन चुपचाप खड़ा हुआ उन दोनों को देख रहा था। रजनी के शब्दों से उसे जो कौतूहल हुआ वह उस आश्चर्य में डूब गया जो रजनी के असाधारण सौंदर्य का नया रूप देख-कर उसके मन में जाग्रत हो उठा। अरुणा कुछ आगे की ओर झुकी।

"इधर के लोग तुम्हें जादूगरनी कहते हैं," अरुणा ने कहा। "यहाँ के लोग गँवार हैं, मूर्ख हैं, और अपने सम्बन्ध में उन लोगों की राय तुम्हें शायद पसन्द न आती होगी। लेकिन किसी निष्पक्ष व्यक्ति को इसमें सन्देह नहीं हो सकता कि तुम्हारे कृत्य किसी जादूगरनी की करतूतों से किसी तरह कम नहीं हैं। तुम्हारे ही कारण यहाँ अनेक दुःखद घटनायें घटी हैं, तुम्हारे ही कारण इन्द्र इस समय अशोक की गुफाओं में असहाय अवस्था में पड़े हुए हैं, और बनर्जी उन्हें मार डालने पर तुला हुआ है। तुम जादूगरनी नहीं हो तो क्या हो?"

"बस कीजिए!" विनयपूर्ण स्वर में रजनी ने कहा। "बस कीजिए! मैं—"

लेकिन अरुणा ने ध्यान नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"मैं नहीं जानती कि बनर्जी से तुम्हारा क्या रिश्ता है और मुझे इसकी कोई परवाह भी नहीं है। इस समय मैं केवल इन्द्र की बात सोच रही हूँ, किसी दूसरी बात की मुझे चिन्ता नहीं है। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे सुरक्षित ढंग से बनर्जी के पास पहुँचा दो, ताकि मैं उससे दो बातें कर सकूँ। तुम्हें मेरा यह काम करना होगा ?"

"मैं इनकार करना नहीं चाहती," शान्त स्वर में रजनी ने आश्वासन दिया। "केवल इतना ही निवेदन करना चाहती हूँ कि यह कार्य सर्वथा असम्भव है। आप नहीं जानतीं कि बिन बुलाये मेहमानों को रोकने के लिए बनर्जी ने वहाँ तरकीबें नहीं लगा रक्खी हैं ? मिस्टर टंडन ने बड़ी बुद्धिमानी का काम किया कि वापस चले आये। वहाँ पहुँचकर आप जीवित नहीं लौटेंगी ! एक मिनट भी शायद आप वहाँ जीवित नहीं रह सकेंगी !"

"तुम्हारे शब्दों पर मुझे विश्वास नहीं होता," अरुणा ने कहा। "तुम मुझे चक़मा दे रही हो।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं," खेदपूर्ण स्वर में रजनी ने कहा। "कितनी ही बातें ऐसी हैं जो आप समझ नहीं रही हैं। आपका क्रोधित होना बेकार है। आप अगर यहाँ रुकी रहना चाहती हैं, तो शौक़ से रुकी रहें। मैं जाती हूँ।"

अपनी आँखों में अपार सरलता भरे हुए, वह दरवाज़े की ओर ऐसे शान्त भाव से बढ़ी मानों वह स्वप्नलोक में विचरण कर रही हो। अरुणा मन्त्र-मुग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखती रही; अरुणा तेज़ी से बढ़ी और दरवाज़े पर अपनी पीठ लगाकर खड़ी हो गई।

"यहाँ से तुम कहीं जा नहीं सकतीं," तीव्र स्वर में उसने कहा। "हम बेवक़ूफ़ नहीं हैं। इतने सस्ते नहीं छूटोगी रजनी।"

अनुरोधपूर्ण दृष्टि से रजनी ने उसकी ओर देखा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"मुझे मरुभूमि में कुछ काम करना है," कोमल स्वर में उसने कहा। "मुझे जाने दीजिए। अगर आप चाहें और साहस कर सकें, तो मेरा पीछा कर सकती हैं।"

"इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी," अरुणा ने उत्तर दिया, "क्योंकि तुम्हें यहीं रुकना पड़ेगा। अपने को अब बन्दी समझो रजनी। बनो मत। यह प्रकट करने से कुछ लाभ नहीं कि यह सब तुम समझ नहीं रही हो। ख़ैर, मैं साफ़-साफ़ कहे देती हूँ। जब तक इन्द्र बनर्जी के बन्दी रहेंगे, तब तक तुम मेरी बन्दी बनी रहोगी। जब इन्द्र मेरे पास सही-सलामत वापस आ जायँगे, तब मैं भी तुम्हें छोड़ दूँगी।"

टंडन कुछ मुनमुनाया, किन्तु यह प्रकट नहीं हो सका कि उसने समर्थन किया या विरोध। अरुणा को उसके मत की कोई परवाह भी नहीं थी। रजनी को बलपूर्वक खिसकाती हुई वह धीरे-धीरे अँगीठी की ओर बढ़ी।

टंडन ने देखा कि रजनी अपनी इच्छा के विरुद्ध अँगीठी के पास पड़ी हुई एक कुरसी पर बैठी है और अरुणा उसके ऊपर झुकी खड़ी है। उसे ऐसा लगा जैसे अरुणा अब रजनी को पीटना शुरू कर देगी।

एकाएक एक मोटरकार बाहर की गली में बड़े ज़ोर से फिसल पड़ी। गाड़ी के धमाके और ब्रेकों की चीख़ ने टंडन के उत्तेजित स्नायुओं पर गहरा आघात किया। चौंककर वह तेज़ी से झपटा, लेकिन और लोगों ने और भी तेज़ी दिखाई। सदर दरवाज़े पर ज़ोरों के धक्के लगने लगे। टंडन ने दरवाज़ा खोला, और आश्चर्य से चकित रह गया।

"सर रंगास्वामी ! आप यहाँ कैसे ?"

वास्तव में सर रंगास्वामी ऐयर ही सामने खड़े थे। आप

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उस समिति के अध्यक्ष थे जो खोज और रक्षा के निमित्त सरकार-द्वारा बनाई गई थी। उन्होंने तुरन्त अन्दर प्रवेश किया।

"मुझे बड़ी ख़ुशी है टंडन, कि तुम यहाँ मिल गये," सर रंगास्वामी ने कहा। "पहले हम रामेन्द्र-भवन पहुँचे, फिर यहाँ आये। तुम यहाँ न मिलते तो हमें बड़ी परेशानी उठानी पड़ती। मेरे साथ रक्षा-उप-समिति के मन्त्री, मिस्टर विनयमोहन मुकर्जी भी हैं। मिस्टर मुकर्जी! अन्दर आ जाइए। अब जब तक यह मामला समाप्त नहीं हो जायगा, तब तक मैं यहाँ से वापस नहीं जाऊँगा। जब मुझे तुम्हारी रिपोर्ट मिली और ज्ञात हुआ कि बनर्जी के आविष्कार किस हद तक पहुँच गये हैं, तो मैं तुरन्त समझ गया कि कार्रवाई करने में अब ज़रा भी देर नहीं करनी चाहिए। और तब से—"

"अभी एक पखवारे की देर है," टंडन ने कहा।

"नहीं टंडन, तुम्हारा ख़याल ग़लत है," चिन्तापूर्ण स्वर में सर रंगास्वामी ने कहा। "बनर्जी आक्रमण करने के लिए अब बिलकुल तैयार है। आज तीसरे पहर उसके एक सन्देश-वाहक ने हमें उसकी चेतावनी दी। उसने कहला भेजा कि कल पाँच बजे शाम को वह संसार का संहार करना शुरू कर देगा! उसका दावा है कि उसकी भयानक किरणें संसार का विध्वंस कर देने में सफल होंगी, और मेरा ख़याल है कि उसका दावा बिलकुल ठीक है। कल शाम को ठीक पाँच बचे वह ज़रूर हमला करेगा!"

तीनों व्यक्ति रजनी के सामने खड़े हो गये।

एक-एक करके सर रंगास्वामी, मिस्टर मुकर्जी और टंडन ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। वे प्रश्न रजनी को कोड़े से लगे।

बीस मिनट तक वे उससे जिरह करते रहे। तरह-तरह के प्रश्न करके बनर्जी के भयानक भेदों का कुछ पता लगा लेने की उन लोगों ने पूरी कोशिश की। उन्होंने उससे पूछा कि बनर्जी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

श्रीगंज में कब आया, कहाँ और किससे अपने अद्‌भुत्‌ वैज्ञानिक सिद्धान्तों की जानकारी उसने प्राप्त की, उसके कार्य में सहायता देनेवाले उसके कौन-कौन साथी हैं और वे इस समय कहाँ हैं।

बिना ज़रा भी हिचक के रजनी ने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया। उसके उत्तरों से उनकी जानकारी ज़रूर बढ़ी किन्तु चिन्ता दूर नहीं हुई, और वह भय नहीं घटा जो उनके हृदयों में आसन जमाये बैठा था। अन्त में टंडन ने एक ऐसा प्रश्न किया जिसमें उन सबकी इच्छायें और आशायें निहित थीं।

"बनर्जी को हम कैसे पा सकते हैं रजनी ?" उसने पूछा। "हमें यह बताओ।"

उसने समझा था कि रजनी या तो बात टालने की कोशिश करेगी या झूठ बोलेगी। किन्तु उसका उत्तर सुनकर उसके शरीर में बिजली की लहरें दौड़ने लगीं। दीवार पर टँगी हुई बड़ी घड़ी पर दृष्टि डालकर रजनी ने कहा—दस मिनट में वे यहाँ पहुँच जायँगे।

"क्या कहा ?" कौतूहलपूर्ण स्वर में टंडन ने कहा। "ठीक कह रही हो ? पक्का विश्वाश है तुम्हें ?"

"बेशक।"

वह उठ खड़ी हुई। उसका सुन्दर, दुबला-पतला शरीर थका-सा लग रहा था। विचित्र तन्मयता से वे सब उसे देखते रहे। एक ताक़ से उसने दफ़्ती का एक छोटा-सा, काला बक्स उठाया। टंडन ने उस छोटे बक्स के निकट एक बड़ा बक्स भी देखा। वह तुरन्त ताड़ गया कि उन दोनों में क्या है।

"मर्फ़िया है ?" कोमल स्वर में उसने पूछा। "बनर्जी के सम्बन्ध की यह बात मैं नहीं जानता था !"

"वर्षों से वे मर्फ़िया का इन्जेकशन ले रहे हैं," रजनी ने कहा। "यह बक्स आज ही आया है। रोज़ इसी वक्त़ वे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

इन्जेकशन लेते हैं। इसी लिए तो कहती हूँ कि गुफाओं से आते ही होंगे।"

उन लोगों की उपस्थिति की ज़रा भी परवाह किये बिना वह अपने काम में लगी रही। बड़ा बक्स खोलकर, इन्जेकशन की पिचकारी निकालकर उसने एक ओर रख दी। अँगीठी की आग के ऊपर उसने एक छोटी-सी केटिल लटका दी। दो मिनट में जल खौलने लगा। थोड़ा-सा खौलता जल उसने एक छोटे, चौड़े शीशे के गिलास में डाल दिया। फिर छोटे बक्स से मर्फ़िया की तीन टिकियाँ निकालकर गिलास के जल में छोड़ दीं।

"तीन!" आश्चर्यसूचक स्वर में टंडन ने कहा, क्योंकि उसने देख लिया था कि टिकियाँ गहरी शक्ति की हैं। "कोई आश्चर्य नहीं कि वह पागल है।"

"उन्होंने बतलाया था," रजनी ने कहा, "कि अब आगे उन्हें दूसरे बक्स की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

सर रंगास्वामी के चेहरे पर असीम निराशा, अपार विवशता व्यक्त हो गई। रजनी के वे शब्द साधारण थे, किन्तु उनका अर्थ भयानक था। बनर्जी का कार्य-क्रम समाप्ति के निकट पहुँच गया है, यही उसके उस कथन का तात्पर्य रहा होगा। मर्फ़िया के कृत्रिम शक्ति की ज़रूरत अब उसे नहीं पड़ेगी। उसका काम ख़त्म होने को है। कल पाँच बजे शाम को—

"सुनो, रजनी—" टंडन आगे कुछ कह नहीं सका, क्योंकि रजनी ने तुरन्त अपने ओठों पर उँगली रखकर उसे चुप रहने का संकेत किया।

किसी के पैरों की आवाज़ सुनाई देने लगी। रजनी दरवाज़े की ओर बढ़ी। ठीक उसी समय टंडन को एक ख़याल आया, और उसे कार्य-रूप में परिणत करने को वह तुरन्त आगे बढ़ा। उसका मतलब ताड़कर सर रंगास्वामी मुस्कराये।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

टंडन ने उस बक्स से तीन टिकियाँ और निकालकर गिलास में डाल दीं। और एक सेकंड के बाद वह अपने स्थान पर लौट गया। बनर्जी मर्फ़िया लेने का अभ्यस्त ज़रूर है, लेकिन अगर वह पूरी .ख़ुराक ले लेगा तो संसार निस्सन्देह उस ख़तरे से मुक्त हो जायगा जो आज उसे निगल लेने की धमकी दे रहा है!

बनर्जी ने अन्दर आकर सब लोगों को ध्यान से देखा। उसकी उस दृष्टि में उन्माद की स्वाभाविक उत्तेजना थी, घृणा थी, परिहास था।

"नमस्कार सर रंगास्वामी!" उसने कहा। "मेरे काम का समय आ गया है। आप भी हार गये, टंडन भी हार गये—सब लोग हार गये। किसी की एक नहीं चली। कृपया मुझे पिचकारी दो, रजनी।"

टंडन दम साधे खड़ा रहा। अन्यमनस्कता का भाव धारण करके सर रंगास्वामी दीवार की ओर ताकने लगे। तब एकाएक उन्हें ऐसा जान पड़ा जैसे वे किसी अंधकूप में गिर पड़े हों, क्योंकि उन्हें ज्ञात हो गया कि चाल असफल सिद्ध हुई। गिलास उठाकर बनर्जी ने उसके अन्दर की दवा टंडन के ऊपर फेंक दी।

"ओ हत्यारे!" विजय-गर्व से फूलकर परिहास-भरे स्वर में उसने कहा—"तू भूल गया था कि बक्स नया है और आज ही आया है! थोड़ा-सा जल और दो रजनी। जल्दी करो। समय बहुत कम है और मुझे अभी बहुत-कुछ करना है।"

वे असफल रहे। बनर्जी ने बक्स के अन्दर की टिकियाँ गिन ली थीं। गिलास में फिर से गर्म जल लेकर उसने उसमें तीन नई टिकियाँ डाल दीं। टिकियाँ जब घुल गईं, तब उसने पिचकारी में दवा भरी। फिर सुई अपनी बाँह में चुभोकर उसने पिचकारी ख़ाली कर दी। वह तुरन्त दरवाज़े की ओर बढ़ा।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

धमकियाँ देने और डींगें मारने का समय निकल गया था। एक ही विचार अब उसके मस्तिष्क पर अधिकार जमाये था। वह था अपने विशाल कर्त्तव्य का पालन करने का विचार।

"नमस्कार, मूर्खों !" दरवाज़े के समीप रुककर उसने कहा—"मैं कभी कुछ भूलता नहीं। अपने काम पर जा रहा हूँ। आप लोग भी अपना काम करें। और मेरी सलाह आप लोगों को यह है कि मेरा पीछा न करें, क्योंकि इससे कोई लाभ न होगा। अशोक की गुफाओं के द्वार बड़े ख़तरनाक हैं। मेरे अतिरिक्त कोई इस समय उनमें प्रवेश नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि आप लोग मुझे रोकने का साहस नहीं करेंगे। मेरी मशीनें इस समय भी चल रही हैं और कल के लिए शक्ति एकत्र कर रही हैं। उनकी संचालन-विधि मेरे अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं है। मैं ही उन्हें रोक सकता हूँ। और—सज्जनो, आपको अच्छा लगे या बुरा, आज मैं बड़ा, बहुत बड़ा—आप लोगों से भी बड़ा आदमी बन गया हूँ !"

वह चला गया। उसकी पद-ध्वनि सुनाई देने लगी, और फाटक के खुलने की आवाज़ आई। कंधे हिलाकर, सर रंगास्वामी टंडन की ओर मुड़े।

"बड़ी अच्छी तरकीब तुम्हें सूझी थी टंडन," उन्होंने कहा। "लेकिन यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वह चली नहीं। मुझे तो आशा होने लगी थी कि वह हमें बचा लेगी। शायद यही बनर्जी से हमारी अन्तिम भेंट है।"

रजनी का चेहरा एकाएक चमक उठा। वह उठ खड़ी हुई। उसकी साँसें गहरी हो गईं, और उसके सुन्दर हाथ अस्थिर हो उठे।

उसने कहा, "मुझे विश्वास है कि आप लोगों की सहायता कर सकती हूँ। मुझे एक बात याद आ गई। एक चीज़ भूल गये

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हैं, और वह यहीं है । वह है अशोक की गुफाओं का नक़शा । गुफाओं के कुछ ऐसे द्वार भी हैं जिनकी ओर उनका ध्यान नहीं गया है । नक़शा यहीं कहीं रक्खा है । देखती हूँ ।"

सोलहवाँ अध्याय

गुफाओं के अन्दर

इन्द्र बड़ी देर तक अर्ध-चेतना की दशा में पड़ा रहा । जब किसी तरह उसे होश आया, तब सिर की भयानक पीड़ा से वह तड़प उठा । उसे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे लोहे का एक बड़ा कीला उसके सिर में आरपार ठोंक दिया गया हो और वह रह-रहकर ख़ूब गर्म हो उठता हो ।

उसने उठ बैठने की कोशिश की । तब उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह तो पहले ही से बैठा था । एक चौड़ी बेंच पर दीवार के सहारे बनर्जी ने उसे बैठा दिया था । उसने अपने सिर पर हाथ फेरना चाहा । किन्तु हाथ हिल नहीं सके । वे बेंच के पायों में कसकर बाँध दिये गये थे ।

यह मालूम होते ही उसे पूरी तरह होश आ गया । वह धीरे-धीरे इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगा ।

बेंच पर एक ओर बनर्जी का भारी लबादा पड़ा था । उसके नीचे का कुछ भाग खुला था । इन्द्र ने देखा कि लबादे का अस्तर मोमजामे का है । लबादे से दृष्टि उठाकर वह इधर-उधर ताकने लगा । उधर उस ओर काफ़ी दूरी पर बनर्जी एक मशीन की चर्ख़ी पर झुका हुआ कोई पुर्ज़ा ठीक कर रहा था ।

गुफाओं का वह मध्य भाग था, जो पूर्णतः गुप्त था । कई बार उसकी खोज की गई थी, लेकिन कभी उसका पता नहीं

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

लगा था। बिजली के बल्ब इधर-उधर जल रहे थे। वह गुफा समस्त गुफाओं से बड़ी और लम्बी-चौड़ी थी, एक ही द्वार उसमें था, और वह था उस झरने के ठीक पीछे।

डायनेमो की-सी शक्ल की बड़ी-बड़ी मशीनें सामने लगी थीं। एक विचित्र प्रकार की भनभनाहट उनसे निकल-निकलकर हवा में बराबर एक ही गति से गूँज रही थी, झरने की आवाज़ बहुत हलकी सुनाई पड़ रही थी।

मशीनें दो लम्बी पंक्तियों में लगी थीं, और ताँबे के चमकते हुए तारों के द्वारा वे एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं। एक ओर दीवार पर एक बहुत बड़ा स्विचबोर्ड लगा हुआ था। वे विशाल पीपे जिनमें उन मशीनों–द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति संचित हो रही थी कहीं दिखाई नहीं दिये। इन्द्र ने अनुमान किया कि वे वहीं कहीं अवश्य मौजूद होंगे।

बड़ी देर तक बनर्जी उसके पास नहीं आया। वह अपनी मशीनों के बीच चल-फिर रहा था। कभी वह इस पुर्ज़े को ठीक करता कभी उस पुर्ज़े को, कभी इस पेंच को कसता कभी उस पेंच को। एक बड़े बल्ब के तीव्र प्रकाश में वह अधिक स्पष्टता से दृष्टिगोचर हुआ। तब इन्द्र ने एक ऐसी बात देखी जिसने गोलियों के प्रभाव से उसके सुरक्षित रहने का भेद खोल दिया। वह एक लोहे की क़मीज़ पहने हुए था, जो उसके शरीर को गर्दन से घुटनों तक ढके हुए थी। लोहे की नन्हीं-नन्हीं कड़ियों की घनी पंक्तियों को एक-दूसरे से जोड़कर वह क़मीज़ तैयार की गई थी, और उसके नीचे चमड़े का अस्तर लगा हुआ था।

इन्द्र का शरीर पसीने में डूबा जा रहा था। विकट पीड़ा सहता हुआ, विचारों में डूबा हुआ, वह निस्तब्ध, मूर्तिवत् बैठा रहा। जब-कभी बनर्जी उसकी ओर देखता, तब अपने भावों से वह यही प्रकट करता कि वह अचेत है। वह जानता था कि

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

अचेतना प्रकट करना ही उस समय उसके लिए उचित है। जितना अधिक समय वह इस तरह टाल सकेगा उतना ही उसके और समस्त संसार के हक़ में अच्छा होगा, क्योंकि इससे टंडन को वहाँ पहुँच सकने के लिए अधिक समय मिल सकेगा। केवल टंडन ही उसे बचा सकता है। तालाब पर वह नहीं आया यहाँ भी वह अभी तक नहीं पहुँच सका ? आख़िर बात क्या है ? उसकी बुद्धि, तर्क-शक्ति और प्रतिभा क्या इस बार जवाब दे गईं ?

बनर्जी अन्त में उसके पास आया। और उसने उसे पकड़ कर हिलाया।

"जागो ! जागो !" उसने कहा।

इन्द्र उसी तरह आँखें बन्द किये बैठा रहा।

"जागो ! समय बहुत कम है। और मरुभूमि के उस पार मानवों की दुनिया में जाने से पहले तुम्हें बहुत कुछ देखना और समझना है।"

इन्द्र ने आँखें खोल दीं और कौतूहलपूर्ण दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

"मैं कहाँ हूँ ?"

"अशोक की गुफाओं में और वीरभद्र के सामने। तुमने विद्रोह किया और उसका दण्ड पाया। किन्तु विद्रोह तुमने स्वेच्छा से नहीं किया था। इसलिए उस दुर्लभ सम्मान से तुम वंचित नहीं किये जाओगे जो तुम्हें प्रदान किया जा चुका है। तुम मेरे सन्देशवाहक निर्वाचित हो चुके हो, और अब तुम्हें अपने महान् कर्तव्य का पालन करना होगा।"

"मेरे हाथ खोल दो बनर्जी," विकल स्वर में इन्द्र ने कहा।

"नहीं जिस तरह बैठे हो उसी तरह बैठे रहो। मुझे तुम्हारे सामने अपने साधनों का प्रदर्शन करना, और उनसे सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रखनेवाली आवश्यक बातें तुम्हें समझानी हैं। सम्भव है विद्रोह की भावना अब भी तुम्हारे अन्दर मौजूद हो और अवसर पाकर उभर पड़े। अपनी शक्तियों का प्रदर्शन और तुम्हारी रखवाली—दोनों काम मैं एक साथ नहीं कर सकूँगा। तुम्हें—"

"लेकिन इस हालत में बैठे-बैठे मैं तुम्हारी बातें समझ नहीं सकता," तीव्र स्वर में इन्द्र ने कहा। "सिर से पैर तक तुमने मुझे बाँध रक्खा है। जो कुछ तुम दिखाओगे वह सब मैं देख भी नहीं सकूँगा। मेरा सिर दुख रहा है, कटा जा रहा है। क्या तुम समझते हो कि मैं यहाँ से भाग जाऊँगा ? यहाँ के मार्गों से मैं परिचित नहीं हूँ, पत्थर की दीवारें मैं तोड़ नहीं सकता। और तुम्हारी दृष्टि से बच निकलना मनुष्य के मान की बात नहीं है। मैं किसी तरह भाग नहीं सकता। तारों को मेरे शरीर से हटा दो, और अपनी बातें समझ सकने का मुझे मौक़ा दो।"

बनर्जी दो क्षण तक विचार करता रहा। इन्द्र का अनुरोध उसे कुछ उचित प्रतीत हुआ। किन्तु अन्त में उसने अस्वीकृति-सूचक भाव से सिर हिलाया।

"नहीं, यह ज़रूरी है कि तुम जिस तरह बैठे हो उसी तरह बैठे रहो। इसी अवस्था में तुम्हारे ऊपर अपनी किरणें सुविधापूर्वक फेंक सकूँगा। अगर तुम चलते-फिरते रहोगे, तो किरणों का प्रभाव मेरी किरणों के ऊपर भी पड़ेगा और उन्हें क्षति पहुँचेगी। बस, तुम्हें इसी तरह बैठे रहना पड़ेगा। बेंच का दूसरा सिरा तुम आसानी से देख सकते हो। वहीं तुम्हारी आँखों के सामने मैं अपने प्रयोगों का प्रदर्शन करूँगा।"

दूसरी ओर से वह एक दूसरी बेंच घसीट लाया और उसे उसके पैरों के पास तक खिसका दिया। वह बेंच भाँति भाँति की चीज़ों से लदी थी। तरह-तरह की धातुओं के टुकड़े, छोटे-छोटे पत्थर और अन्य सामग्रियाँ उसके एक सिरे पर रक्खी थीं। दूसरे

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सिरे पर दो छोटी-छोटी मशीनें थीं। वे एक ऐसी धातु की बनी थीं जो बड़ी कड़ी मालूम होती थी और उससे हरी चमक निकल रही थी। लम्बे-लम्बे तार उन मशीनों के पीछे से निकल-कर स्विच-बोर्ड तक चले गये थे।

"ये छोटे-छोटे यंत्र मेरे खिलौने हैं," वैज्ञानिक ने कहा। "जो बड़ी-बड़ी मशीनें तुम उस तरफ़ देख रहे हो उनकी ये लघु प्रति-मूर्तियाँ हैं। इन्हीं के आधार पर उनकी सृष्टि की गई है। केवल प्रयोग करने के लिए मैं इन्हें इस्तेमाल करता हूँ।"

उसके शब्दों में अतिशयोक्ति या मिथ्याभिमान भी नहीं था। उसकी दशा थी उस महान् वैज्ञानिक की-सी जो मंच पर खड़ा हुआ विज्ञान से अनभिज्ञ श्रोताओं को वैज्ञानिक ढंग से किसी महान् वैज्ञानिक आविष्कार की कथा सुना रहा हो।

उसने पारे के उन गोलों की ओर संकेत किया जो मशीनों के सिर पर लगे हुए थे।

"इन्हीं गोलों से किरणें निकलती हैं," उसने कहा। "यह पारा शीशे में बन्द नहीं है। यह मुक्त है। पारे के ये गोले ठोस हैं। अपने प्रयोगों में मैं दोनों मशीनों से काम लेता हूँ। एक मशीन गुरुत्वाकर्षण-शक्ति नष्ट करती है, दूसरी संयोग-शक्ति। बड़ी मशीनों में दोनों सिद्धान्त एक साथ मिला दिये गये हैं और इस तरह उनसे जो मृत्यु-किरण निकलती है उसकी करामात तुम महतो के तालाब में और अन्य स्थानों पर देख चुके हो। वह शक्ति विद्युत् के समान है और तार के सहारे चल सकती है। मृत्यु-किरण यहाँ इतनी अधिक मात्रा में संचित हो चुकी है कि इस पृथ्वी से कहीं बड़ा भूमंडल बड़ी आसानी से विध्वस्त किया जा सकता है। मैं तुम्हें लोहे पर इस शक्ति का असर दिखाता हूँ।"

बेंच के दूसरे सिरे पर दीवार के सहारे उसने लोहे का एक बड़ा-सा टुकड़ा रख दिया। मशीन लोहे के उस टुकड़े से काफ़ी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दूर थी और उसका कोई तार उससे जुड़ा नहीं था। उसी अज्ञात धातु का एक बड़ा-सा चोंगा बनर्जी ने पारे के गोले पर लगा दिया और उसका मुख सीधा उस लोहे की ओर कर दिया। तब उसने मशीन के नीचे लगा हुआ एक खटका दबा दिया। पारा तुरन्त प्रकाशमान हो उठा। हरे रंग का बड़ा तीव्र प्रकाश उसमें से निकलने लगा। वह प्रकाश ठीक वैसा ही था जैसा गुफाओं के बाहर इधर अकसर दिखाई देता था।

इन्द्र आँखें फाड़कर देखता रहा। ज़रा भी आवाज़ उस भयानक यंत्र से नहीं निकल रही थी। केवल उन बड़ी-बड़ी मशीनों की भनभनाहट ही, उनकी भयानक शक्ति की घोषणा करती हुई, हवा में गूँज रही थी।

इन्द्र देखता रहा। किसी जलती हुई भट्ठी के मुख के पास रक्खा हुआ बर्फ़ का टुकड़ा पिघलने की क्रिया में जिस तरह इधर-उधर खिसकता है, उसी तरह ठोस फ़ौलाद का वह टुकड़ा दीवार का सहारा छोड़कर फिसलने लगा, दस सेकंड में छिन्न-भिन्न होकर वह राख हो गया। बनर्जी ने तुरन्त खटका दबाकर मशीन बन्द कर दी।

"मरुभूमि में पड़ी हुई भूरी मृत्यु-रेखा में यही बात तुमने देखी थी," बनर्जी ने कहा। "यह संहारिणी शक्ति उस समय उस तार के द्वारा फेंकी गई थी जो कुछ महीने पहले फ़ौजवालों ने अपनी नक़ली लड़ाइयों के सिलसिले में मरुभूमि में लगाया था। ताँबा ऐसी धातु है जिस पर इसका असर देर में होता है। ताँबा आध घंटे में नष्ट होता है।

"केवल इसी प्रयोग से पृथ्वी के संहार की सम्भावना सिद्ध हो जाती है। समस्त संसार में तरह-तरह के तारों का एक विशाल जाल फैला हुआ है। तार भेजने के तार हैं, टेलीफोन के तार हैं, बिजली के तार हैं, रेलगाड़ी की पटरियाँ हैं। दुनिया का कोई

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

कोना ऐसा नहीं है जो तारों के प्रभावक्षेत्र से बाहर हो। तारों के इसी विराट् जाल में मैं अपनी मृत्यु-किरण फेंकूँगा। कोई धातु, कोई शक्ति मृत्यु-किरण का विरोध अधिक समय तक नहीं कर सकती। रबर और चीनी-मिट्टी में भी यह शक्ति दौड़ सकती है।

"इन पहाड़ियों में संचित अपार शक्ति दस सेकंड में संसार के प्रत्येक भाग में काम करना शुरू कर सकती है। एक सेकंड में यह किरण ठोस ज़मीन में सौ फ़ुट नीचे तक घुस जाती है इन छोटी मशीनों से काम लेने पर! बड़ी मशीनों की भेदन-शक्ति चार हज़ार गुना अधिक होगी। इसका मतलब यह है कि बत्तीस सेकंड में यह विराट् भूमंडल—समस्त पहाड़, झील, नदी, नगर, ग्राम, जीव, जन्तु सहित—उसी अवस्था को प्राप्त हो जायगा जिसका प्रदर्शन अभी तुम्हारी आँखों के सामने हो चुका है!

"केवल दो प्राकृतिक शक्तियाँ हैं जिनके कारण इस पृथ्वी का अस्तित्व क़ायम है—गुरुत्वाकर्षण-शक्ति और संयोग-शक्ति। मृत्यु-किरण इन दोनों शक्तियों को नष्ट कर देगी। लोहे के उस टुकड़े से संयोग-शक्ति निकाल दी गई, और वह धूल के एक ढेर में परिणत हो गया। उसकी धूल गुरुत्वाकर्षण-शक्ति के कारण ही अभी यहाँ मौजूद है। अब गुरुत्वाकर्षण-नाशक यंत्र की करामात देखो। एक सेकंड का एक हज़ारवाँ भाग भी इसे ग़ायब कर देने में नहीं लगेगा।" उसने तुरन्त दूसरी मशीन का खटका दबाया।

फ़ौरन लोहे की धूल से एक तेज़ आवाज़ निकली और वह बड़ी तेज़ी से उठकर ऊपर छाये हुए अंधकार का परदा चीरती हुई उड़ गई।

"इसी तरह यह संसार भी विनष्ट होकर ग़ायब हो जायगा," पागल ने मंद स्वर में कहा। "ज़रा देर में मृत्यु-किरण इसे क्षत-

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

विद्युत परमाणुओं के एक विशाल ढेर के रूप में परिणत कर देगी और फिर पलक मारते ही वे निर्जीव परमाणु वाष्पों में परिणत होकर अनन्त महाशून्य में अन्य ग्रहों के आस-पास चक्कर काटते फिरेंगे।"

अन्य धातुएँ तथा अन्य वस्तुएँ उसने उन भयानक किरणों के प्रभाव-क्षेत्र में फेंकीं। वे सब भी नष्ट होकर अदृश्य हो गईं। इन्द्र अपनी आँखें उस स्थान से बलपूर्वक हटाने की कोशिश करने लगा जहाँ उन आश्चर्यजनक प्रयोगों का प्रदर्शन हो रहा था। वह अपनी आँखें बनर्जी की तीक्ष्ण दृष्टि के क्षेत्र से हटा लेना चाहता था। अपार स्फूर्ति, विकट उत्तेजना उसके शरीर में अकस्मात् दौड़ने लगी थी, और उसे डर लग रहा था कि कहीं बनर्जी उसकी छाया उसकी आँखों में न देख ले।

दो अदृश्य हाथ बेंच के नीचे काम कर रहे थे। वे धीरे-धीरे उन तारों को खोल रहे थे जिनसे इन्द्र के हाथ बँधे हुए थे। किसी को उसने नहीं देखा, किसी की आहट उसे नहीं मिली। जहाँ तक उसे ध्यान था उसके और उस पागल वैज्ञानिक के अतिरिक्त उस विशाल प्रयोगशाला में कोई अन्य व्यक्ति नहीं था, मुक्ति के समस्त मार्ग उसके लिए बन्द हो चुके थे। फिर भी इस बात में सन्देह की अब ज़रा भी गुंजाइश नहीं थी कि कोई किसी तरह उस गुप्त कंदरा में घुस आया था और बनर्जी को उसी की माँद में शिकस्त देने के प्रयत्न में लगा था। कौन हो सकता है वह ?

यह ख़याल उसके पीड़ित मस्तिष्क का भ्रम नहीं है, छाया की-सी निस्तब्धता से काम करती हुई उसकी फुर्तीली ऊँगलियों का स्पर्श उसे स्पष्ट अनुभव हो रहा है। एक हाथ खुल गया है, और वे दक्ष उँगलियाँ उसे सहला-सहलाकर रुके हुए रक्त को

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

नसों में पुन: दौड़ने में सहायता पहुँचा रही हैं। कितना आराम मिल रहा है उसके उस हाथ को !

"वह मुर्ग़ाबी संयोगनाशक यंत्र की किरण के सामने पड़ गई थी," बनर्जी ने कहा। "इसी तरह वह ख़रगोश भी उसके सामने पड़ गया था। उस किरण को दूर तक फेंकने के प्रयोग उस समय हो रहे थे और वे सफल सिद्ध हुए। भेड़ों के ग़ायब होने का कारण यह था कि उन पर गुरुत्वाकर्षण-नाशक यंत्र से प्रयोग किया गया था। और महतो का तालाब सुखाया गया था उन दोनों शक्तियों के संतुलित योग से—दोनों किरणों का वही संतुलित योग जिससे इस स्वेच्छाचारिणी पृथ्वी का संहार किया जायगा। अच्छा, अब मैं तुम्हें यह दिखाऊँगा कि जीवित तन्तुओं पर इन किरणों का कैसा प्रभाव पड़ता है। ज़रा सब्र करो, मैं अभी एक पिंजड़ा जिसमें ज़िन्दा जानवर बन्द हैं, लिये आता हूँ। उसके बाद तुम्हारे ऊपर प्रयोग करूँगा और तब तुम्हें स्वयं उन किरणों के आश्चर्यजनक प्रभाव का अनुभव हो जायगा।"

घूमकर वह गम्भीर भाव से स्विच-बोर्ड की ओर चला और ज़रा देर में उस कंदरा से बाहर हो गया।

इन्द्र को ज्ञात हुआ कि उसका दूसरा हाथ भी खुल गया है। तब हाथों के सहारे एक ओर झुककर उसने बेंच के नीचे झाँका। एक भोला-भाला, भयभीत चेहरा उसकी ओर ताकने लगा।

"अरे—रजनी !"

अविश्वास तथा आश्चर्य से इन्द्र उसकी ओर कई क्षणों तक देखता रह गया।

रजनी—ऐसे भयानक स्थान में ! बनर्जी की इस गुप्त प्रयोग-शाला में भी यह वैसी ही आज़ादी से आती-जाती है जैसी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आज़ादी से रजनी-कुटीर में रहती है! अब भी वह बनर्जी का साथ नहीं छोड़ सकी!

तब एक विचित्र अनुमान उसके मस्तिष्क में आया, और उसने तरह-तरह के प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

किन्तु ओठों पर उँगली रखकर रजनी ने उसे चुप रहने का संकेत किया। उसकी आँखों में अपार अनुनय और चेतावनी व्यक्त थी।

"धीरे बोलो!" अति मंद स्वर में उसने कहा—"ईश्वर के लिए बहुत धीरे बोलो! कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हारी आवाज़ सुन लें। अगर वे मुझे तुम्हारी सहायता करते देख लेंगे, तो मेरे शरीर की धज्जियाँ उड़ा देंगे।"

"लेकिन—लेकिन—"

इन्द्र का कंठस्वर भी बिलकुल मंद हो गया।

"फ़िज़ूल बातें मत करो," रजनी ने कहा। "समय बहुत थोड़ा है। जैसा मैं कहूँ वैसा ही करो, वर्ना जीवन भर के लिए अपाहिज बनकर यहाँ से निकलोगे। वे जानवर लाने गये हैं न?"

इन्द्र के पैरों के बंधन खोलकर वह बाहर निकल आई।

"हाँ," इन्द्र ने उत्तर दिया। "मुझे दिखाने के लिए अब वह जानवरों पर प्रयोग करेगा।"

"तब वे दस मिनट से पहले वापस नहीं आयेंगे। चिड़ियों और जानवरों को वे एक दूसरी गुफा में रखते हैं जो इस गुफा से अधिक गर्म है और यहाँ से काफ़ी दूर है। इतने समय में तुम यहाँ से भाग तो ज़रूर सकते हो—लेकिन इससे कोई फ़ायदा न होगा। या तो तुम्हारा पीछा करके वे तुम्हें फिर पकड़ लेंगे या तुम्हारे ऊपर मृत्यु-किरण फेंककर तुम्हें ख़त्म कर देंगे। नहीं, इससे काम नहीं चलेगा। तुम्हें उनसे लड़ना चाहिए और उन्हें

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

हराने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। तुम्हारा ही नहीं, सारी दुनिया का इसी में कल्याण है।"

"मैं ?" इन्द्र ने कहा, "बनर्जी से मैं लड़ूँ ? नहीं, उस दैत्य से मैं नहीं लड़ सकूँगा। लड़ने से मैं घबराता नहीं, किसी से भी लड़ सकता हूँ। लेकिन बनर्जी मनुष्य के रूप में दैत्य है। आज उसके ऊपर मैंने पूरा रिवाल्वर ख़ाली कर दिया, लेकिन उसकी गोलियों ने उसे हानि के बजाय लाभ ही पहुँचाया। उससे लड़ना बेकार है। ज़रा देर में वह मुझे पटक देगा।"

"नहीं, नहीं। मेरा मतलब उस तरह की लड़ाई से नहीं है। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि उससे कोई लाभ न होगा। एक रात को मेरी आँखों के सामने उन्होंने तीन बदमाशों को मार डाला था। हम यहाँ आ रहे थे, और उन बदमाशों ने रास्ते में उनके ऊपर हमला कर दिया था। तुम्हें अपने दिमाग़ से काम लेना होगा। तुम्हारे हाथ अब मुक्त हो गये हैं। अचानक अज्ञात रूप से हमला करने की कोई तरकीब सोच निकालो। भाँपने या सन्देह करने का भी मौक़ा उन्हें मत दो। ऐसा कर पाना तुम्हारे लिए असम्भव नहीं है। ख़तरा बिलकुल निकट आगया है। इस योजना की सारी बातें मुझे मालूम हैं। प्रायः सदैव मैं उनके साथ रहती हूँ, और वे मुझसे खुलकर बातें करते रहते हैं। मैं जानती हूँ कि उनके उद्देश्य और इरादे क्या हैं। और आज रात को मैंने ऐसी बातें सुनी हैं जिनसे बेतरह भयभीत हो उठी हूँ!"

"वे कौन-सी बातें हैं रजनी ? जल्दी बतलाओ।"

"वे भी इसी घृणित योजना—संसार-संहार की योजना—से सम्बन्ध रखती हैं। संसार का संहार अब किसी समय भी हो सकता है।"

"यह मुझे मालूम है। उसने ख़ुद मुझे बतलाया है। लेकिन संहार की क्रिया आरम्भ करने से पहले मेरी हुलिया बिगाड़कर,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

मुझे अपाहिज बनाकर वह मुझे संसार के सामने प्रमाण के तौर पर पेश करना चाहता है, ताकि मानव जाति समझ ले कि उसकी भी वैसी ही दशा होगी।"

"हाँ, मैंने भी सुना था। वे भी वह बात नहीं जानते जो मैं जानती हूँ। अपने विचारों में वे बुरी तरह खोये हुए हैं और उस ख़तरे की ओर उनका ध्यान नहीं है जो उनके चारों ओर उमड़ रहा है। बिना उनकी इच्छा के ही संसार का संहार किसी समय भी—इसी समय भी जब हम बात कर रहे हैं—हो सकता है!"

"ऐं! यह क्या कह रही हो? तुम्हारा मतलब क्या है?"

"जिन पीपों में मृत्यु-किरण संचित की जा रही है वे भर गये हैं, और वे अपने अन्दर भरी हुई शक्ति के भयानक दबाव को अब ज़्यादा देर तक सह नहीं सकते। वे विस्फोट के निकट पहुँच गये हैं। दबाव अगर शीघ्र ही कम नहीं कर दिया जाता, तो उनका फट जाना अनिवार्य है। और यह बात वे नहीं जानते! अन्य बातों में वे इतने व्यस्त हैं कि माप-यंत्रों पर दृष्टि डालने की उन्हें जैसे फ़ुर्सत ही नहीं है। शायद ऐसा करने की ज़रूरत उन्हें महसूस ही नहीं होती, या वे यंत्र ही उनकी दृष्टि में महत्त्व-हीन हो गये हैं। मैं तो भय के मारे मरी जा रही हूँ। तीन वर्षों से मृत्यु-किरण उन पीपों में भरी जा रही है। उस समय भी मैं यहाँ मौजूद थी जब वे पीपे बनकर तैयार हुए थे—और उस समय भी मौजूद थी जब मशीनें पहले-पहल चालू की गई थीं।

"इन्द्र! जानते हो गोदामवाली गुफाओं में क्या हो रहा है? वे विशाल पीपे अन्दर भरी हुई शक्ति के अत्यधिक दबाव के कारण ज़ोरों से थर्रा रहे हैं। मृत्यु और विनाश की अपार शक्ति उनमें भरी पड़ी है और यदि वह निकल पड़ेगी तो इस दुनिया की हस्ती मिटे बिना न रहेगी।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"जानते हो इन्द्र, मैं वर्षों से उस महासंहार को रोकने का प्रयत्न कर रही हूँ। किन्तु मैं अब विवश हूँ। मेरे ऊपर भी अब उन्हें विश्वास नहीं रह गया है। सेनापति जैसी दृष्टि से विश्वासघाती सिपाही को देखता है वैसी ही दृष्टि से अब वे मुझे देखते हैं। अब मैं कुछ नहीं कर सकती।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि अगर उस दैत्य को आज—इसी समय—मार भी डालूँ, तो भी यह भयानक विपत्ति टल नहीं सकती ?" इन्द्र ने विकल स्वर में पूछा।

रजनी ने बड़ी सावधानी से गुफा की दूसरी ओर दृष्टि डाली।

"हाँ !" भयभीत स्वर में उसने उत्तर दिया। "ये भयानक मशीनें अगर शीघ्र ही रोकी नहीं जातीं, तो विपत्ति किसी तरह नहीं टल सकेगी। पीपे बिलकुल भर गये हैं। बाहर दौड़े हुए तार किसी दूसरी ओर हटा दिये गये हैं। जहाँ वे पहले थे वहाँ अब नहीं हैं। स्विचबोर्डों में भी उन्होंने परिवर्तन किये हैं। यह सब शायद उन्होंने उस सन्देह के कारण किया है जो उनके मन में मेरे प्रति पैदा हो गया है। तारों का एक बहुत बड़ा जाल मरुभूमि के नीचे फैला हुआ है, इन्द्र। उनकी सहायता से मृत्यु-किरण संसार के कोने-कोने में पहुँच जायगी। पीपे अगर कहीं फट गये तो हमारी रक्षा किसी तरह नहीं हो सकेगी।"

इन्द्र ने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिये।

"मेरा ख़याल है रजनी, कि बचत की कोई न कोई तरकीब जरूर निकल आयेगी। एक तरकीब मुझे सूझ भी रही है। वह ठीक भी मालूम होती है। लेकिन उसका ज़िक्र करने के पहले मैं तुम्हें अपने मन की वह बात बतला देना चाहता हूँ जिसका सम्बन्ध तुमसे है। मैं—"

"उनकी—उनकी हत्या तो नहीं करोगे ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"शायद करनी पड़े। लेकिन यह तुम क्यों पूछ रही हो? उसकी मृत्यु से क्या तुम्हें बड़ा दुःख होगा?"

उत्तर देने के बजाय वह भयभीत दृष्टि से उस ओर देखने लगी जिधर बनर्जी गया था।

"अब ख़ामोश रहो!" उसने कहा, "वे आ रहे हैं। अब ठीक उसी तरह बैठ जाओ जैसे पहले बैठे थे। उस हाथ को ज़रा और झुका लो। अब ठीक है। सिर को इस तरह कर लो कि गर्दन पर ज़ोर पड़ता जान पड़े। ज़रा और इधर। बस ठीक है। मेहरबानी करके ऐसी सावधानी से काम लेना कि उन्हें ज़रा भी शक न हो सके।"

वह बेंच के नीचे छिप गई।

गर्दन पर ज़ोर देकर इन्द्र ने देखा कि बनर्जी चला आ रहा है। अपने हाथों में वह दो बक्स लिये हुए था। उसके ज़रा और बढ़ आने पर ज्ञात हुआ कि एक तो बक्स ही है, लेकिन दूसरा लकड़ी का एक चौकोर पिंजड़ा है जो एक गज़ लम्बा-चौड़ा है।

इन्द्र के समीप पहुँचकर उसने बक्स ज़मीन पर रख दिया और पिंजड़ा बेंच पर। पिंजड़े में भूरे रंग और मुलायम बालों का एक छोटा-सा जानवर बंद था। वह ग़ुर्रा रहा था और पिंजड़े की सीखों पर पंजे पटक रहा था।

"यह बड़ा ज़िद्दी और तेज़ जानवर है और आसानी से क़ब्ज़े में नहीं आता," बनर्जी ने कहा। "इस देश में यह नहीं पाया जाता। इसे बैजर कहते हैं। प्रयोग के लिए देश, विदेश के जो जानवर मैंने मँगवाये थे यह उन्हीं में से एक है। इधर कई सप्ताह से मैं जानवरों पर प्रयोग करता रहा हूँ, यह देखने के लिए कि कहीं जानवरों की कोई ऐसी जाति तो नहीं है, जिस पर मृत्यु किरण असर न कर सके। अभी तक मुझे कोई ऐसा जानवर नहीं मिला है जो मृत्यु-किरण के सामने आध

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

सेकंड भी टिक सके। इन प्रयोगों में भी मैंने छोटी मशीनों से ही काम लिया है।"

"उस बेचारे को मारने की ज़रूरत नहीं," इन्द्र ने कहा। "यह तो मैं देख ही चुका हूँ कि तुम्हारी मशीनें क्या कर सकती हैं। समय फ़िज़ूल क्यों नष्ट करते हो? अब मेरे ऊपर कार्रवाई शुरू करो और किसी तरह मुझे यहाँ से जाने दो।"

"लेकिन, मित्र—"

"देखो बनर्जी, मेरे सामने ग़रीब, बेज़बान जानवरों की हत्या करना बिलकुल बेमतलब बात है। बहादुरी या बड़ाई की कोई बात इसमें नहीं है। वह बेचारा अपनी रक्षा नहीं कर सकता। तुम्हारा दावा साबित हो चुका है। उसे फिर-फिर साबित करने में क्या फ़ायदा है?"

"कुछ घंटों के बाद मनुष्यों के साथ संसार के समस्त पशु भी मर जायँगे," शान्त स्वर में पागल ने कहा। "यह बैजर भी तब मरेगा ही। ऐसी दशा में कुछ समय पहले ही मर जाने से इसका क्या नुक़सान हो जायगा? यह बहुत ज़रूरी है कि जब तुम दुनियावालों के पास वापस जाओ तो उन्हें सब कुछ बता सको। जब तक एक तेज़, स्वतन्त्र प्रकृतिवाले जानवर पर मृत्यु-किरण के प्रभाव का हाल तुम न सुनाओगे, तब तक तुम्हारी बात अधूरी ही रहेगी। इस योजना का यह एक अत्यन्त आवश्यक नियम है कि मरनेवालों को मरने के पहले सारी बातें समझा दी जायँ और उन्हें पश्चात्ताप करने का पूरा-पूरा मौक़ा दिया जाय।"

इन्द्र ने कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप बैठा दाँत पीसता रहा। किन्तु उसके लिए उपयुक्त अवसर अभी नहीं आया था। एक ग़लत चाल सारी आशा पर पानी फेर देगी। बनर्जी अब

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

भी पहले ही की तरह गम्भीर और लापरवाह था, लेकिन अब वह रह-रहकर सन्देहभरी दृष्टि से इधर-उधर देखने लगता था।

ऐसा जान पड़ता था जैसे उसके विकृत मस्तिष्क को उस वातावरण में किसी अज्ञात परिवर्तन का आभास मिल रहा हो, जैसे इन्द्र के व्यवहार में या उसके शरीर की स्थिति में कोई सूक्ष्म, जटिल परिवर्तन उसे दिखाई दे गया हो।

इन्द्र भी समझ गया कि बनर्जी को कुछ सन्देह हो गया है।

सत्रहवाँ अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध

इन्द्र सोचने लगा कि अगर वह रजनी को अपना रिवाल्वर दे देता, तो ज्यादा अच्छा होता। बनर्जी अगर इसी तरह बराबर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाता रहेगा तो रजनी को ज़रूर देख लेगा और तब उस बेचारी की शामत आ जायगी। अगर बनर्जी के सिर पर गोली मारी जाय, तो काम बन सकता है। लोहे की क़मीज़ पहने रहने के कारण ही वह उस समय बच गया था। काश उस समय एक गोली वह उसके सिर पर चला देता!

"इस विलम्ब के लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ," बनर्जी ने मन्द स्वर में कहा, "लेकिन मेरी इच्छा यह है कि मृत्यु-किरण की सम्पूर्ण शक्ति का प्रदर्शन करूँ। इस प्रयोग में मैं दोनों मशीनों से एक साथ काम लूँगा। दोनों शक्तियाँ एक साथ काम करेंगी। इसका प्रभाव ठीक वैसा ही रहेगा जैसा बड़ी मशीनों की शक्ति का पड़ता है। मशीनों में सम्पर्क स्थापित कर दिया जाता है और चोंगे इस तरह लगा दिये जाते हैं। जानवर ज़रा स्थिर हो जाय,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

तो मैं दिखलाऊँ कि जब दोनों किरणें एक साथ फेंकी जाती हैं तब क्या होता है।"

इन्द्र लाचार था। उस बहादुर जानवर की ओर उसे देखना ही पड़ रहा था। एक तो बनर्जी के अप्रसन्न हो उठने की आशंका थी, दूसरे मृत्यु-किरण की भयानक शक्ति का प्रत्येक प्रदर्शन देख लेना भी ज़रूरी मालूम हो रहा था।

बिजली के तीव्र प्रकाश और बड़ी मशीनों की भनभनाहट के कारण बैजर अत्यधिक उत्तेजित हो उठा था। आँखें फाड़कर ताकता और दाँत निकालकर ग़ुर्राता हुआ वह बड़ी तेज़ी से पिंजड़े में दौड़ रहा था।

बनर्जी चाहता था कि वह स्थिर हो जाय। उसकी उँगलियाँ खटके पर थीं, ताकि ज्यों ही उसका चक्कर काटना बन्द हो वह तुरन्त उसे दबा दे।

लेकिन वह नन्हा-सा जानवर उस बात का मौक़ा ही नहीं दे रहा था। उसकी दौड़ बन्द नहीं हुई और न उसके बन्द होने का कोई लक्षण ही प्रकट हुआ। इसके प्रतिकूल ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे वह अपनी दौड़ सारी रात आसानी से जारी रख सकेगा।

तब बनर्जी ने झल्लाकर खटका दबा दिया।

इन्द्र सहम गया। पिंजड़ा और बैजर—दोनों ग़ायब हो गये।

ऊपर गुफा की छत पर राख की एक हलकी-सी रेखा खिंच गई थी। वह थी उस करुण संहार का ध्वंसावशेष।

"देखा तुमने ?" बनर्जी ने कहा। "तात्कालिक और पूर्ण संहार ! और विश्वास करो, संसार में किसी को ऐसी शक्ति का ज्ञान नहीं है जो इन किरणों को काट या रोक सके। उस जीवित शरीर को गुरुताहीन राख में परिणत कर देने में एक सेकंड का शतांश भी नहीं लगा। मेरा ख़याल है कि अगर इस माप को ध्यान में चढ़ा लेने का कष्ट करो, तो इससे उन लोगों को लाभ

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

होगा जिनकी आत्माओं की रक्षा करने का महत्त्वपूर्ण कार्य तुम करने जा रहे हो। पशु-सम्बन्धी दूसरा प्रयोग एक पालतू जानवर से सम्बन्ध रखता है। जंगली और पालतू, दोनों तरह के जानवरों पर मृत्यु-किरण का कैसा असर पड़ता है, यह देख लेना तुम्हारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। जंगली जानवर की दशा तुम देख चुके, अब पालतू जानवर का हाल देखो।"

बक्स ज़मीन से उठाकर उसने बेंच पर पटक दिया।

बक्स से निकली हुई एक तेज़ ग़ुर्राहट इन्द्र के कानों में गूँज उठी। वह ग़ुर्राहट उसे कुछ परिचित-सी प्रतीत हुई।

"यह समझना स्वाभाविक है," बनर्जी ने कहा, "कि कुत्ता जैसा पालतू जानवर मृत्यु-किरण के सामने उतने समय तक नहीं टिक सकता जितने समय तक जंगली जानवर टिक सकता है। लेकिन मेरी राय यह है कि संहार की क्रिया इतनी शीघ्रता से होती है कि समय के फ़र्क़ का अन्दाज़ा लगाना बेकार-सा हो जाता है। अभी तुम ख़ुद देखोगे और अपनी राय क़ायम कर सकोगे। यह एक साधारण-सा विलायती कुत्ता है। अपरिचित व्यक्तियों से यह कुछ चिढ़ता है, लेकिन इस जाति के कुत्तों की आदत ही ऐसी होती है। यह कुत्ता आज मरुभूमि में पकड़ा गया था।"

बक्स पर लिपटी हुई रस्सी खोलकर, ढक्कन हटाकर, उसने उस कुत्ते को बाहर निकाला। वह एक स्वस्थ, सुन्दर, सफ़ेद टेरियर था। उसकी आँखों में स्वाभाविक मस्ती थी और उसके कान ऊपर की ओर तने हुए थे।

"हार्डी!" इन्द्र अपने स्थान से चिल्ला पड़े।

शान्तिमिश्रित प्रसन्नता से भौंककर वह अपने मालिक की ओर लपका। लेकिन उसकी गर्दन के पट्टे में एक डोर बँधी हुई थी और उस डोर का दूसरा सिरा बनर्जी के हाथ में था। उसने उसे तुरन्त पीछे खींच लिया। ग़ुर्राकर हार्डी उसके ऊपर टूट पड़ा,

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

उसके तेज़ दाँत बनर्जी के हाथ में घुस गये। बनर्जी दर्द से तड़प उठा और डोर उसके हाथ से छूट गई।

एक क्षण में हार्डी अपने मालिक के ऊपर था और उसे धूल-गर्द से भरता और चूमता-चाटता हुआ अपनी असीम प्रसन्नता प्रकट कर रहा था। उसकी दुम: तेज़ी से हिल रही थी।

क्रोध से उबलता हुआ बनर्जी कुत्ते की गर्दन पकड़ लेने के लिए इन्द्र के ऊपर झुका। इन्द्र को यही अवसर था।

बनर्जी की गर्दन उसके ऊपर फैली हुई थी, और वह सँभला हुआ नहीं था। हाथ कुत्ते को पकड़ने के लिए फैले हुए थे और उस स्थिति में वह प्राय: शक्तिहीन-सा था।

इन्द्र ने उसके फैले हुए गले के बीच में तने हुए हाथ के नीचे के सिरे से वार किया।

उस वार का काफ़ी असर हुआ। बनर्जी लड़खड़ाकर पीछे हट गया।

बनर्जी अभी सँभल नहीं पाया था कि इन्द्र ने उछलकर उसके जबड़े पर ज़ोर का घूँसा जमाया।

बनर्जी ने दीवार का सहारा लिया। इन्द्र ने फिर वार किया। उसका हर वार बड़े ज़ोर का था।

लेकिन बनर्जी अब भी खड़ा था। वह हैरान ज़रूर हो गया था, और कोई बात ठीक तौर पर उसकी समझ में नहीं आ रही थी। फिर भी वह खड़ा था।

इन्द्र की आँखों के सामने लाल धब्बे नाच रहे थे। लेकिन वह बनर्जी को स्पष्ट रूप से देख रहा था। उसके घूमते हुए हाथों से बचकर, उसने उसका गला पकड़ लिया।

बनर्जी अपने नालदार बूटों की ठोकरें चलाने लगा। इन्द्र इधर-उधर उछल-उछलकर उन ठोकरों से बचने लगा। लेकिन ठोकरों से बचते रहना और उसका गला भी पकड़े रहना—दोनों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

काम एक साथ देर तक कर सकना उसके लिए असम्भव हो गया।

"हार्डी !" वह चिल्लाया "हार्डी !"

तीर की तरह उछलकर हार्डी तुरन्त लड़ाई में शरीक हो गया। अपने दाँतों और पंजों से वह वनर्जी के पैरों पर वार करने लगा। और तब उसके हमलों से वचने ही में वनर्जी के पैरों की पूरी शक्ति ख़र्च होने लगी। इन्द्र को यथेष्ट सहायता मिल गई।

अकस्मात् वेंच के नीचे से चीख़ आने लगी—

"इन्द्र ! होशियार ! हथौड़ा !"

तेज़ी से एक ओर झुककर इन्द्र ने अपना सिर तो वचा लिया, लेकिन कंधे की रक्षा नहीं कर सका। हथौड़े की एक गहरी चोट उसके कंधे पर लगी। क्रोध से उन्मत्त होकर, उसने वनर्जी के जवड़े पर फिर एक घूँसा जमाया। इस वार का घूँसा सफल रहा। वनर्जी की आँखें पथरा गईं और वह लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

इन्द्र ने जेव से रिवाल्वर निकाला, और वनर्जी के मत्थे पर निशाना जमाया। वनर्जी का काम तमाम कर देने की इच्छा अत्यधिक वलवती हो उठी।

पीछे की ओर फ़र्श पर घसिटते हुए पैरों की उसे आहट मिली और दूसरे ही क्षण रिवाल्वर उसके हाथ से बलपूर्वक छीन लिया गया।

"नहीं, नहीं—यह मत करो !" रजनी ने हाँफते हुए कहा। "हत्या मत करो—ईश्वर के लिए उनकी हत्या मत करो !"

"क्यों ?" इन्द्र ने घूमकर क्रोधोन्मत्त स्वर में पूछा, और ऐसा जान पड़ने लगा जैसे वह उसे भी ख़त्म कर देगा। "क्यों नहीं ? वोल—जवाव दे ! यह शैतान तेरा कौन है ?"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बात—"वह एक पर-पुरुष के साथ रहती है !" ओह ! कैसी चोट पहुँचाते रहे होंगे उसे ये विषपूर्ण वाक्य !

झुककर, काँपते हुए हाथों से उसने अचेत रजनी को अपनी गोद में उठा लिया । कैसी मासूम, कैसी प्यारी लग रही थी वह ! वह सर्वथा निर्दोष थी । केवल एक ही अपराध उसने किया था—अपने पागल पिता को उसने प्यार किया था, असीम मनोयोग से उसकी सेवा की थी !

बड़ी सावधानी से उसने उसे बेंच पर लिटा दिया । बड़ी मशीनें असीम भयानकता से भनभना रही थीं । बड़ी-बड़ी चर्खियाँ सरसराती हुई तेज़ी से घूम रही थीं । ताँबे के बड़े-बड़े पीपे भरभराते हुए तीव्र गति से चक्कर काट रहे थे । लोहे के बड़े-बड़े डंडे अपने छेदों में खट-खट करते [illegible] जा रहे थे । दबी हुई हवा सेफ़्टी वल्वों से फुफकारती [illegible] रही थी और उधर से, गुफा के मुख्य द्वार से आती [illegible] हलकी ध्वनि मशीनों की ध्वनियों से हिल-मिलकर [illegible] विचित्र, भयानक ध्वनियों के बीच [illegible] खड़ा था ।

रजनी जब होश में आई तो वह [illegible] इन्द्र का चेहरा उसके चेहरे पर झुका था [illegible] में मधुर, अचरज-भरी कहानियाँ लिखी थीं । [illegible] उसे कभी पढ़ने को, सुनने को नहीं मिली [illegible] बन्द कर लीं और धीरे-धीरे साँस लेने [illegible] के आत्म-समर्पण का मधुर भाव ।

तब वह बातें करने लगा तेज़ी से [illegible] कहानियाँ शब्दों के वस्त्रों से विभूषित [illegible] आनन्द की सृष्टि करने लगीं । इन्द्र [illegible] के चित्र खींच रहा था ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"ये—मेरे—पिता हैं !" मन्द स्वर में रजनी ने उत्तर दिया। वह लड़खड़ाकर फ़र्श पर गिर पड़ी, अचेत हो गई।

अठारहवाँ अध्याय

पाँसा पलटा

इन्द्र लड़खड़ाकर पीछे हटा और फ़र्श पर पड़ी हुई रजनी की ओर एकटक ताकने लगा। कितना मार्मिक, कितना करुण था स्त्रीत्व का वह रूप ! उसके वे शब्द उसके कानों में गूँज उठे थे। शरीर के समस्त तन्तु आनन्द की एक विचित्र लहर से आन्दोलित होकर झंकृत हो उठे थे।

रजनी उस भेद को प्रकट करना नहीं चाहती थी, लेकिन विवश होकर अन्त में उसे अनिच्छापूर्वक उसको प्रकट करना ही पड़ा। इन्द्र के लिए वह स्वर्गिक शान्ति से छलकता हुआ एक सुमधुर गान था जो अनायास ही दिशाओं में गूँज उठा था और उसके अन्दर घुसकर आत्मा की गहराइयों में प्रतिध्वनित हो रहा था। हत्या की प्रबल इच्छा उसके मन से दूर होने लगी थी।

वह सुन्दर क्षण उसे रजनी की सम्पूर्ण करुण-कथा सुना गया—अपने सम्बन्ध में उसकी ख़ामोशी की कथा, अपने उस पागल पिता के प्रति उसके स्नेह और भक्ति की कथा !

एक पागल पिता की पुत्री ! यही था उसकी करुण-कहानी का सार।

इतने वर्षों तक कैसा भयानक कष्ट, कैसी विकट व्यथा उसे सहनी पड़ी होगी ! परिहास और घृणा से भरे हुए स्वरों में लोग कहते रहे होंगे—"वह एक पागल की बेटी है !" और वह

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

बात—"वह एक पर-पुरुष के साथ रहती है !" ओह ! कैसी चोट पहुँचाते रहे होंगे उसे ये विषपूर्ण वाक्य !

झुककर, काँपते हुए हाथों से उसने अचेत रजनी को अपनी गोद में उठा लिया । कैसी मासूम, कैसी प्यारी लग रही थी वह ! वह सर्वथा निर्दोष थी । केवल एक ही अपराध उसने किया था—अपने पागल पिता को उसने प्यार किया था, असीम मनोयोग से उसकी सेवा की थी !

बड़ी सावधानी से उसने उसे बेंच पर लिटा दिया । बड़ी मशीनें असीम भयानकता से भनभना रही थीं । बड़ी-बड़ी चर्खियाँ सरसराती हुई तेज़ी से घूम रही थीं । ताँबे के बड़े-बड़े पीपे भरभराते हुए तीव्र गति से चक्कर काट रहे थे । लोहे के बड़े-बड़े डंडे अपने छेदों में खट-खट करते हुए आ जा रहे थे । दबी हुई हवा सेफ़्टी बल्वों से फुफकारती हुई निकल रही थी और उधर से, गुफा के मुख्य द्वार से आती हुई झरने की हलकी ध्वनि मशीनों की ध्वनियों से हिल-मिलकर नृत्य कर रही थी । उन विचित्र, भयानक ध्वनियों के बीच इन्द्र निस्तब्ध, मूर्तिवत् खड़ा था ।

रजनी जब होश में आई तो वह इन्द्र की गोद में पड़ी थी। इन्द्र का चेहरा उसके चेहरे पर झुका था और उसकी आँखों में मधुर, अचरज-भरी कहानियाँ लिखी थीं । ऐसी कहानियाँ उसे कभी पढ़ने को, सुनने को नहीं मिली थीं । रजनी ने आँखें बन्द कर लीं और धीरे-धीरे साँस लेने लगी । वह था नारीत्व के आत्म-समर्पण का मधुर भाव ।

तब वह बातें करने लगा तेज़ी से, उत्सुकता से । वे नीरव कहानियाँ शब्दों के वस्त्रों से विभूषित होकर अनिर्वचनीय आनन्द की सृष्टि करने लगीं । इन्द्र भविष्य के स्वर्ण-स्वप्न-लोक के चित्र खींच रहा था ।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

जब वह रुका, तब रजनी की आँखों में आनन्द के आँसू छलक रहे थे। हर्षातिरेक से उसका हृदय विभोर हो उठा था। धीरे से वह उसके कर-पाश से अलग हो गई। उसके सुकोमल ओठों पर चुम्बन की मधुर उष्णता अब भी थिरक रही थी।

वह उठ खड़ा हुआ और हाथ फैलाकर उसे उठने में सहायता देने लगा। उस समय उसे अरुणा का ज़रा भी ख़याल नहीं था—उस अरुणा का जो अपने मरते हुए पिता को उससे विवाह कर लेने का वचन दे चुकी थी। बनर्जी और उसकी भयानक मृत्यु-किरण की भी उस समय उसे कोई परवाह नहीं थी।

लेकिन बनर्जी धीरे-धीरे होश में आने लगा था।

"कल भेंट होगी ?" इन्द्र ने कोमल स्वर में कहा।

कुछ लजाकर सहमतिसूचक भाव से रजनी ने सिर हिलाया।

"कहाँ ? रजनी-कुटीर के फाटक पर ?"

उसके चेहरे पर लालिमा दौड़ गई। फिर वह मुस्कराई।

"चार बजे," उसने कहा "मैं फाटक पर मौजूद रहूँगी इन्द्र।"

बनर्जी का भारी लबादा उसे ओढ़ाकर, वह उसे झरने की ओर लिवा ले गया।

"अभी यहाँ मुझे बहुत-कुछ करना है रजनी," उसने कहा। "अनेक अप्रिय और भयानक बातें अभी यहाँ होंगी, और मैं यह नहीं चाहता कि वह सब देखने के लिए तुम यहाँ मौजूद रहो।"

"ख़तरे से मैं डरती नहीं इन्द्र," शान्त स्वर में उसने कहा। "मेरे जीवन का आधा समय मृत्यु से खेलते बीता है।"

"मेरा इशारा उन बातों की ओर नहीं है," इन्द्र ने कहा। "मेरा मतलब टंडन से है। अब मुझे यहाँ उसे बुलाना पड़ेगा। और मैं यह नहीं चाहता कि जब वह आये, तब तुम यहाँ मौजूद

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

रहो। जहाँ तक क़ानून का सम्बन्ध है, वहाँ तक तुम्हें इस मामले से बिलकुल बरी रखना चाहता हूँ। इसके अलावा अब यहाँ जो कुछ होना है वह मर्दों के करने का है। मशीनों के रोकने की तरकीब अगर मालूम हो जाती, तो बड़ा अच्छा होता।"

"कोई तरकीब नहीं है", रजनी ने कहा। "वे डायनेमो का काम भी करती हैं। अपने मुख्य काम के अतिरिक्त वे अपने लिए विद्युत्-शक्ति भी पैदा करती जाती हैं। वे कभी रोकी ही नहीं गईं। वे चलती जायँगी, चलती जायँगी जब तक आप ही आप किसी तरह रुक न जायँगी। अनेक बार मैंने उन्हें यह बात बड़े गर्व से कहते सुनी है।"

"और तुम्हें यह भी मालूम नहीं है कि उन विशाल पीपों से, जिनमें मृत्यु-किरण बहुत अधिक संचित हो चुकी है, इन मशीनों का सम्बन्ध कैसे काटा जा सकता है?"

"मेरे ख़याल में इसकी भी कोई तरकीब नहीं है। पीपे मशीनों से सीधे जुड़े हुए हैं।"

"ख़ैर, कोई न कोई तरकीब तो निकालनी ही होगी। आज ही इस ख़तरे का अन्त कर देना होगा, नहीं तो—"

"नहीं तो क्या होगा इन्द्र?"

"नहीं तो कल न रजनी-कुटीर रहेगी, न तुम रहोगी, न मैं रहूँगा।"

वे झरने के सामने पहुँच गये थे।

"नमस्कार रजनी!"

"नमस्कार! कल फिर भेंट होगी।"

उसने अंधकार में धीरे से उसका हाथ दबाया। फिर इन्द्र वहाँ अकेला रह गया।

वह तेज़ी से उस गुफा की ओर वापस चला। एकाएक हार्डी के ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उन आवाज़ों

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"बिलकुल सच कह रहा हूँ। उन्हें रोकने की कोई और तरकीब नहीं है।"

"कौन मशीन ?" शान्त स्वर में इन्द्र ने पूछा।

"जो तुम्हारे हाथ में है," भर्राये हुए स्वर में बनर्जी ने उत्तर दिया।

इन्द्र ने मशीन बन्द कर दी।

उन्नीसवाँ अध्याय

अन्तिम प्रहार

अशोक की गुफाओं के बाहर अन्धकार में टंडन प्रतीक्षा कर रहा था।

समय बड़ी कठिनाई से बीत रहा था। बहुत देर से वह वहाँ खड़ा था। इतना समय बड़ी कठिनाई से बीता था। और अब तो उसकी विकलता और भी बढ़ गई थी।

केवल एक बात की वह प्रतीक्षा कर रहा था। ज्यों ही वह बात हो जायगी वह अन्दर घुस पड़ेगा, थानेवाले चाहे आयें या न आयें। नायब अपना दल लेकर अभी तक नहीं आया। इतमीनान से इन्तज़ाम कर रहा होगा। शीघ्रता की ज़रूरत तो देहाती थानेवालों को जैसे कभी महसूस ही नहीं होती। कब होगी वह बात ?

एकाएक उधर के प्रगाढ़ अन्धकार से एक धुँधली छाया बाहर निकली। फिर दूसरी निकली, तीसरी निकली, चौथी निकली और फिर ताँता लग गया। कांस्टेबिलों और स्वयंसेवकों का अच्छा-खासा दल लेकर नायब दारोग़ा गुरुमुखलाल फ़तेहपुरी आ पहुँचे थे। स्वयंसेवकों की संख्या यथेष्ट थी। जिससे कहा

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

गया वही तुरन्त राज़ी हो गया। तमाशा देखने की लालसा स्वीकृति की प्रेरणा तुरन्त दे देती।

टंडन ने सब लोगों को पहाड़ी के ढोंकों के पीछे छिप जाने का आदेश दिया। जब लोग छिप गये, तब पास खड़े नायब से टंडन ने धीरे से कहा—सदर को टेलीफोन किया था?

"जी हाँ हुज़ूर," मुंशी जी ने उत्तर दिया। "जो कुछ आपने कहा था वह सब मैंने मिस्टर ख़ान को बतला दिया था।"

"उन्होंने क्या कहा? आदमी भेज रहे हैं न?"

"जी हाँ। उन्होंने कहा कि वे तुरन्त ही सशस्त्र सैनिकों से भरी हुई दो लारियाँ रवाना करेंगे।"

"शायद वे समय पर नहीं पहुँच सकेंगे। बाद में उनकी वैसी ज़रूरत भी नहीं रहेगी। हाँ, सफ़ाई के काम में वे ज़रूर हाथ बँटा सकेंगे।"

"अन्दर घुसना होगा हुज़ूर?"

"हाँ, लेकिन अभी नहीं।"

टंडन गुफा के द्वार की ओर बढ़ा। मुंशी जी उसके पीछे चले। द्वार पर पहुँचकर कानों पर ज़ोर देकर टंडन सुनने लगा।

सहसा किसी के तेज़ी से चलने की हलकी आवाज़ एक ओर से आने लगी। द्वार से हटकर टंडन एक ढोंके के पीछे छिप गया। मुंशी जी दूसरे ढोंके के पीछे जा छिपे।

ज़रा देर में एक बड़ा-सा लबादा ओढ़े हुए एक दुबली-पतली स्त्री बाहर निकली। उसके बाल भीगे थे, जूतों में जल भरा था, लबादे से पानी की बूँदे चू रही थीं। एक क्षण रुककर, इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर, वह तेज़ी से रजनी-कुटीर की ओर चल पड़ी।

मुंशी जी लपककर अपने ढोंके के पीछे से बाहर निकले।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"वह उसकी लौंडिया है हुज़ूर" मूछों पर ताव देकर बड़े शान से उन्होंने कहा। "उसे मैं बड़ी आसानी से गिरफ़्तार कर लूँगा।"

"बेवक़ूफ़ी की बात मत करो," झल्लाकर टंडन ने कहा। "उसी के निकलने का तो मैं अभी तक इन्तज़ार कर रहा था। वह निकल आई है। जानते हो इसका क्या मतलब है? नहीं। अच्छा सुनो, इसका मतलब यह है कि इन्द्र कार्रवाई में लगा है। वह सुरक्षित है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। अगर बात ऐसी न होती, तो रजनी कभी गुफाओं से बाहर न निकलती। इन्द्र को वह दिल से चाहती है; उसके प्रेम में बेतरह फँस गई है। अगर इन्द्र आफ़त में फँसा होता, तो उसका साथ छोड़कर वह कभी बाहर न आती, बल्कि बराबर उसके समीप मौजूद रहती। उसके लिए अपनी जान तक दे देने में उसे ज़रा भी संकोच न होता। इन्द्र का भाग्य इस समय चमका हुआ है—सारी कार्रवाई वह अकेले ही कर रहा है। वह मेरा कचूमर निकाल देगा, अगर मैं रजनी को इस मामले में घसीटने की ज़रा भी कोशिश करूँगा। और तुम्हारी भी शामत आजायगी, हज़रत, अगर ज़रा भी चूँ-चरा करोगे।"

"माफ़ कीजिए हुज़र, माफ़ कीजिए," नायब ने घबराकर कहा। "ख़ुदा गवाह है, मैंने यह बात किसी बुराई के ख़याल से नहीं कही थी। जो ज़रूरी बातें आपने अभी बतलाई हैं उनका मुझे ज़रा भी ज्ञान नहीं था, वर्ना मैं वैसी बेहूदा बात ज़बान पर न लाता, छोटे मुँह बड़ी बात न करता। मैं—"

"अच्छा, अपनी बकवास अब बन्द करो। कार्रवाई करने का वक़्त आगया है। लोगों से कहो कि बाहर निकलें। अब अन्दर चलना होगा।"

"बहुत अच्छा हुज़ूर।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

दो पग आगे बढ़कर, मुंशी जी ने आवाज़ लगाई—सब लोग बाहर निकल आओ, अब अन्दर चलना होगा।

तुरन्त वे ढोंकों की आड़ से बाहर आने लगे। जब सब लोग जमा हो गये, तब टंडन ने कहा—मेरे पीछे-पीछे चले आओ। मेरे टार्च पर बराबर नज़र रक्खो। जब झरना आजाय, तब उस ओर कूदते जाना।

ज़रा देर में टंडन के पीछे-पीछे वे सामने की गुफा में पहुँच गये। वहाँ उसके आदेशानुसार लालटेनें और मशालें जला ली गईं। प्रकाश के गोले गुफा के फ़र्श और दीवारों पर नाचने लगे। दल आगे बढ़ा।

एक बार वे मार्ग भूल गये और उन्हें पहली गुफा में वापस जाकर फिर से आगे बढ़ना पड़ा। एक बार एक स्वयंसेवक एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ा और उसके एक पैर की हड्डी टूट गई। वह आगे बढ़ सकने के लायक़ नहीं रह गया। दो स्वयंसेवक उसके साथ पीछे छोड़ दिये गये। इन दुर्घटनाओं से विलम्ब होता रहा। झरने तक पहुँचने में उन्हें एक घंटा लग गया।

झरना तेज़ी से गिर रहा था। लालटेनों और मशालों का प्रकाश जल की मोटी धार पर पड़ रहा था। अगणित किरणें हवा में नाच रही थीं। लोग चकित थे, भयभीत थे।

कुछ स्वयंसेवकों की हिम्मत छूट गई। कूदकर उस ओर जाने का साहस वे किसी तरह नहीं कर सके। जो साहसी थे वे साहसहीन लोगों को जोश दिलाने लगे।

टंडन रुका नहीं। हैट सिर पर अच्छी तरह जमाकर, दम खींचकर वह जल के परदे में कूदकर उस ओर पहुँच गया। वह हाँफता हुआ घुटनों के बल उस ओर गिरा। जल बर्फ़ की तरह ठंडा था।

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

और तब मुंशी जी ने अपने जीवन का सबसे बड़ा काम किया। हिम्मत बाँधकर, पगड़ी सँभालकर, दम साधकर, हाथ हिलाकर, वे भी ज़ोर से कूदे। टंडन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस ओर पहुँचनेवाला दूसरा व्यक्ति नायब दारोग़ा गुरुमुखलाल है।

टंडन खिलखिलाकर हँस पड़ा और उसने दारोग़ा की बाँह पकड़ ली।

"शाबाश बहादुर!" उसने कहा, "कमाल किया तुमने! अब तुम बेशक मेरे साथ चलने के क़ाबिल हुए हो। आओ, चलो।"

मुंशी जी ने बेशक असाधारण वीरत्व का परिचय दिया था। वह कूदना उन्हें सरल तो नहीं प्रतीत हुआ था, किन्तु प्रलोभन कम नहीं था। वह प्रसिद्धि प्राप्त कर लेंगे, दारोग़ा बन जायँगे। समाचार-पत्रों में उनका फ़ोटो छपेगा और उनकी तारीफ़ के पुल बाँधे जायँगे। जो हो, टंडन का साथ देने में ज़्यादा ख़तरा भी नहीं था। मुफ़्त में ख़तरा उठानेवाला आदमी वह नहीं था।

साथ-साथ दौड़ते हुए वे उस बड़ी गुफा में पहुँच गये और वहाँ पहुँचकर वे आश्चर्य से स्तम्भित रह गये।

तार से बुरी तरह जकड़ा हुआ बनर्जी फ़र्श पर पड़ा था। वह सिर पटक रहा था, चीख़ रहा था, सिसक रहा था। उसका उन्माद पराकाष्ठा को पहुँच गया था। तार से उसकी कलाइयाँ कट गई थीं, आँखों की पुतलियाँ तेज़ी से घूम रही थीं और उसके चारों ओर संहार के एक विकट दृश्य की सृष्टि हो रही थी।

ताँबे के रंग की धूल चारों ओर हवा में उड़ रही थी और उसके परदे में चमकते हुए बल्ब बड़े विचित्र लग रहे थे। मशीनों की भनभनाहट क्रमशः मन्द होती जा रही थी। दूर के उस कोने में हलका विस्फोट हुआ और धूल के नये बादल उठ-उठकर हवा में तैरने लगे। धूल के परदे में एक लम्बा, तगड़ा व्यक्ति इधर-उधर

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आता-जाता दिखाई पड़ जाता था। उसके हाथ में एक छोटी-सी काली मशीन थी और उसमें लगा हुआ एक तार उसके पीछे-पीछे ज़मीन पर रेंगता चल रहा था। उसका चेहरा पसीने से चमक रहा था, क्योंकि धातुओं के रज-कणों में परिणत होने की क्रिया से अत्यधिक उष्णता उत्पन्न हो रही थी। धूल उसके चेहरे और बालों पर जम गई थी और उस धूमिल प्रकाश में वह ताँबे की एक मूर्ति-सा लग रहा था।

इधर-उधर वह बराबर आ-जा रहा था। जिधर ही वह घूम पड़ता उधर ही विस्फोट होता और धूल के नये बादल उमड़ पड़ते। उड़ते हुए रज-कणों के परदे में एक हरे रंग का हलका प्रकाश, जुगनू की तरह चमकता हुआ रह-रहकर दिखाई दे जाता।

सहसा चरम-सीमा पर पहुँचे हुए अपने भयानक उन्माद की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर बनर्जी ने तार के फेरे तोड़ डाले जो उसकी कलाइयों पर लिपटे हुए थे। उस भयानक प्रयत्न से उसका शरीर पत्ते की तरह काँप उठा।

हाथों के बल ज़मीन पर घसिटता हुआ वह उस बेंच की ओर चला जिस पर दूसरी छोटी मशीन रक्खी हुई थी। भनभनाहट अति मन्द हो गई थी। इन्द्र उसे देख नहीं सकता था। फटती हुई मशीनों की घनी धूल में वह छिप गया था।

"ईश्वर के लिए!" मुंशी जी बोल उठे।

उनके शब्दों ने टंडन को सचेत कर दिया। तब तक नायब की बाँह पकड़े हुए वह मूर्तिवत् खड़ा रह गया था। उन शब्दों ने उसे क्रियाशील कर दिया। धूल का परदा चीरता हुआ वह झपटकर आगे बढ़ा।

"इन्द्र!" वह चिल्लाया, "जल्दी इधर आओ। इसके हाथ खुल गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

वह बनर्जी के ऊपर टूट पड़ा और उससे गुथ गया। लेकिन बनर्जी की शक्ति तो उस समय अपार हो उठी थी। टंडन को उसने एक ओर ज़ोर से ढकेल दिया। लपककर उसने दूसरी मशीन बेंच से उठा ली।

उसके चोंगे का मुख उसने ठीक इन्द्र की ओर कर दिया। फिर उसने खटका दबा दिया—लेकिन कोई नतीजा नहीं हुआ। बात यह हुई कि टंडन और नायब एक साथ झपट पड़े, और दोनों ने मिलकर उस तार को तोड़ डाला जिसके द्वारा उस मशीन में मृत्यु-किरण पहुँचती थी।

कुछ सेकंड के बाद दल आ पहुँचा। बनर्जी गिरफ़्तार कर लिया गया। हाथों में दूसरी हथकड़ी पड़ने के पहले ही उसने दम तोड़ दिया। उसके उस अन्तिम प्रयत्न में उसके शरीर की एक शिरा फट गई थी।

अन्तिम मशीन फटकर, नष्ट होकर, रज-कणों में परिणत हो गई। उसकी भनभनाहट की अन्तिम प्रतिध्वनियाँ झरने की मन्द ध्वनि में विलीन हो गईं। विपत्ति टल गई। मरुभूमि के रहस्य सदैव के लिए समाप्त हो गये।

इन्द्र धूल के परदे से पसीना पोंछता हुआ बाहर निकला। भीड़ देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

"काम हो गया इन्द्र ?" टंडन ने पूछा।

"क़रीब-क़रीब। तुम यहाँ कब आये ?"

"रजनी के बिदा होने के थोड़ी देर बाद।"

इन्द्र उसके चेहरे की ओर ग़ौर से देखने लगा।

"अब रजनी-कुटीर जाओ इन्द्र," टंडन ने कहा। "यहाँ का बाक़ी काम मैं कर लूँगा। अरुणा की ओर से निश्चिन्त रहो।"

"क्यों ?" कौतूहलपूर्ण स्वर में इन्द्र ने पूछा।

"तुम्हारे मार्ग में वह बाधायें उपस्थित नहीं करेगी।"

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

"अच्छा! यह कैसे?"

भेद-भरे ढंग से टंडन मुस्कराने लगा। इन्द्र की बाछें खिल गईं।

"धन्यवाद टंडन, धन्यवाद! अरुणा तुम्हें मुबारक हो! इस उपकार को कभी न भूलूँगा! अच्छा, अब इसे लो।"

वह मशीन उसने टंडन के हाथ में दे दी।

"स्विच दबा-दबाकर इससे काम लो," उसने कहा। "उधर की गुफा में मृत्यु-किरण से भरे हुए विशाल पीपे खड़े हैं। उन्हें नष्ट करना बाक़ी है। यह काम तुम करो। जब तक वे नष्ट नहीं हो जायँगे, तब तक ख़तरा बराबर बना ही रहेगा। बधाई—बार बार बधाई! धन्यवाद! फिर भेंट होगी।"

टंडन मशीन को ग़ौर से देखता रहा।

"अरे—सुनो तो, इन्द्र!"

लेकिन इन्द्र लौटकर नहीं आया। वह अदृश्य हो गया था।

रजनी-कुटीर की उस खिड़की से मंद प्रकाश निकल रहा था। इन्द्र ने दरवाज़ा खटखटाया। तुरन्त दरवाज़ा खोलकर रजनी बाहर निकल आई।

कोमल स्वर में उसने उसे वे बातें बताईं जो अशोक की गुफाओं में उसके चली आने के बाद हुई थीं। फिर संवेदना से भरे हुए शब्दों में उसने बनर्जी की मृत्यु का हाल सुनाया।

वह रोई नहीं। दुख सहते-सहते वह दुख के परे पहुँच चुकी थी। इसके अतिरिक्त उस मर्ज़ का कोई दूसरा इलाज भी तो नहीं था।

"सुनो रजनी, ज़रा देर के बाद इन्द्र ने कहा, "कल शाम को चार बजे फाटक पर मौजूद रहना। अपना सारा सामान भी बाँध रखना। ठीक समय पर कार लेकर मैं आऊँगा। कल यहाँ क़ानून का झमेला शुरू हो जायगा। क़ानूनन इस मामले से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। टंडन स्पष्ट शब्दों में मुझे आश्वासन दे चुका है। फिर भी मैं नहीं चाहता कि तहक़ीक़ात

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

के समय तुम यहाँ मौजूद रहो। कल शाम को इस मनहूस घर से विदा ले लेना, और फिर कभी इसके अन्दर क़दम न रखना। समझीं ? ज़रूर चलना पड़ेगा तुम्हें !"

"तुम्हारे साथ इन्द्र ?"

"हाँ रजनी; मेरे साथ—जीवन भर के लिए मेरे साथ ! तुम मेरी हो चुकी हो, और—"

वह रुक गया, क्योंकि उसी समय एकाएक अशोक की पहाड़ियों पर भयानक विस्फोट हुआ और बड़े ज़ोर की हरे रंग की चमक उस ओर के वायुमंडल में भर गई। वह बड़ा भयानक किन्तु शानदार दृश्य था। जिसे एकटक देखते हुए वे मूर्तिवत् खड़े रहे।

मृत्यु-किरण की वह अन्तिम चमक ज़रा देर में ग़ायब हो गई।

"यह काम टंडन का है," कोमल स्वर में इन्द्र ने कहा।

बात वास्तव में यही थी। दूसरे दिन प्रातःकाल इन्द्र को उसका सारा हाल मालूम हुआ। उन विशाल पीपों को टंडन पहाड़ियों के ऊपर उठवा ले गया था और वहाँ उसने उन पर दोनों किरणें एक साथ फेंकी थीं। इस तरह वह भयानक मृत्यु-किरण, जो संसार को विध्वस्त कर देना चाहती थी, स्वयं नष्ट हो गई। टंडन से इन्द्र की भेंट हुई और उसी की ज़बानी उसने वह सब सुना।

अरुणा से भी इन्द्र की भेंट हुई। लेकिन अरुणा ने उस वादे का ज़िक्र भी नहीं किया जो उसने अपने मरते हुए पिता से किया था।

चार बजे अपनी कार पर इन्द्र रजनी-कुटीर के सामने पहुँचा। अपना सारा सामान लिये हुए रजनी फाटक पर मौजूद थी। असबाब कार पर लादा गया। हाथ में हाथ दिये हुए दोनों कार पर सवार हो गये। कार चल पड़ी—सुन्दर भविष्य की ओर !

——

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

आगामी २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

मानव-संबंधी

(१) जीवन का आनन्द
(२) ज्ञान और कर्म
(३) मेरे अन्त समय के विचार
(४) मनुष्य के अधिकार
(५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
(६) मानव-धर्म
(७) जातियों का विकास
(८) विश्व-प्रहेलिका

समाज-संबंधी

(१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
(२) विवाह-प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
(३) सामाजिक आन्दोलन
(४) धर्म का इतिहास
(५) नारी
(६) दरिद्र का क्रन्दन

राजनीति-संबंधी

(१) समाजवाद
(२) चीन का स्वातन्त्र्य-प्रयत्न
(३) राष्ट्रों का संघर्ष
(४) स्वाधीनता और आधुनिक युग
(५) युवक का स्वप्न
(६) योरपीय महायुद्ध
(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

(१) तावीज़
(२) आना करेनिना
(३) मिलितोना
(४) डा० जेकिल और मि० हाइड
(५) पंपियायी के अन्तिम दिन
(६) अमर नगरी
(७) काला फूल
(८) चार सवार
(९) रेवेका
(१०) डेविड कूपर फ़ील्ड
(११) जेन्डा का क़ैदी
(१२) बेनहूर
(१३) कोवेडिस
(१४) रोमियो-जूलियट
(१५) दो नगरों की कहानी
(१६) टेस
(१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

(१) चुनारगढ़
(२) विषादिनी

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

(३) कालरात्रि
(४) मुक्ति
(५) यादगार
(६) द्वादशिकी
(७) दाना-पानी
(८) विप्लव
(९) जलती निशानी
(१०) ग्रहचक्र
(११) कजरी
(१२) जयमाला
(१३) उत्कंठिता
(१४) लहर
(१५) विचित्रा (नाटक)
(१६) जयंती
(१७) आलमगीर
(१८) कर्णार्जुन

रहस्य-रोमांच

(१) ताज का रहस्य
(२) शैतान
(३) धन का मोह
(४) कोशलगढ़ का किसान
(५) पहाड़ी फूल
(६) अन्तिम परिणाम
(७) अद्भुत जाल
(८) मृत्यु का व्यापारी
(९) यौवनशिखा
(१०) विद्रोही
(११) छिपा ख़ज़ाना
(१२) गर्विता
(१३) चेतावनी
(१४) देश के लिए
(१५) दोस्त
(१६) चाँदी की कुञ्जी
(१७) आदर्श युवक
(१८) हुल्लड़
(१९) शैतान डाक्टर
(२०) प्रतिशोध
(२१) अन्याय का अन्त
(२२) प्रोफ़ेसर चौधरी
(२३) वज्राघात
(२४) समय का फेर
(२५) डाक्टर कोठारी का लोभ
(२६) चीन का जादू
(२७) नीला चश्मा
(२८) हार
(२९) अफ़रीदी डाकू
(३०) ख़तरे की राह
(३१) मकड़ी का जाला
(३२) अदृश्य आदमी
(३३) साहस का पहाड़
(३४) अंधेरखाता
(३५) कंकन का चोर
(३६) अपूर्व सुन्दरी
(३७) लौह लेखनी
(३८) गुप-चुप
(३९) लाल लिफ़ाफ़ा
(४०) कल की डाक

कहानी-संग्रह

('क' विभाग)--विदेशी भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ--५ भाग

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

('ख' विभाग)—लें[illegible] [illegible] [illegible]नी चुनी हुई कहा[illegible] [illegible] [illegible]ाग

('ग' विभाग)—वि[illegible] [illegible] पर चुनी हुई कह[illegible]नियां—[illegible] भाग

('घ' विभाग)—भारतीय [illegible]ाओं की चुनी हुई कहानियां—६ भाग

विज्ञान

(१) स्वास्थ्य और रोग
(२) जानवरों की दुनिया
(३) आकाश की कथा
(४) समुद्र की कथा
(५) खाद-विज्ञान
(६) मनुष्य की उत्पत्ति
(७) प्राकृतिक चिकित्सा
(८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
(९) प्रकृति की विचित्रतायें
(१०) वायु पर विजय
(११) विज्ञान के चमत्कार
(१२) विचित्र जगत्
(१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

(१) वैष्णवपदावली
(२) मीरा के पद
(३) नीति-संग्रह
(४) हिन्दी की सूफी कविता
(५ प्रेममार्गी रसखान और घनानन्द
(६) सन्तों की वाणी
(७) सूरदास
(८) तुलसीदास
(९) कबीरदास
(१०) बिहारी
(११) पद्माकर
(१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

(१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
(२) हिन्दी-कविता में नारी
(३) हिन्दी के उपन्यास
(४) हिन्दी में हास्य-रस
(५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
(६) हिन्दी का वीर-काव्य
(७) नवीन कविता, किधर
(८) व्रजभाषा की देन
(९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
(१०) बालकृष्ण भट्ट
(११) बालमुकुन्द गुप्त
(१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

(१) गीता (शङ्करभाष्य)
(२) ,, (रामानुजभाष्य)
(३) ,, (मधुसूदनी टीका)
(४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
(५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
(६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

(७) सरल उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुंडक, प्रश्न, ऐतरेय, तैतिरीय, श्वेताश्वतर आदि) २ भाग
(८) पुराण (समस्त पुराणों के चुने हुए शिक्षाप्रद और मनोमोहक कथानक)
(९) महाभारत के निम्नाङ्कित अंश
क–(विदुरनीति)
ख–(सनक सुजातीय)
ग–(नारायणीय उपाख्यान)
घ–(श्रीकृष्ण के समस्त व्याख्यान)
ङ–(वन, शान्ति और अनुशासन-पर्व के आख्यान)
(१०) पातञ्जल योगदर्शन (व्यास भाष्य)
(११) तंत्र सर्वस्व
(१२) पौराणिक संतों के चरित्र
(१३) उत्तर-भारत के मध्यकालीन संत
(१४) दक्षिण-भारत के संत
(१५) आधुनिक संतों की जीवनी (श्री अरविन्द, रमण महर्षि, विवेकानन्द, उड़िया बाबा आदि)
(१६) पतिव्रताओं और सतियों के चरित्र

ऐतिहासिक विचित्र कथा

(१) भारत का प्राचीन गौरव
(२) प्राचीन मिस्र का रहस्य
(३) [illegible]
(४) मृत्युलोक की झाँकी
(५) अमेरिका का स्वाधीनता-युद्ध
(६) फ़्रांस की राजक्रांति
(७) रोमनसाम्राज्य का पतन
(८) क्रांति की बिभीषिका
(९) रोम के महापुरुष
(१०) इत्सिंग का भारत-भ्रमण
(११) ध्रुव प्रदेश की खोज में
(१२) प्राचीन तिब्बत
(१३) सहारा की विचित्र बातें
(१४) मरहठों का उदय और अस्त
(१५) सिक्खों का उत्थान और पतन
(१६) भारत के पूर्वी उपनिवेश
(१७) मुग़लसाम्राज्य में भ्रमण
(१८) मुग़लों का दरबार
(१९) लखनऊ की शाहज़ादियाँ
(२०) विदेशी यात्रियों का भारत-वर्णन
(२१) नरभक्षकों के देश में—
(२२) पशुओं, मानवों और देवों में—

जीवन-चरित्र

(१) नेपोलियन बोनापार्ट
(२) लेनिन
(३) भारतीय राजनीति के स्तम्भ (१)
(४) तुर्की का पिता कमाल
(५) मेज़िनी—इटली का वीर
(६) सन-यात-सेन—चीन का नायक
(७) एब्राहिम लिंकन—अमेरिका का

941.778 / S R5
RM
CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative